राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 130
निशाचर
VERMA

सत्य और असत्य की, पाप और पुण्य की, अच्छाई और बुराई की, धर्म और अधर्म की, न्याय और अन्याय की लड़ाई हमेशा से चलती आई है, और शायद हमेशा चलती रहेगी-

परन्तु इस लड़ाई में पलड़ा किसका भारी रहेगा, इसका निर्णय करता है मनुष्य का विश्वास! जब मनुष्य का यकीन भगवान पर से, सत्य पर से, और अच्छाई पर से उठने लगता है तो असुरी शक्तियों के प्रभाव का दायरा बढ़ने लगता है! संसार में जितनी घृणा, पाप और हिंसा बढ़ती है उतना ही कमजोर होते जाते हैं देवता, और उतने ही शक्तिशाली होते जाते हैं, रात के अंधेरे में विचरण करने वाले असुर यानी ...

# निशाचर

था: जॉली सिन्हा
त्र: अनुपम सिन्हा
केंग: मनु, विनोद, दिलीप चौबे
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
म्पादक: मनीष गुप्ता

लड़ो! और लड़ो! तुम दोनों जितनी क्रूरता से लड़ोगे, अपने दिलों में जितनी नफरत पैदा करोगे...

... उतना ही शक्तिशाली होता जाएगा, निशाचर! और फिर घृणा और क्रूरता से भरी इस दुनिया पर राज करेगा। लड़ो!
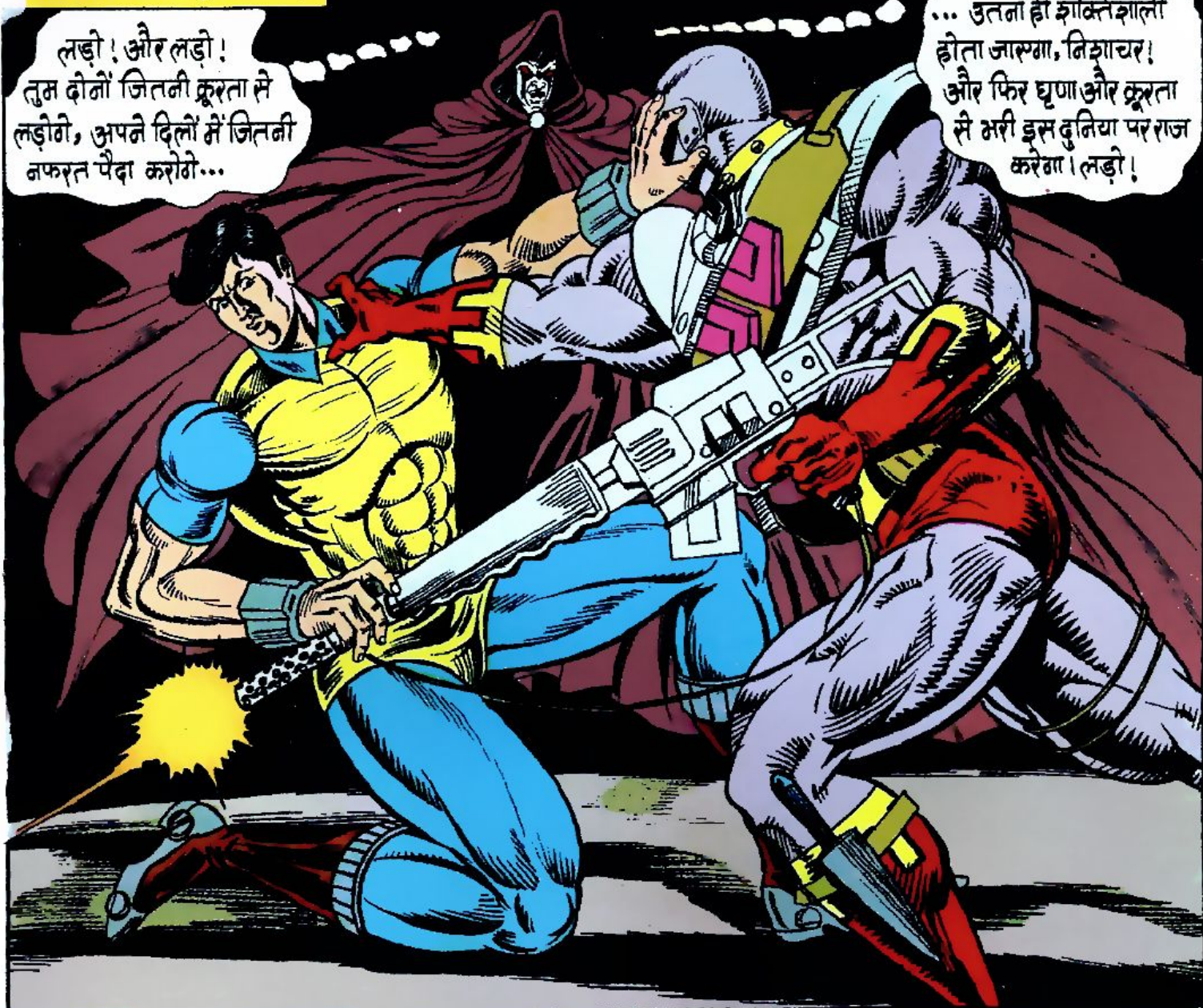
मुम्बई– मायानगरी मुम्बई ! जहां किस्मत मिट्टी छूने वालों को सोने से लाद देती है ! यहां पर राज करते हैं, किस्मत, मेहनत–

और माफिया–

तूने इस इलाके के दुकान वालों को हफ्ता देने के खिलाफ भड़काया है डेविड ! इसलिए यह हफ्ता ...

... तेरी जिन्दगी का आखिरी हफ्ता है...

आऽऽहऽऽ!

इन इलाकों में दहशत का बोझ आह तक को दबा देता है। जुबानें लकड़ी की हो जाती हैं ! और दिल पत्थर के –

आंखों के आंसू आंख से बाहर आने से घबराते हैं ! और इन्सान को एहसास होता है कि उसकी हैसियत, नाली में रेंगने वाले कीड़े से ज्यादा और कुछ नहीं है–

देखो ! देखो अपने नेता को ! तुम्हारी आवाज बना फिरता था न ये ! आज इसके अपने गले में आवाज बाकी नहीं बची है ! कुत्ते की मौत मारा गया ये ! ...

... लेकिन अभी इसको सजा भुगतना बाकी है ! यह मर तो गया है... पर इसका जनाजा नहीं उठेगा ! नहीं उठेगा इसका जनाजा ! और जो इसका जनाजा उठाएगा... वो पहले अपना जनाजा उठवाने की तैयारी करले !
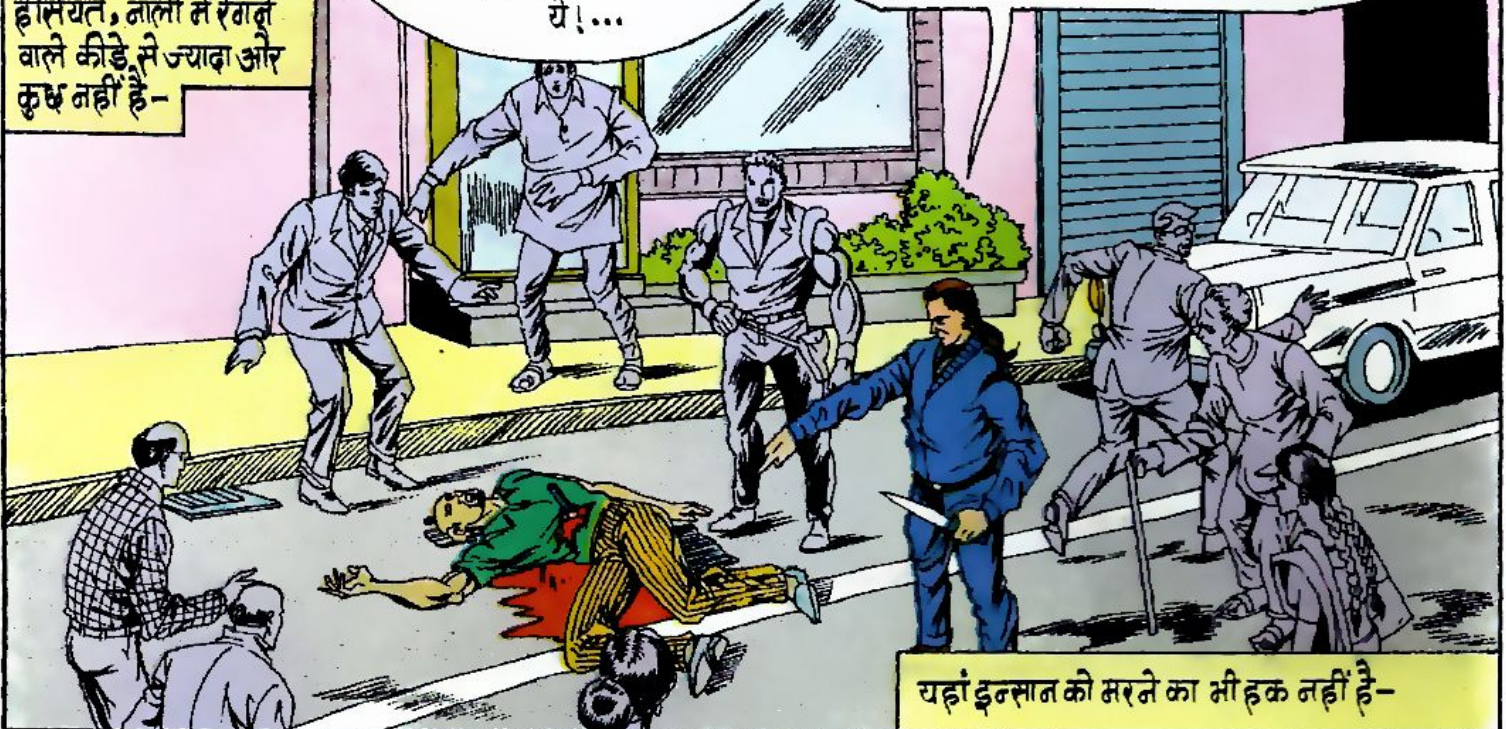
यहां इन्सान को मरने का भी हक नहीं है–

शायद इसीलिए कोई मरना नहीं चाहता-

लेकिन मौत खुद ही मौत का डर कम कर देती है। डेविड के सगे संबंधियों और मित्रों का डर फिलहाल खत्म हो गया था-

क्योंकि बिना सही क्रिया-कर्म के वे डेविड को छोड़कर जाने वाले नहीं थे-

बान्द्रा के पुराने कब्रिस्तान में-

दफनाने की रस्में जल्दी पूरी कीजिएगा फादर! उस माफिया डॉन छोटे हाजी का कोई भरोसा नहीं है!

यू आर राइट, सन...

इसीलिए हम तुमको ऐसी मिसाल बनाएंगे, जिसे देखकर लोग 'हफ्ता' तो क्या 'डेली' पैसे देने शुरू कर देंगे।
कूद! इस कब्र में कूद! अगर जगह बची तो डेविड को भी डाल देंगे।
जगह नहीं बचेगी 'फादर'...
... क्योंकि इससे पहले तू कूदेगा, और फिर तेरा पिल्ला! उसके बाद इसमें जगह नहीं बचेगी...
आह! तू... तू तो ताबूत उठाने वाले लोगों में से ही एक है! लेकिन तेरे पास बन्दूक?... कौन है तू?
मैं वह हूं, जिसे देखकर तुम जैसे लोग तुरन्त पहचान जाते हैं...
... क्योंकि तुम लोग कुत्ते हो, और मेरी शक्ल कुत्ते जैसी है!
डोगा!
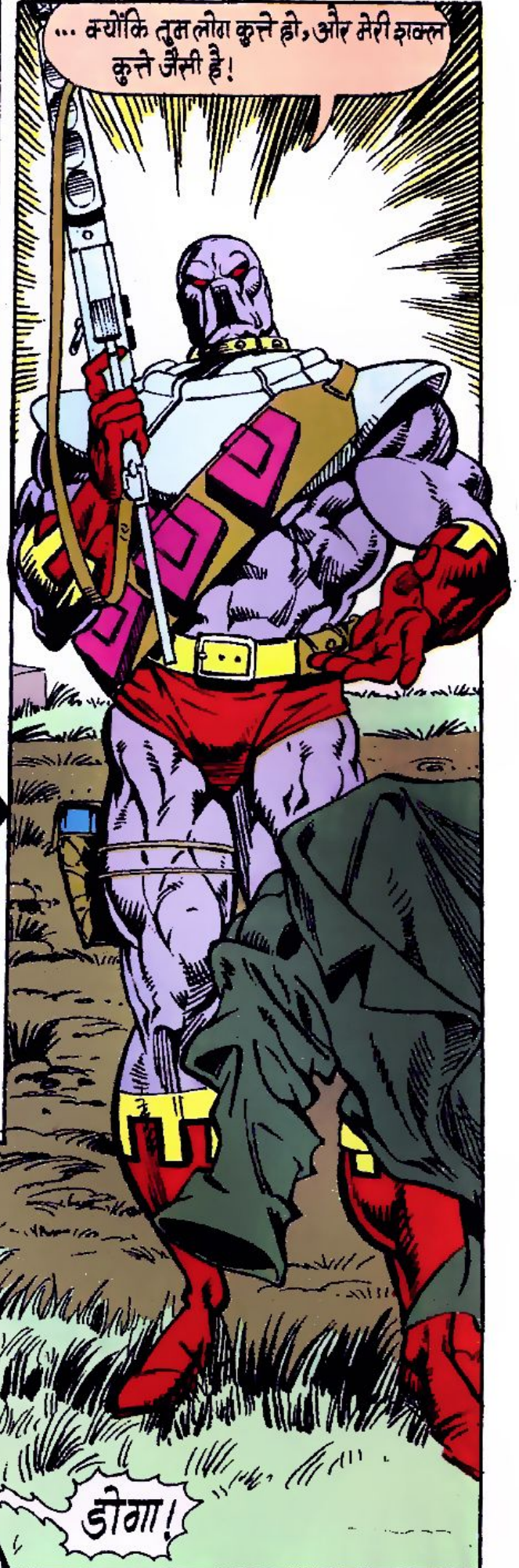
हां, डोगा! मैं इन्सानों की फाड़ खाने वाले भेड़ियों से बहुत नफरत करता हूं। लेकिन उससे भी ज्यादा नफरत तुम जैसे जोकों से करता हूं। जो इन्सान का खून आहिस्ता-आहिस्ता चूसते हैं! धीरे-धीरे मारते हैं इन्सान को...
तड़ाक
...छोटे हाजी के पीछे तो मैं बहुत दिनों से था। पर ये पता नहीं चल रहा था कि वह आखिर रहता कहां है? अब ये बात तुम लोग मुझे बताओगे?
धाड़
जरूर बताएंगे! अगर तू जिन्दा बचा तो जरूर बताएंगे!
तड़ तड़ तड़ तड़
टन्न
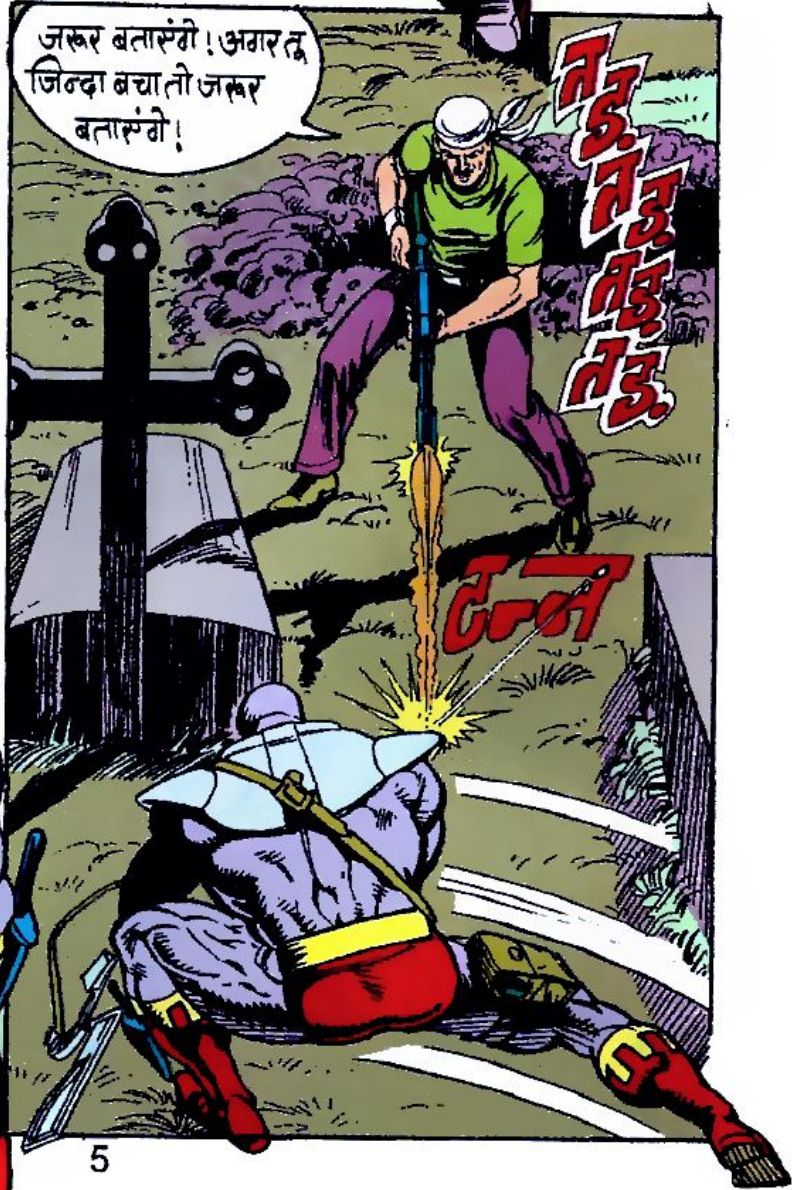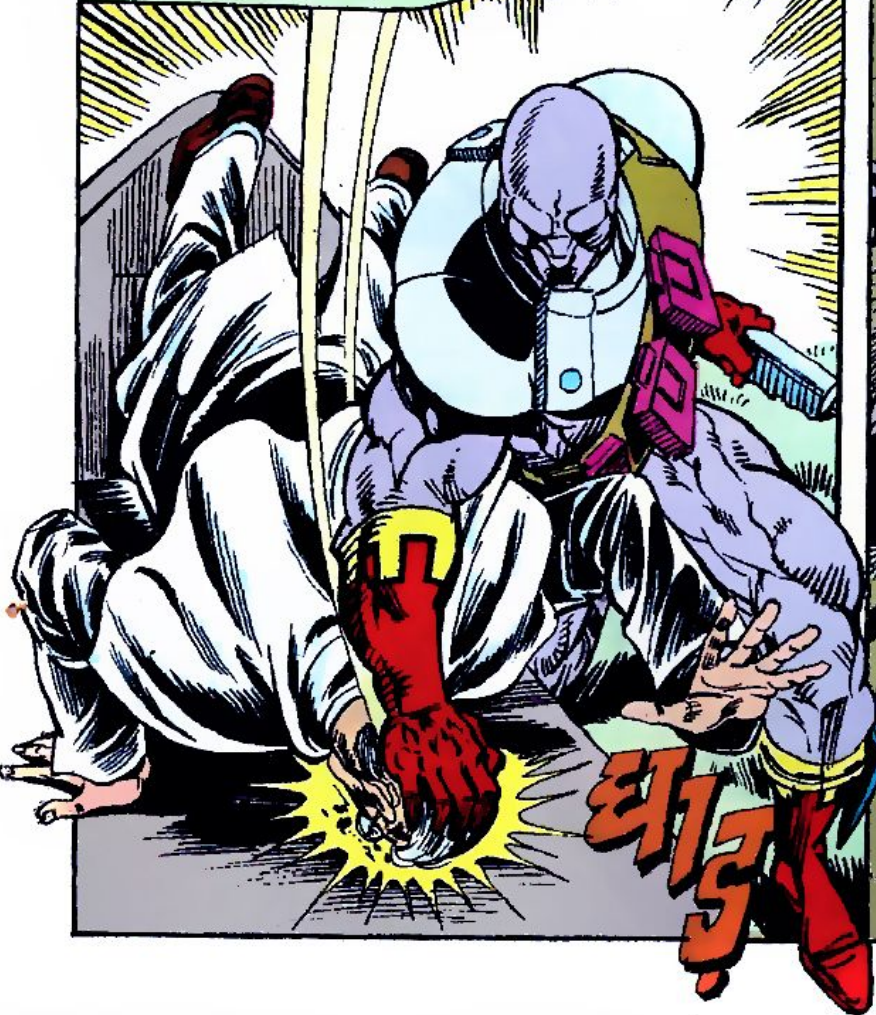
पता तो लगाऊंगा ही ! चाहे इसके लिए मुझे तुम लोगों की उंगलियां तोड़नी पड़ें या नाखून उखाड़ने पड़ें।
तड़तड़तड़तड़तड़ तड़ तड़ तड़.
ट्रिगर पर दबी उंगली, पलभर के लिए ढीली हुई, गोलियां रुकीं—
और इसी पल डोगा की गन गरज उठी—
सिर्फ एक बार गरजी—
ट्चियूं
निशाना गजब का था—
डोगा की गोली उस गुंडे की बन्दूक की नाल में घुसती चली गई—
?
सर्रर्रर्र
मैगजीन एक धमाके के साथ फट पड़ी—
और साथ ही साथ बन्दूक के भी जोड़ खुलते चले गए—
बड़ाम

अगले ही पल वह डोगा की गिरफ्त में था–
बता, पहले तेरी उंगलियां तोड़ूं या तेरा दाहिना हाथ कंधे से उखाड़ दूं?
क...कसम ले लो डोगा! हमको नहीं पता कि छोटा हाजी कहां मिलेगा! सच!
सच! आऽऽऽह!
कड़ाक
प्रतिवाद का धीमा सा स्वर उभरते ही, उस गुंडे के बाजू और कंधें के बीच के जोड़ खुल गए–
वातावरण रुक न रुकने वाली चीख से कांपने लगा। अंधेरी होती रात में डोगा की क्रूरता, घृणा और चीखते गुंडे की दर्दभरी कराहें और आर्तनाद की तरंगें तैरने लगीं–
आह
ईया
ऊ
आ
ऊ
आ
हहहह
और हवा में बुराई फैलाने लगीं। रात के अंधेरे में पलने वाले पाप अंधेरे को और गहरा करने लगे–
और ताजी खुदी कब्र में मिट्टी के गर्त में दबी नजर आ रही उंगलियां हरकत करने लगीं–

पूरा मुम्बई यह बात जानता था कि जब डोगा, अपराधियों की ज़ुबान खुलवाने पर उतर आता है तो दया भी दया की भीख मांगती नजर आती है–
बोल! ज़ुबान खोलेगा या हमेशा के लिए बन्द करवाएगा!
बताता हूँ! वह भाय खला के कोली पाड़ा...

बस, डोगा! बुरा सुनना पाप है! और इस पाप की सजा तो तुझे मिलनी ही चाहिए!
हिंसा और क्रूरता, रात के अंधेरे में अपनी तरंगें फैलाते जा रहे थे–

और ये तरंगें किसी को जीवन प्रदान कर रही थीं–

अगर ये लड़ाई यहीं रुक जाती! अगर डोगा दोनों गुंडों को जल्दी काबू में कर लेता! अगर डोगा के साथ ताबूत लेकर आए लोग भाग जाने के बजाय रुककर डोगा की मदद करते। अगर इनमें से एक भी संभावना पूरी हो जाती–
तो यह दुनिया जो अगर स्वर्ग जैसी नहीं है, तो कम से कम नरक जैसी न बन जाती–

लेकिन होनी को यही मंजूर था, तो उसे टाल कौन सकता था-
तड़ाक
वैसे तो एक कब्र खुदी हुई है। पर वह डेविड के नाम की कब्र है।...
... खोदो, दोनों के लिए कब्र खोदो!
ले फावड़ा!
तनी बन्दूक के सामने बहस करने का तो सवाल ही नहीं था-
?
और लगभग पन्द्रह मिनट बाद-
दोनों के धड़ मिट्टी में दबे हुए थे-
तु... तुमने हमको गर्दन तक क्यों दबाया है? क्या... क्या करना चाहते हो तुम?
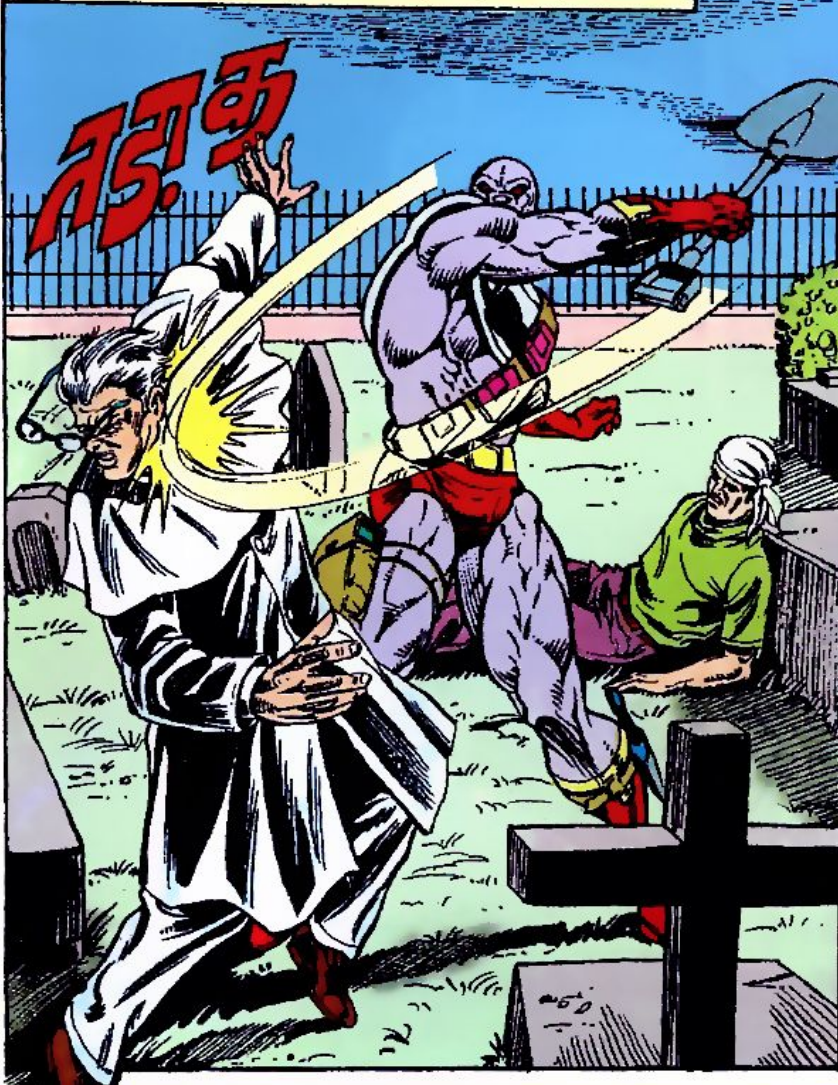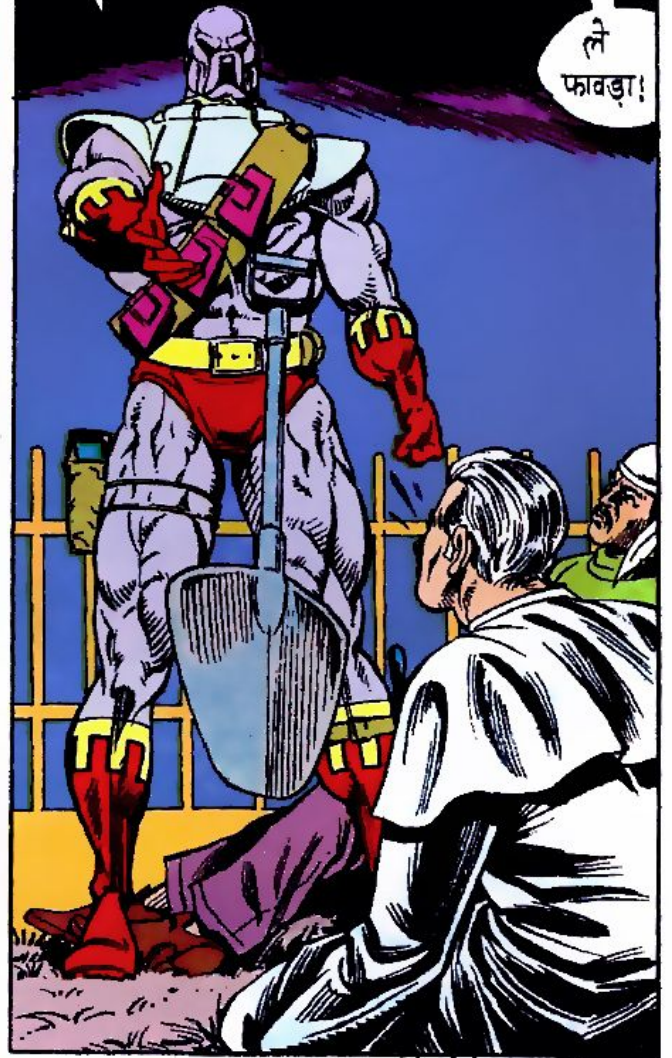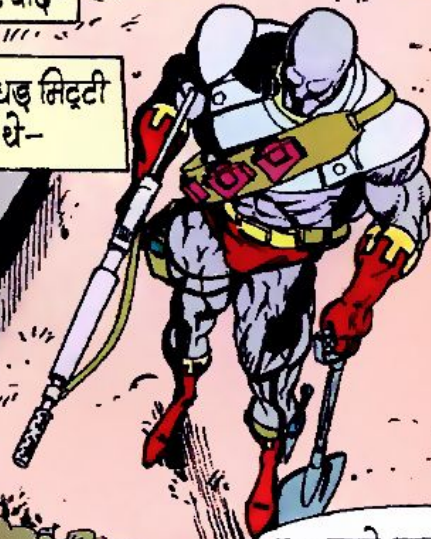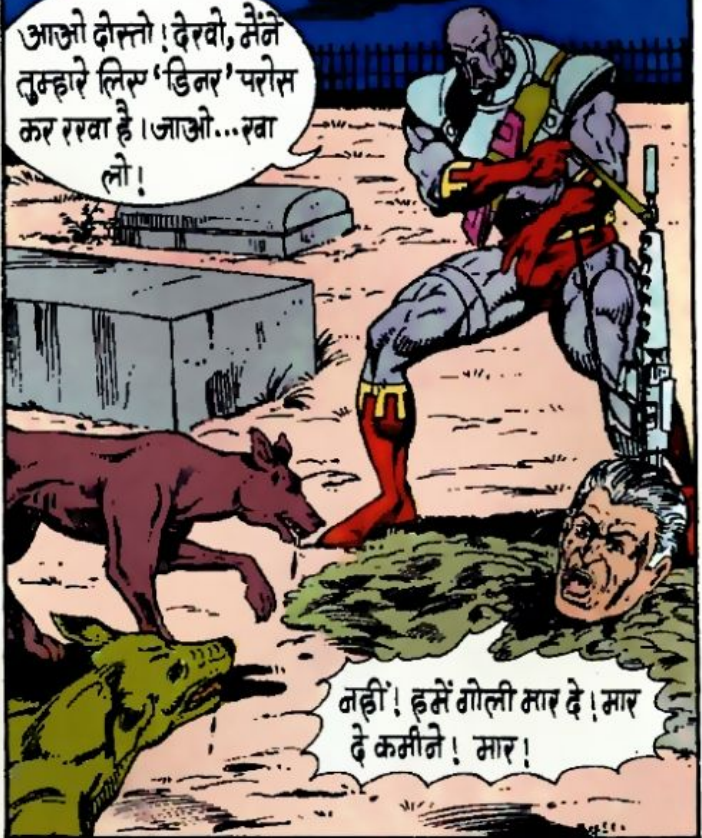
डोगा जानता था कि दर्जनों हत्याओं के इन हत्यारों की सजा एक गोली की शान्ति भरी मौत नहीं; बल्कि बोटी-बोटी नुचकर मरने वाली वीभत्स मौत है–

भूखे कुत्ते दोनों सिरों पर टूट पड़े। दोनों की चीखें मुर्दों को भी दहलाने लगीं–

हिंसा की, क्रूरता की भयानक तरंगों से वातावरण भरने लगा–

कुत्ते दोनों गुंडों का चेहरा भंभोड़कर रुक गए-
गुर्रर्र
लेकिन इतनी देर में क्रूरता और हिंसा की इतनी तरंगें वातावरण में फैल चुकी थीं-
जो कब्र से धीरे- धीरे बाहर आ रही उस आकृति को पूरा बाहर निकालने के लिए काफी थीं-
आहा! कितना अच्छा लग रहा है!...
... सदियों तक जमीन में दबे-दबे रहने से बदन अकड़ गया था। कमजोर भी हो गया था। पर तूने मुझे शक्ति दे दी। हिंसा, क्रूरता और कोई भी पापाचार मुझे शक्ति देता है!
कौन हो तुम? सदियों तक जमीन में दबे रहने से क्या मतलब है तुम्हारा?
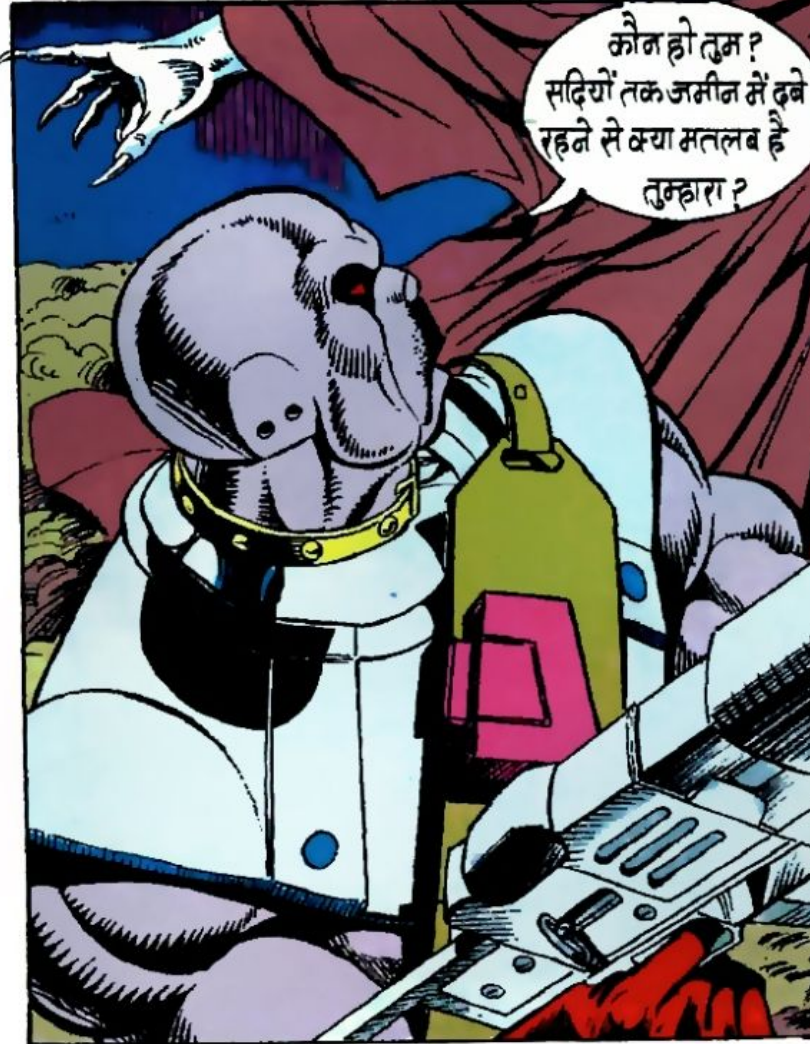
हा हा हा! तू मुझे नहीं पहचानता! और पहचाने भी तो कैसे? मैं पृथ्वी पर जब आया था, तब तो कलियुग शुरू ही हुआ था। उस समय तो तेरे लकड़दादा के लकड़दादा का लकड़दादा भी पैदा नहीं हुआ होगा!
मैं निशाचर हूं। अंधेरे का बेटा। सारी दुनिया में पाप बढ़ाने का जिम्मा लिया था मैंने! पर तेरी ही पृथ्वी के एक... खैर! उससे तेरा क्या मतलब?
तेरे अन्दर हिंसा भरी हुई है। हिंसा तो पाप का ही एक रूप है। और पाप तो मेरे शरीर में खून की जगह बहते हैं! इसीलिए मैं तुझसे बहुत खुश हूं! आजा... मेरी शरण में आजा! अपनी आत्मा मुझे दे दे। बदले में मेरे साम्राज्य में तुझे एक महत्त्वपूर्ण ओहदा मिलेगा! दे दे अपनी आत्मा मुझको!
तू मुझे कोई नौटंकी वाला लगता है! या फिर छोटे हाजी ने ही तुझे भेजा है ताकि अगर तेरे ये दो गुंडे मुझे न मार पाएं तो अगला हमला तू करे!
नादान है तू! मैं तुझसे और हिंसा चाहता हूं। ताकि मेरे शरीर में और शक्ति आए! तेरी जान से मुझे क्या सरोकार? खैर, अगर तुझे मुझ पर अभी यकीन नहीं आता तो कुछ घड़ी बाद आ जाएगा। श्वानों, समझा दो कि हम कौन हैं?
निशाचर से एक किरण निकलकर कुत्तों से टकराई–
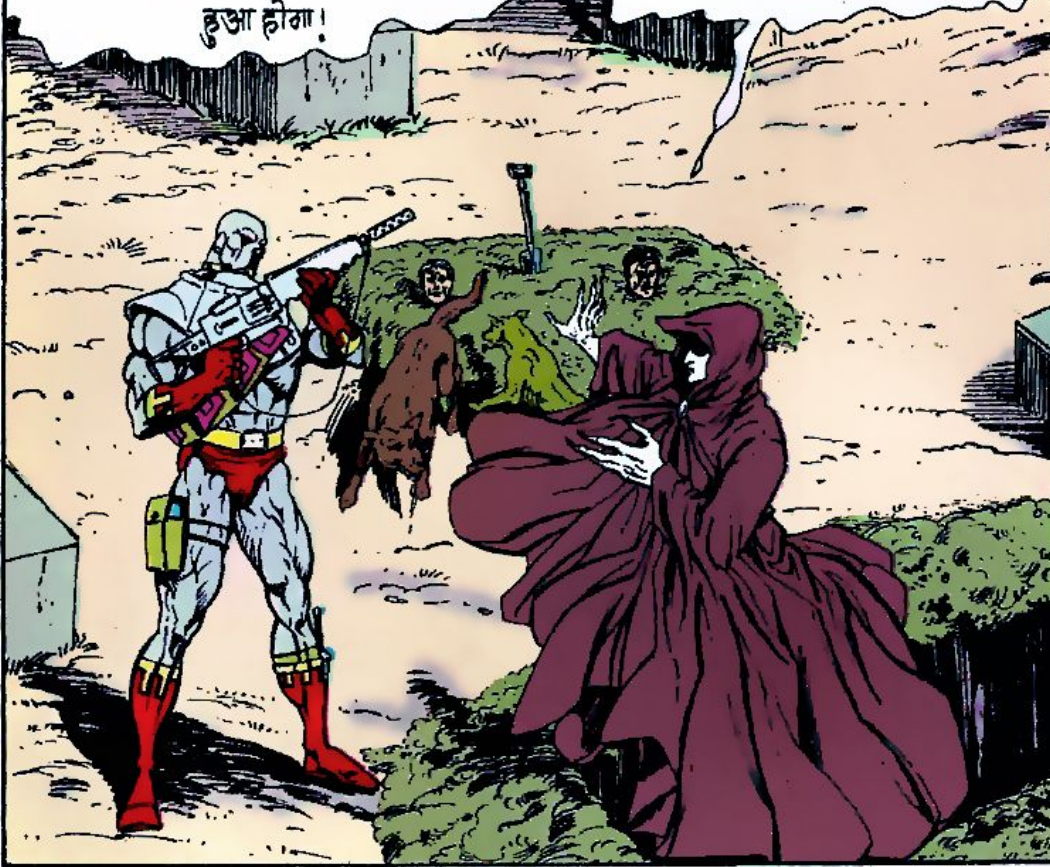
और कुत्तों के चेहरे के भाव ही बदल गए-
अरे, य... यह क्या कर रहे हो तुम लोग? तुम लोग तो मेरे दोस्त हो! हटो! पीछे हट जाओ!
लेकिन-
अरे! यह इनको क्या हो गया! ये तो एकाएक पागल कुत्तों की तरह बर्ताव करने लगे!
आऽऽह! आऽऽह!
कुत्ते डोगा को भंभोड़ डाले दे रहे थे। और यह हिंसा, निशाचर को और ताकतवर बना रही थी-
लेकिन यह दृश्य ज्यादा देर तक ऐसा ही रहने वाला नहीं था! क्योंकि डोगा अब असावधान नहीं था-
बस! अब तक मैं तुमको दोस्त की नजर से देख रहा था!
लेकिन अब नहीं, अब नहीं! और नहीं!
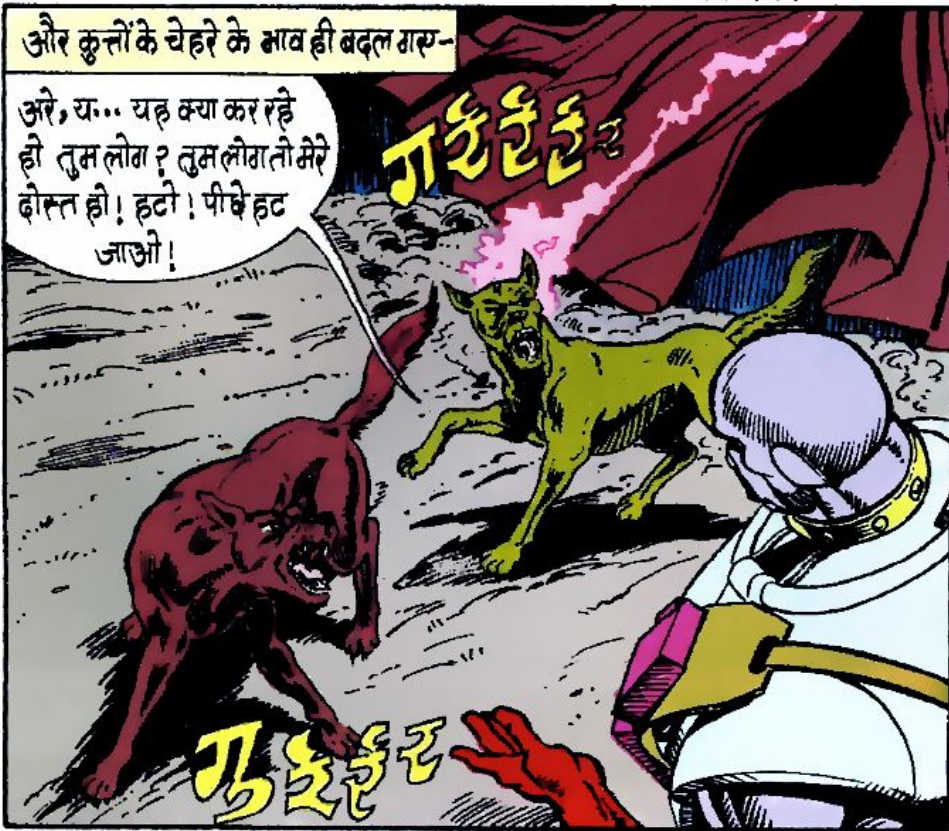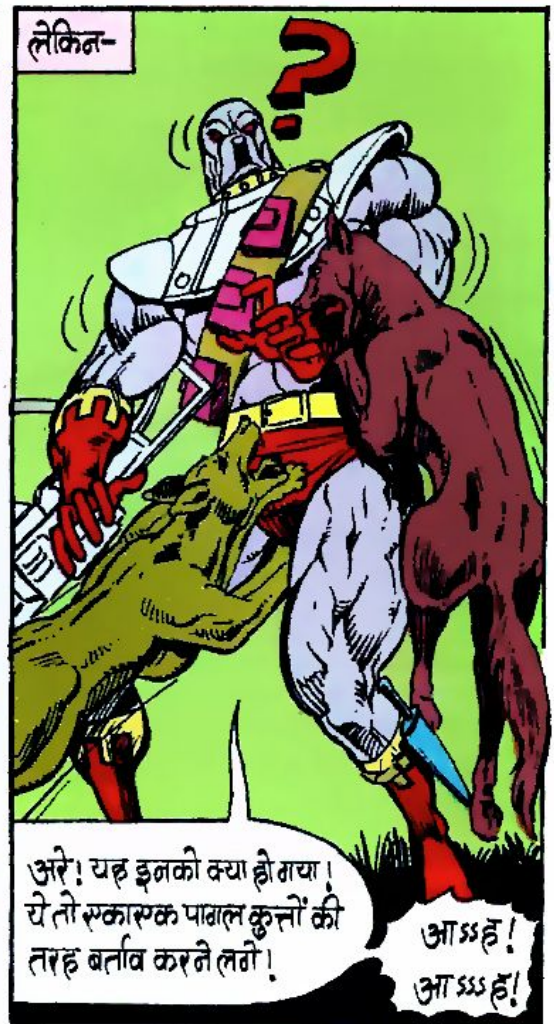
अब तुम्हारा वही हाल होगा, जो डोगा पर हमला करने वाले हर प्राणी का होता है!
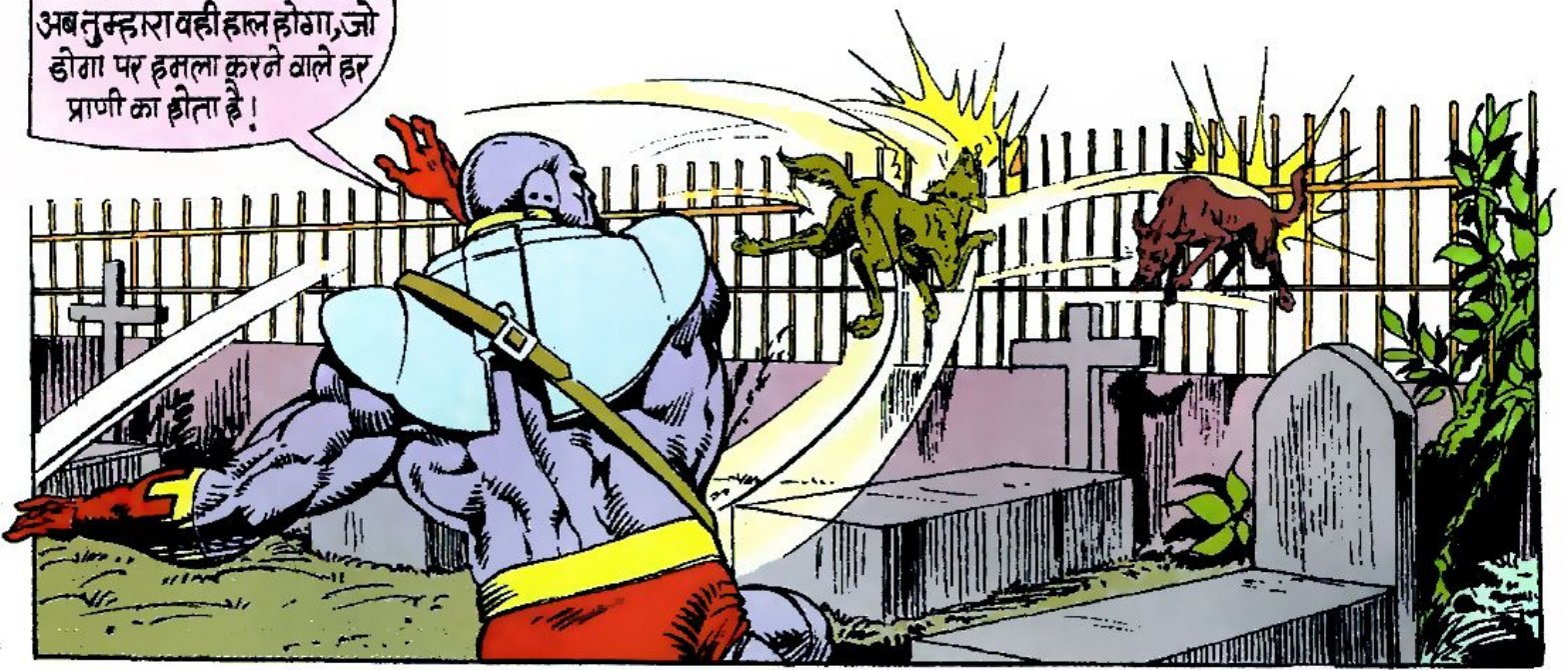
शाबाश! शाबाश! तुमसे मुझे ऐसी ही हिंसा की उम्मीद थी! तूने मुझे काफी शक्ति दे दी है। अब मैं तुझे घुटने टिकवाने को तैयार हूं। बता तू अपनी आत्मा अपनी मर्जी से मुझे देता है या मैं उस पर कब्जा कर लूं! दोनों ही तरह से तू मेरे बहुत काम आएगा!
बहुत सुन ली तेरी बकवास, छोटे हाजी के कुत्ते!

तू मेरी आत्मा पर क्या कब्जा करेगा, निशाचर, मैं ही तेरी आत्मा को बाहर निकाल दूंगा!
डोगा की उंगली ट्रिगर पर दबती चली गई, और गोलियां गन की मैगजीन से निकलकर निशाचर के शरीर में समा गईं-
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
हा हा हा! एक और हिंसक कृत्य! तू तो हिंसा खिला-खिलाकर मेरे पेट को फाड़ देगा!...
...पर अब मुझे तो पता चल गया है कि तू अपनी आत्मा मुझे नहीं देगा!

इसीलिए तेरी आत्मा को मुझे खुद ही अपने शिकंजे में कसना पड़ेगा!
निशाचर ने डोगा के शरीर के अन्दर घुसने की कोशिश तो यही सोचकर की थी कि वह डोगा की हिंसक आत्मा को अपने कब्जे में बड़े आराम से ले लेगा।
परन्तु-
आऽऽह! इसके अन्दर तो एक पुण्यात्मा है। सत्य तत्वों से भरा हुआ है इसका शरीर! इन सत्य तत्वों में हिंसा और क्रूरता जैसे पापों का मिश्रण होने के बावजूद भी मैं इसकी आत्मा को पकड़ नहीं पाऊंगा। मैं खुद जल जाऊंगा!...
... अब पहले मुझे इसकी आत्मा को इसके सत्य तत्वों वाले शरीर से निकालना होगा। उसके बाद ही मैं इसकी आत्मा पर कब्जा कर सकता हूं!...
... और यह काम मेरी निशाचर सेना बड़े आराम से कर सकती है!
आऽऽऽह! शायद ये निशाचर सच कह रहा है। अभी- अभी इसने मेरे शरीर के अन्दर घुसने की कोशिश की, और अब इसकी पुकार पर सैकड़ों चमगादड़ मेरी तरफ लपक रहे हैं!...
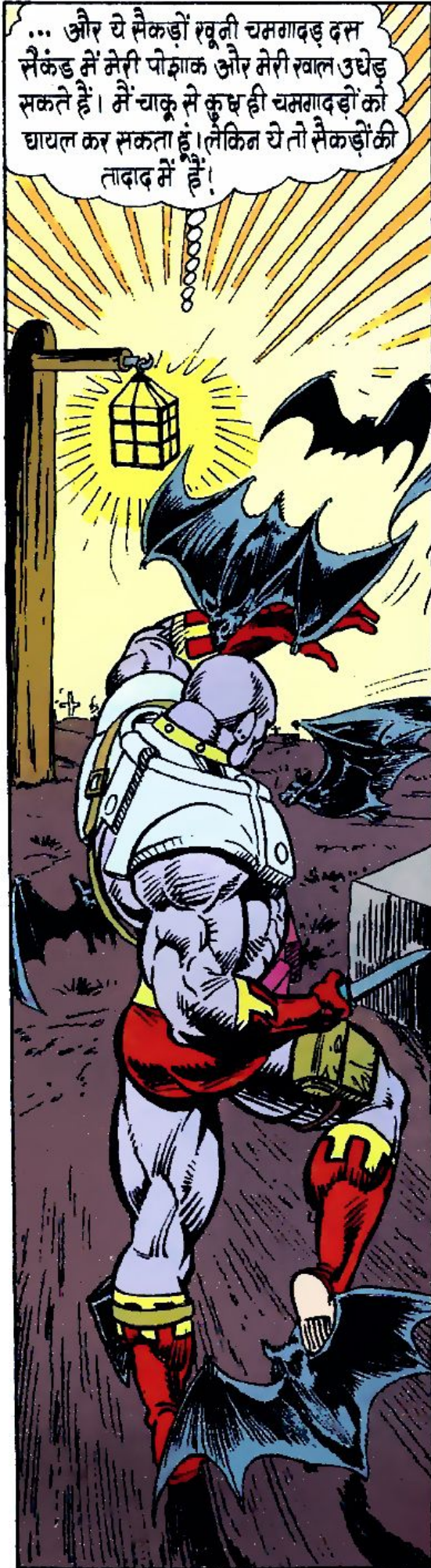
... और ये सैकड़ों खूनी चमगादड़ दस सैकंड में मेरी पोशाक और मेरी खाल उधेड़ सकते हैं। मैं चाकू से कुछ ही चमगादड़ों को घायल कर सकता हूं। लेकिन ये तो सैकड़ों की तादाद में हैं!
ये रोशनी से भागते हैं। पर यहां पर... वह लैम्प। यहां पर बिजली नहीं है! वह लैम्प जरूर मिट्टी के तेल से जल रहा है। पेट्रोमैक्स की तरह। यह मुझे बचा सकता है!
ताड़
डोगा की एक किक ने लैम्प को चूर-चूर कर दिया-
मिट्टी के तेल से लकड़ी का खंभा नहा गया-
और डोगा को चमगादड़ों से बचने का एक हथियार मिल गया-
वाह! तू सिर्फ हिंसक ही नहीं, समझदार भी है। पर अब न तो हिंसा तेरे काम आएगी, और न ही समझदारी! क्योंकि तेरी और चमगादड़ों की हिंसा ने मुझे इतनी और शक्ति दे दी है।...



कहानी 19 पेज से जारी

...कि मैं तेरी आत्मा को अपने आप ही बाहर खींच लूं!

आऽऽऽ ह! लगता है जैसे बदन से जान बाहर निकल रही हो! यह सचमुच कोई राक्षस ही है।...

...इससे मानवीय शक्तियों द्वारा निपटा नहीं जा सकता!

अगर यह सचमुच दुष्ट शक्तियों वाला प्राणी है तो ईश्वरीय शक्तियां इस पर जरूर असर करेंगी!

और इसका स्पर्श मैं अपने शरीर से होने नहीं दूंगा!

निशाचर के वार ने डोगा को उछालकर दूर फेंक दिया—

यह किताब, सिर्फ एक किताब नहीं है निशाचर!

आऽऽऽऽईघ! इसके छूते ही मेरा बदन जलन से भर गया है। क्या फेंका है तूने मुझ पर कमीने?
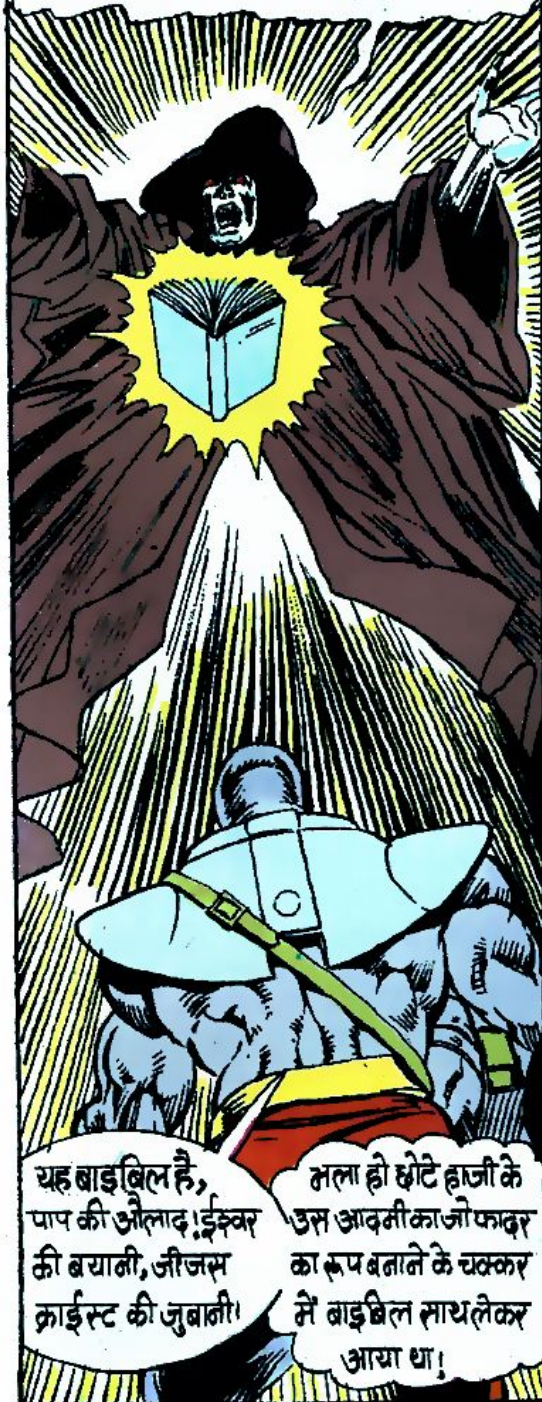
यह बाइबिल है, पाप की औलाद! ईश्वर की बयानी, जीजस क्राईस्ट की जुबानी।

भला हो छोटे हाजी के उस आदमी का जो फादर का रूप बनाने के चक्कर में बाइबिल साथ लेकर आया था!

आऽऽह! मैं सदियों की नींद से उठा हूं। अभी मेरे शरीर में इतनी शक्ति नहीं है कि मैं ईश्वरीय चिन्हों में भरी ऊर्जा का मुकाबला कर सकूं। इस बाइबिल को छूते ही इसने मेरी काफी शक्ति को नष्ट कर दिया है। अभी मुझे जाना होगा!
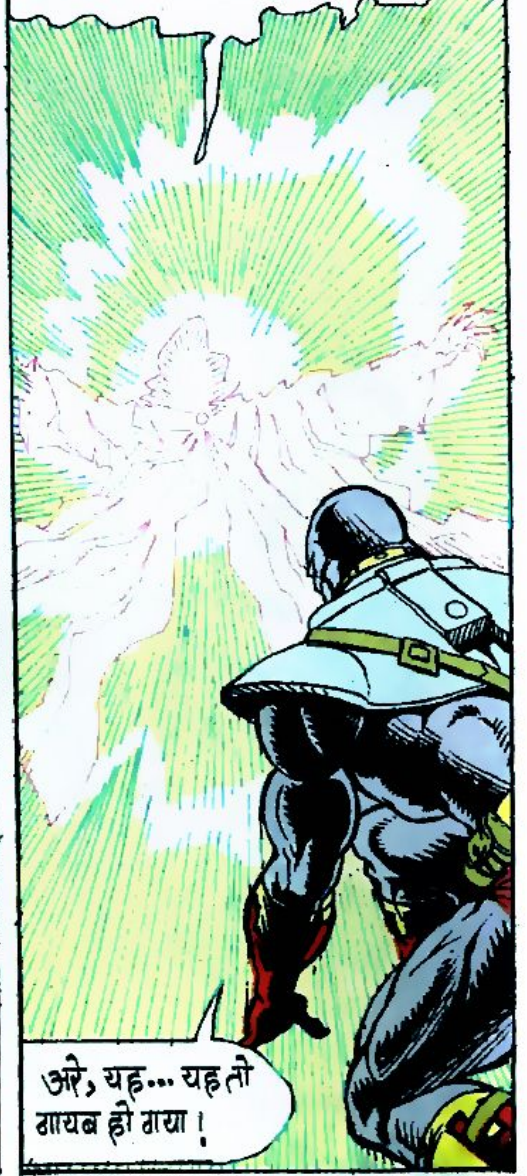
... मैं इन सब बातों में विश्वास करता तो नहीं, पर लगता है कि अब विश्वास करना पड़ेगा! जिस पर गोलियां असर न करें, चमगादड़ जिसकी बात मानें, और जो मेरी आंखों के सामने से गायब हो सके, वह जरूर कोई अमानवीय शक्तियों वाला प्राणी ही हो सकता है!...

... अब असली सवाल यह है कि निशाचर अब क्या करेगा? और अगर कुछ करेगा तो उसे रोका कैसे जाएगा?

डोगा को इस सवाल का जवाब बहुत जल्दी ढूंढना था, क्योंकि निशाचर अपना अगला कदम जल्दी ही उठाने जा रहा था —

इतनी सदियों तक निष्क्रिय रहने के कारण मैं इतना कमजोर हो गया हूं कि सिर्फ एक किताब मुझे भागने पर मजबूर कर दे! छी!...

... मुझे अपनी शक्तियां पूरी तरह से प्राप्त करने में समय लगेगा, क्योंकि मुझे शक्तियां तभी मिलेंगी, जब पाप बढ़ेगा!...

... और पाप बढ़ाने के लिए मुझे अपने दुश्मनों को आजाद करना होगा। और अगर मैं उनको आजाद करवाऊंगा तो वे अपने आप मेरे गुलाम बन जाएंगे। मेरी शक्ति अपने आप कई गुना बढ़ जाएगी!...

... परन्तु श्राप के कारण मैं खुद उनको आजाद नहीं करवा सकता। पर किसी न किसी को भेज तो सकता हूं!
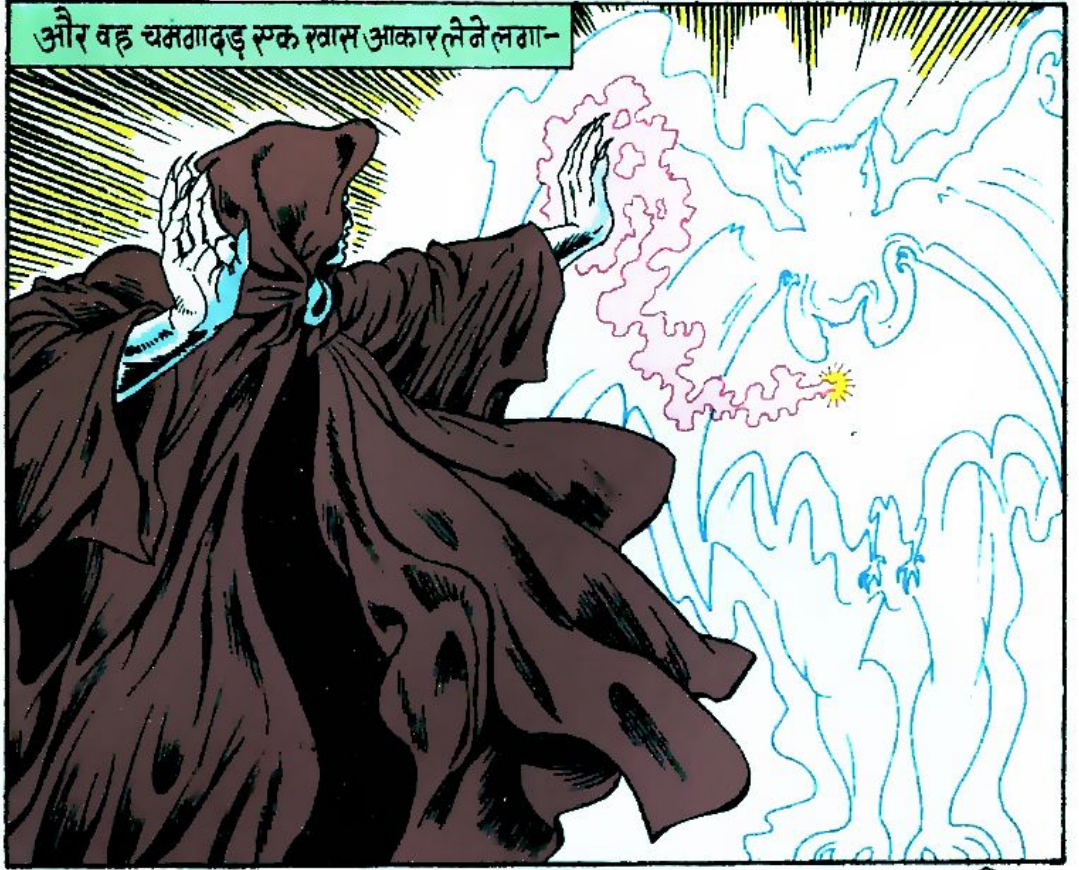
हा हा हा! निशाचर ने तुझमें जान डालकर तुझे एक नया रूप दिया है। अब तू एक मामूली चमगादड़ से अति शक्तिशाली 'तमचर' बन गया है। अब जा! जाकर उस मोती को मेरे पास ले आ जिसे मायायोगी ने यहां से सत्तर योजन दूर किसी तंत्र कैद में रखा है। मैं उसे छू नहीं सकता, पर तू उसे ला सकता है... अब जा, मेरी शक्तियां तुझे रास्ता दिखाती जाएंगी! जा!
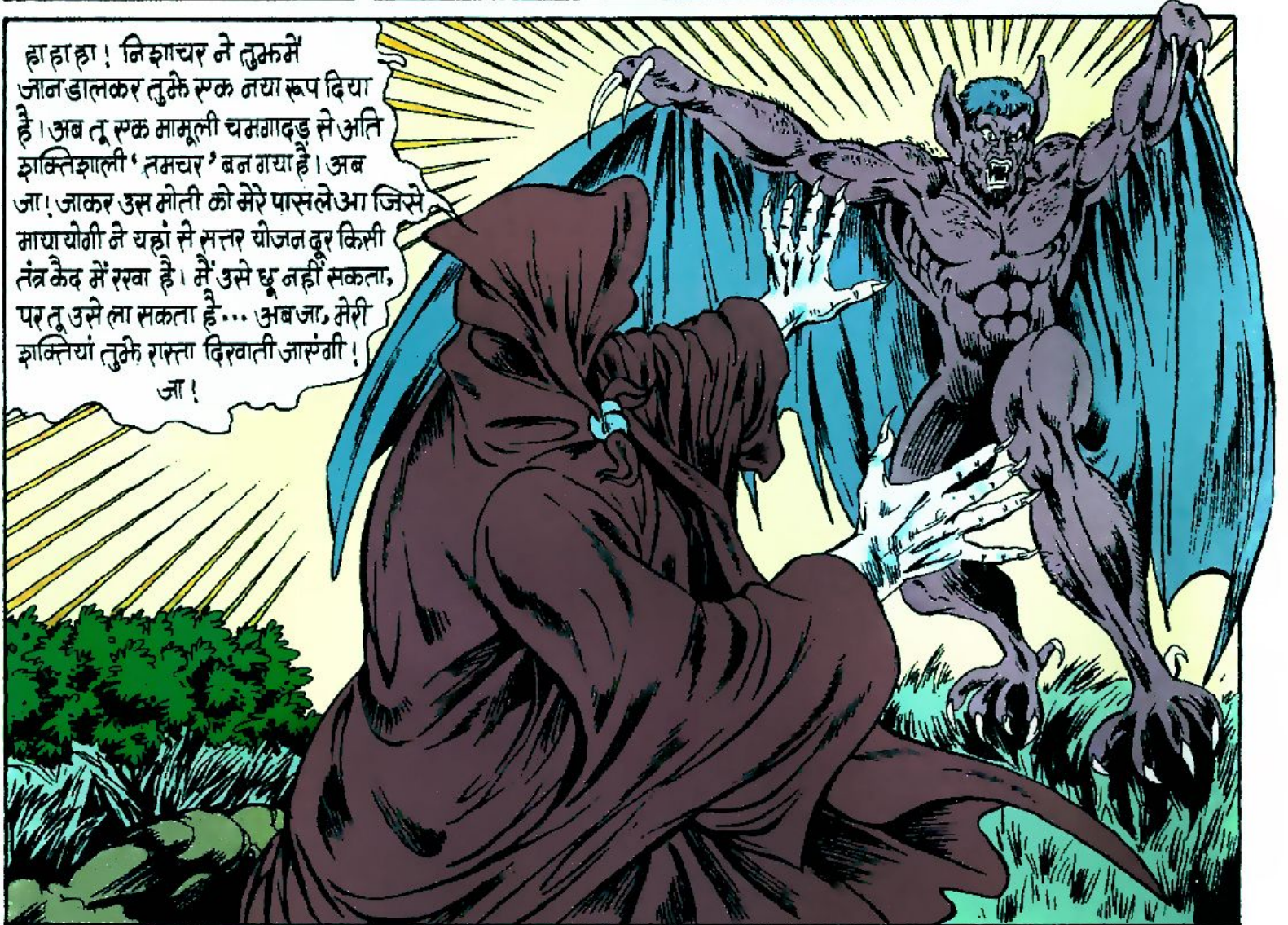
'तमचर' बना चमगादड़, तुरन्त ही एक दिशा में रवाना हो गया—
और यह दिशा—
राजनगर की तरफ जाती थी—
जल्दी आ! यह मायायोगी आश्रम जरूर है! पर यहां पर भी सिक्योरिटी काफी सख्त है!
ऐसा था तो बैंक में चोरी करनी चाहिए थी। या किसी ज्वेलर्स के यहां सेंध लगाते। यहां भी सिक्योरिटी है तो यहां आने का फायदा क्या हुआ!
अब उतनी सख्त सिक्योरिटी भी नहीं है। यहां पर जितनी प्राचीन दुर्लभ मूर्तियां रखी हैं उसके हिसाब से तो उतनी ही सिक्योरिटी है, जितनी हाउसिंग सोसायटियों में होती है!
ऐ! कौन हो तुम दोनों? दीवार पर क्या कर रहे हो?
अंधेरे में उस साधु को पता ही नहीं चला कि किस चीज ने उसके जबड़े को लुगदी में बदल दिया—
फटट
तड़क
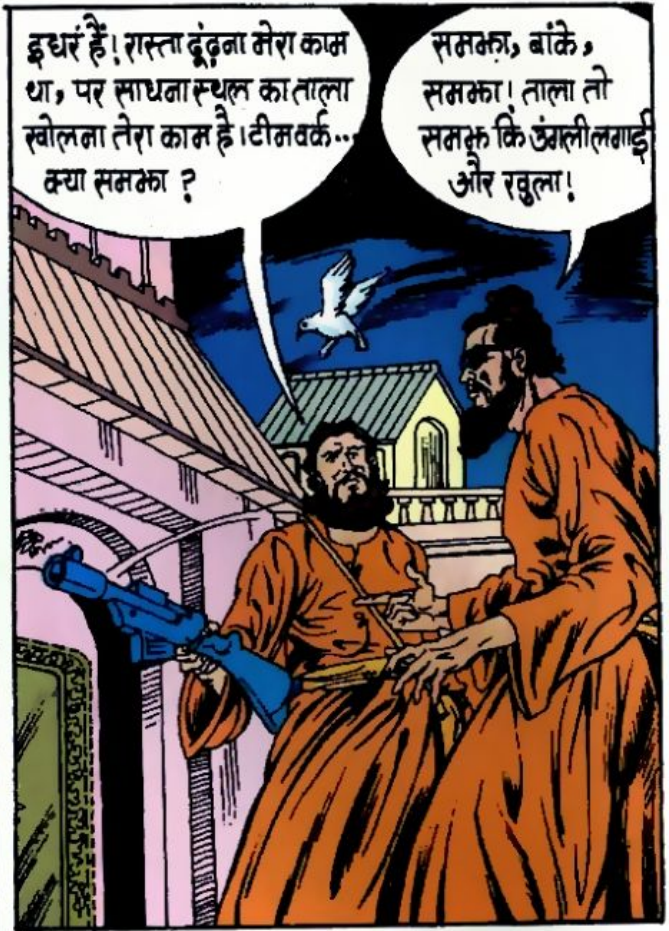
देखा! 'एयर कम्प्रेस्ड गन' लाने का फायदा! चूंकि यह बारूद के बजाय 'एयर प्रेशर' से पथरीले क्यूब दागती है इसीलिए न तो धमाका होता है, और न ही हवा में बारूद की महक फैलती है!
और इसको अगर कोई देखेगा तो भी यही समझेगा कि पैर फिसलने से यह गिर गया और इसका जबड़ा टूट गया। समझा रतौंधे?
आहा, अब 'एयर कम्प्रेस्ड गन' के कसीदे पढ़ना छोड़, और बता कि वो मूर्तियां कहां रखी हैं?

इधर हैं! रास्ता ढूंढ़ना मेरा काम था, पर साधना स्थल का ताला खोलना तेरा काम है। टीमवर्क... क्या समझा?
समझा, बांके, समझा! ताला तो समझ कि उंगली लगाई और खुला!

रतौंधा बड़बोला नहीं बन रहा था। ताला सचमुच एक खटके में ही खुल गया था—
खट

अन्दर वही खजाना था, जिसकी तलाश में बांके और रतौंधे मायायोगी आश्रम में आए थे—
वाह! हजारों साल पुरानी दुर्लभ मूर्तियां खुले में पड़ी हैं! जय भगवान! जय भगवान!
अरे, जय बाद में बोल लेना! पहले उठाकर झोले में तो भर ले!

लेकिन इससे पहले कि वे मूर्तियों की तरफ बढ़ते—
अबे बांके, उधर देख! वह काला मोती कैसा है, जो उस यंत्र के अन्दर रखा है? सुना तो है कि काला मोती बहुत दुर्लभ और कीमती होता है!

बांके तुमको नहीं बचा पाएगा ! जो भी दुष्ट स्वभाव वाला व्यक्ति इसे छुएगा, उसका यही हाल होगा !

कौन ?

कौन है तू ? ... बचा मेरे दोस्त को ! वरना छाती के पिंजर में छिपा तेरा दिल बाहर आकर धड़कने लगेगा !
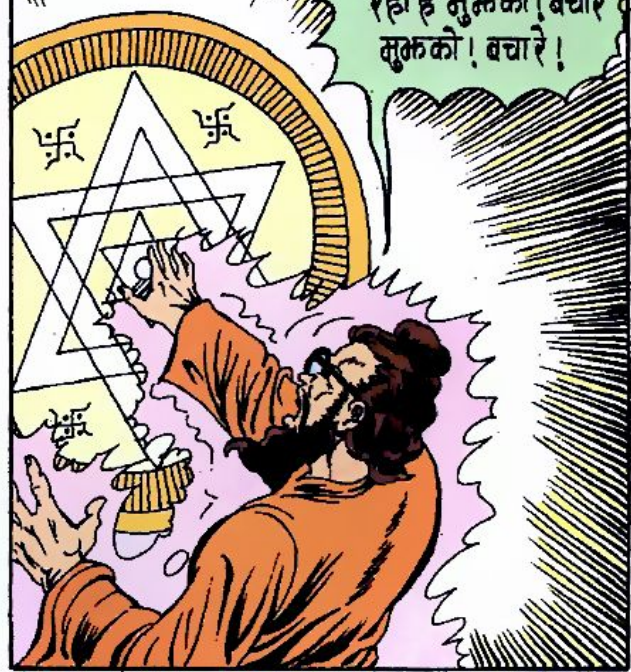
मैं कौन हूं... पूछना तो मुझे चाहिए कि तुम कौन हो ? पर पहले मैं जवाब देता हूं । मैं दयायोगी हूं । इस आश्रम के संस्थापक मायायोगी की सौवीं पीढ़ी का वंशज ! और तेरा दोस्त उस शिकंजे से कभी छूट नहीं पाएगा ! क्योंकि उसने उस चीज को छू लिया है, जिस पर किसी भी बुराई को पकड़ सकने का कवच चढ़ा हुआ है । तुम्हारा दोस्त अब तभी छूटेगा जब पुलिस आएगी !

पुलिस? पुलिस बांके और रतौंधे को पकड़ने नहीं, बल्कि तुम्हारी लाश उठाने आएगी, योगी!
'कम्प्रेस्ड स्पयरगन' का वार निश्चित तौर से दयायोगी की छाती को फाड़कर दिल को बाहर निकाल लेता-
फटट
अगर वह पत्थर, छाती तक पहुंच पाता तो-
?
सनन
झनन
ध्रुव... ...आहsss!
ताड़
तेरे पास हमको भूखा मारने के अलावा और कोई काम नहीं है क्या? जहां देखो वहीं पहुंच जाता है... मेरे रास्ते से हटजा वरना तुझे अपनी जान देनी पड़ेगी!
दुष्ट आदमी पैसे की कमी के कारण नहीं, बल्कि अपने लालच के कारण भूखे मरते हैं! और रही जान की बात तो उसे लेने की कोशिश करके देख ले!
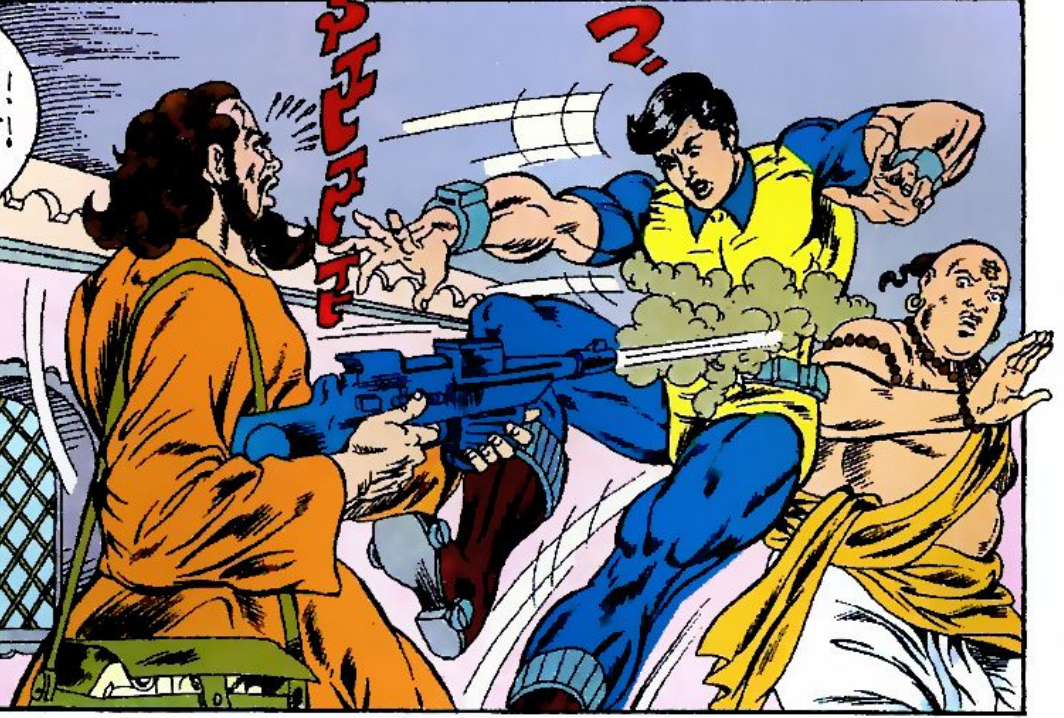
लेकिन हवा को कौन देख पाया है –

आऽऽऽ ह! हवा का धक्का तो काफी तेज है! मैं इसके वार को देख तो नहीं सकता, पर वार की दिशा का अन्दाजा तो लगा ही सकता हूं!
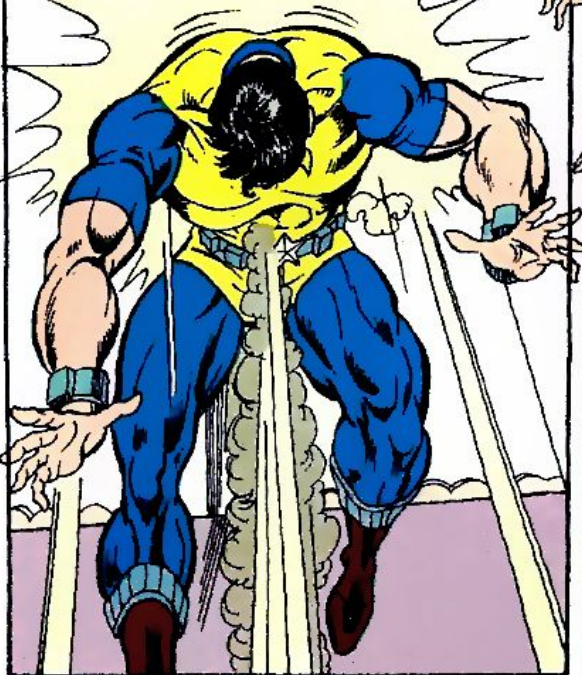
लगातार निकल रहे वायु-जेट से ध्रुव तो बचने लगा–
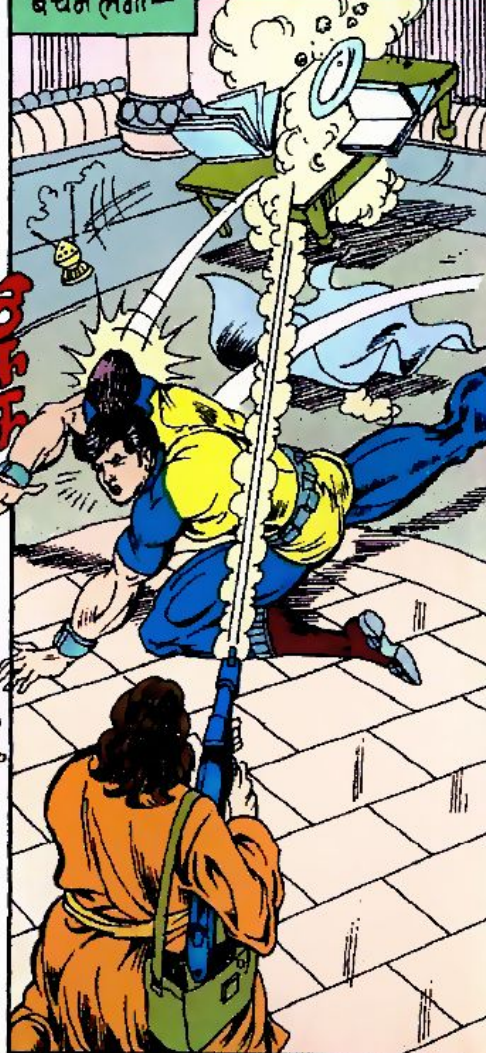
लेकिन वायु जेट दूसरी चीजों को हवा में इधर-उधर उछालने लगा–

ध्रुव के चकराते सिर के कारण उसकी गति कुछ पलों के लिए थमी–
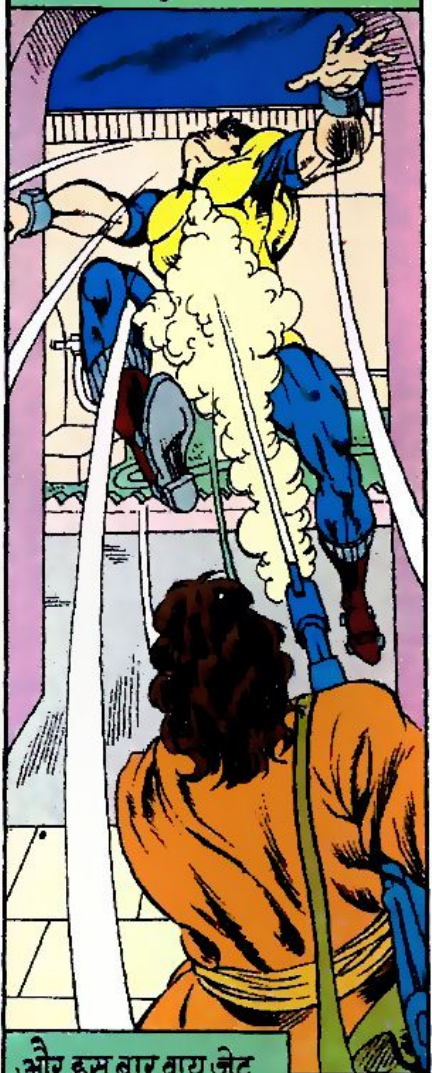
और इस बार वायु जेट का वार वह नहीं बचा पाया –

उसका शरीर हवा में उड़ता हुआ बाहर लॉन में आ गिरा—
आह! यह बांके तो ट्रिगर पर से उंगली उठा ही नहीं रहा है। हवा का तेज जेट लगातार छोड़ता ही जा रहा है! मैं इसकी उंगली हटने का इन्तजार नहीं कर सकता।
कुछ और सोचना होगा! पर क्या... आहा! एक रास्ता समझ में आ तो रहा है!
अगले ही पल, ध्रुव हाथ में पानी पटाने वाला होज पाइप लेकर बांके की तरफ लपक रहा था—
अच्छा! तो अब तू पाइप से मुझे बांधेगा? आजा बांध ले।
मैं तुझे पहले ही उड़ा... अरे?
ध्रुव, वायु-जेट की दिशा पहले से ही भांपकर झुक चुका था, और पाइप का एक छोर, गन की नली में घुस चुका था—
नतीजा लगभग तुरन्त ही सामने आ गया—
पाइप के दूसरे छोर से निकले वायु जेट ने बांके को हवा में ही उड़ा दिया—

और इससे पहले कि वह संभल पाता, ध्रुव ने उसके होश उड़ा दिए—

और फिर वह साधना स्थल पर जा पहुंचा-

ये रही आपकी मूर्तियां स्वामीजी! पर इस दूसरे गुंडे का हाथ कैसे फंस गया है?

मुझे तो कहीं कोई शिकंजा नजर नहीं आ रहा!

शिकंजा है ध्रुव! अच्छाई का बुराई पर कसा शिकंजा!

इन दोनों का प्लान तो असफल हो गया, स्वामी जी! भला हो उस चिड़िया का जिसने आपके आश्रम के एक साधु पर हमला होते देखकर, मुझ तक इस घटना की सूचना पहुंचा दी थी!

आपकी उलझन तो दूर हो गई, अब मेरी उलझन भी सुलझा दीजिए! इस गुंडे का हाथ कैसे फंस गया था?

और... कंधे पर मेरे हाथ रखते ही वह छूट कैसे गया?

क्योंकि तुम्हारा स्पर्श होते ही इस गुंडे के शरीर में भी तुम्हारा सत्य प्रवाहित होने लगा था, ध्रुव! और इस सत्य को पहचान कर इसके हाथ पर कसा शिकंजा खुल गया!

यह गुंडा इस काले मोती पर लगे 'सत्य कवच' के शिकंजे में फंस गया था ध्रुव! इस मोती पर 'सत्य कवच' मेरे पूर्वज मायायोगी ने चढ़ाया था! और इस मोती के कारण ही इस आश्रम का निर्माण किया था! जो समय बीतने के साथ-साथ इतना विशाल आश्रम बन गया है!

पर इस मोती पर 'सत्य कवच' क्यों चढ़ाना पड़ा? क्या है इस काले मोती में?
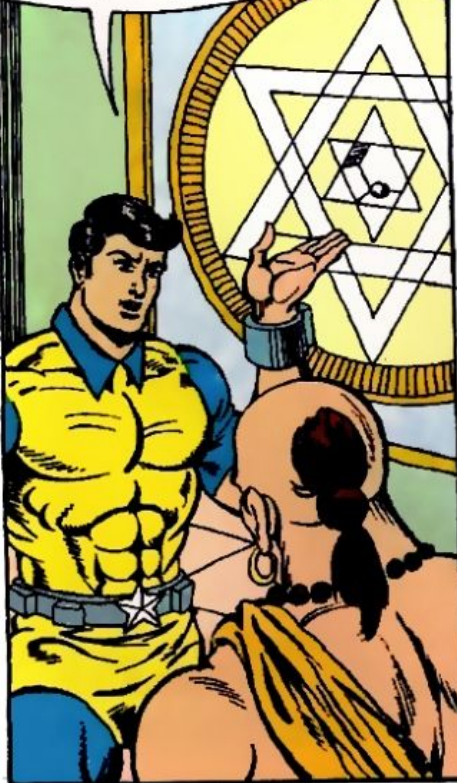
बहुत पुरानी बात है ध्रुव! लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष पुरानी! दुनिया वालों के दिल में धर्म पर से आस्था घटती जा रही थी! पाप धीरे-धीरे पनप रहा था! इन्सान के शरीर में दैवीय गुण भी होते हैं, और आसुरी गुण भी! उस वक्त दैवीय गुण दब रहे थे, और आसुरी गुण बलवान हो रहे थे!...

... और इन्सानों के दिल में पनपता इतना सा पाप काफी था, उस काली शक्ति को अस्तित्व में लाने के लिए... जिसका नाम था निशाचर!

निशाचर?

नारकी और पातकी ने पूरे संसार में पापों की बाढ़ लाकर कई पुण्यात्माओं तक को शैतान निशाचर का धर्म मानने पर विवश कर दिया! तब मायायोगी ने उन दोनों शैतानों को भयंकर मुश्किलों के बाद एक सीप और उसमें बन्द काले मोती में बन्द कर दिया!

मोती को उन्होंने यहां पर एक यंत्र में रख दिया, और सीप को यहां से दूर एक अन्य स्थान पर गाड़ दिया! वहां, जहां पर अब मुम्बई है। जब तक वह सीप और काला मोती आपस में नहीं मिलते तब तक नारकी और पातकी कभी आजाद नहीं हो सकते!...

उन्होंने देवों से मदद मांगी! परन्तु पृथ्वी पर फैली दुष्टता की चादर किसी भी मदद को पार आने नहीं दे रही थी! पवन भी विषैली हो चुकी थी! जल भी बंधक था, और अग्नि भी सिर्फ विनाश फैला रही थी। यज्ञ सामग्री तक को अग्नि देव स्वीकार नहीं कर रहे थे! बस एक ही चीज बची थी जो मायायोगी की सहायता कर सकती थी! और वह थी...
दयायोगी की जुबान बीच में ही थम गई-
क्योंकि जो जीव साधना स्थल में आ धमका था, उसे देखकर किसी की भी जुबान जड़ हो जाती-
कड़ड़ड़ड़ड़ड़ड़
हे भगवान! यह क्या है?
इसका भगवान से दूर-दूर का भी संबंध नहीं है ध्रुव! इसके शरीर से घोर दुष्टता की तरंगें आ रही हैं! और इतनी दुष्टता सिर्फ निशाचर में ही हो सकती है!
यह निशाचर ही है ध्रुव!...

...और यह इस मोती को उठाने के लिए बढ़ रहा है। पर...पर यह कैसे हो सकता है? निशाचर तो इस मोती के आस-पास भी नहीं फटक सकता है!...
...यानी...यानी यह निशाचर नहीं है! निशाचर द्वारा अपनी शक्तियां देकर भेजा गया कोई प्राणी है। इसको रोकना होगा!
दयायोगी ने साधना स्थल पर से हथेली पर कुछ चावल के दाने रखे, और उस पर फूंक मारकर—
फूऊऊऊ
तमचर पर फेंका! और तमचर सिर्फ हल्का सा तड़पा—
लेकिन तमचर के वार ने दयायोगी की बालों से रहित खोपड़ी खोल दी—
आऽऽह! ध्रुव, इसको मोती मत ले जाने देना! मत ले जाने देना! वरना... गजब हो... जाएगा!
ध्रुव पहले ही तमचर की तरफ लपक चुका था—
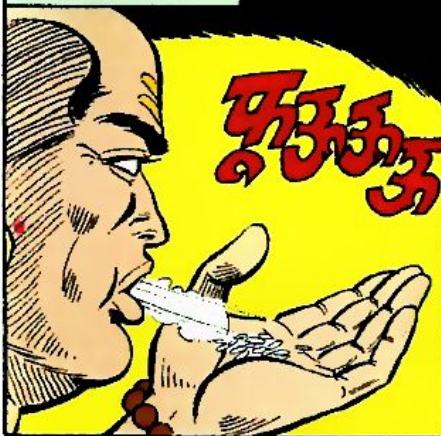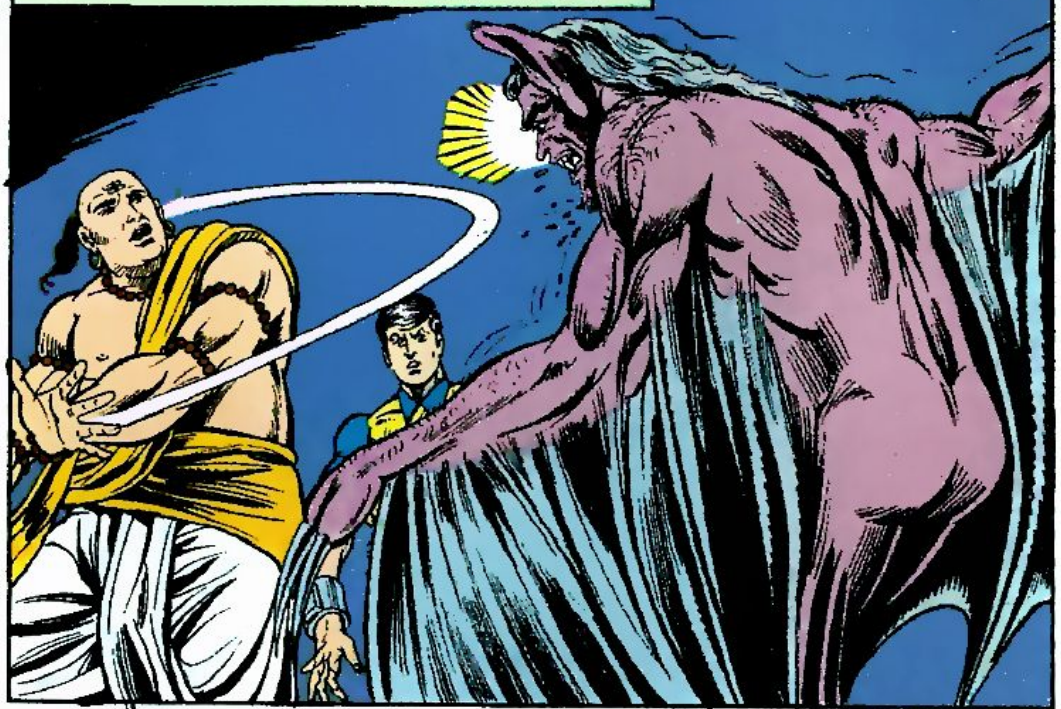
लेकिन तब तक स्वामी दयायोगी के लिए देर हो चुकी थी। वे बेहोश होकर जमीन पर गिर चुके थे-
ताड़.
लेकिन ध्रुव को यह अन्दाजा नहीं था कि वह किससे टकरा रहा है-
उसका सामना निशाचर की पाप शक्ति से भरे तमचर से था-
आऽऽह!
ध्रुव का दिमाग अंधेरे में डूबने लगा-
और तमचर ने लपककर काले मोती को खींच लिया-
सत्य कवच का एक भयंकर झटका तमचर को लगा तो जरूर, परन्तु उसके शरीर में पाप शक्ति के साथ-साथ थोड़ी सत्य शक्ति भी थी, जिसने उसको बचा लिया था-
मोती हाथ में आते ही तमचर, छत में बने उसी छेद की तरफ लपक पड़ा, जिसे बनाता हुआ वह अन्दर आया था-
लेकिन ध्रुव भी अब तक होश संभाल चुका था-

और उस छेद से पार होते-होते, तमचर के साथ, एक सवारी भी शामिल हो गई थी-
और
इससे पहले कि तमचर स्थिति को समझ पाता-
ध्रुव उसके नुकीले पंजों से मोती को खींच चुका था-
तड़ाक
तमचर चमगादड़ बौखला तो जरूर गया, पर उसने संभलने में ज्यादा देर नहीं लगाई-
ओह! यह मुझे नीचे गिराकर मारना चाहता है!
ताकि मेरे मरने के बाद यह काले मोती को आराम से हासिल कर सके!
इस बार वार सहने की बारी ध्रुव की थी-
उसका हाथ छूट गया। परन्तु ध्रुव ने ऐसी स्थिति का सामना कई बार किया था-
ध्रुव ने स्टार लाइन को ध्वज स्तंभ में फंसाया, और वह नीचे झूल गया-
अब मुझे सबसे पहले किसी कमरे में घुसना होगा। छोटे कमरे में जहां से निकलकर मैं मोती को सुरक्षित स्थान पर रख दूं! और छोटा कमरा होगा तो यह राक्षस अन्दर घुसकर भी अपने परों का इस्तेमाल नहीं कर पाएगा!
ताड़
आऽऽऽह
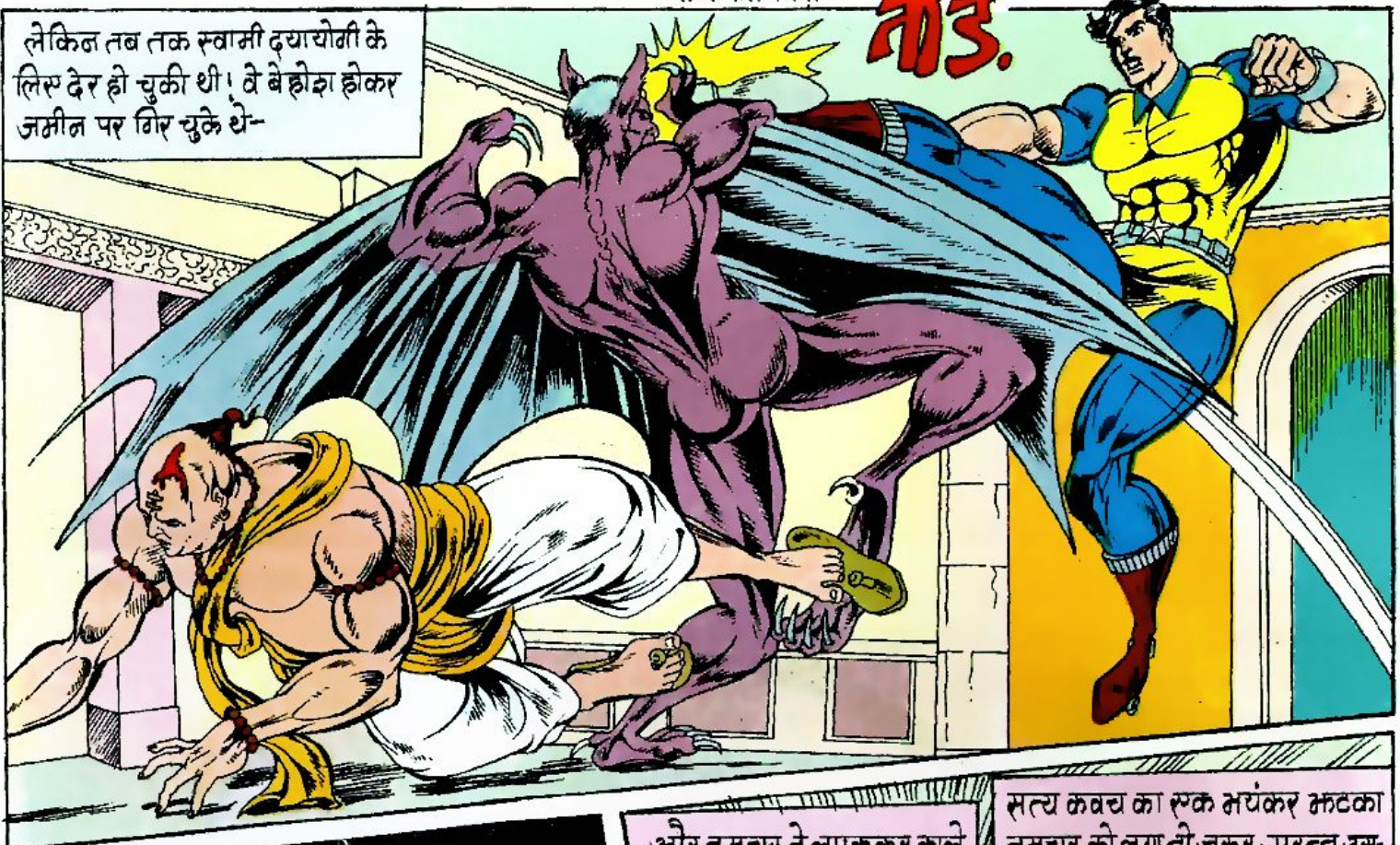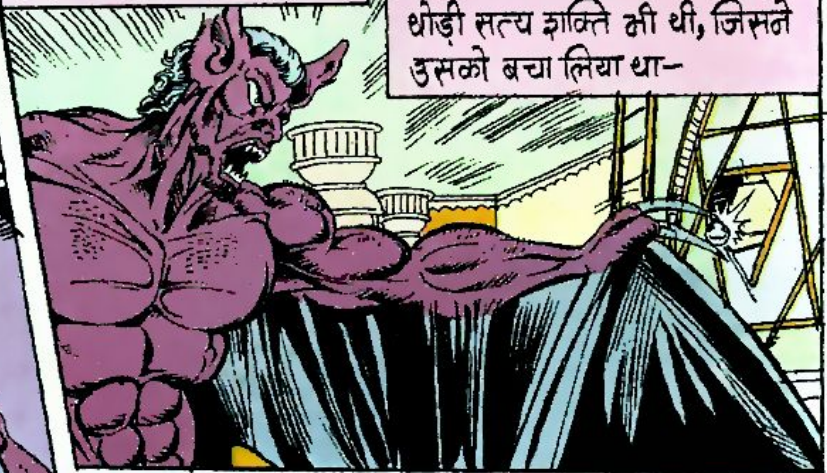
वार खाकर हवा में उड़ता हुआ ध्रुव का शरीर वापस छत पर जा गिरा–
ओह! इसने मुझे कमरे के अन्दर तो क्या, जमीन तक को छूने नहीं दिया! इसका वार भी बड़ा जोरदार पड़ता है!...
... पता नहीं मैं ऐसे प्राणी से काले मोती को कितनी देर तक बचा... ओऽऽऽ
इसके उड़ने की शक्ति ही मुझे इस पर भरपूर वार करने नहीं दे रही है! और यह मुझ पर वार करके, मुझसे दूर चला जाता है!...
... या तो इसकी शक्ति का काट ढूंढना होगा, या... या...
... या मुझे भी उड़ना होगा!...
... और उड़ना ज्यादा आसान है!
ध्रुव की कलाई से स्टार लाइन निकलकर, छत के चारों कोनों पर लगे, ध्वज स्तंभों पर कसकर एक आयत बनाने लगी–
सटट

और इस बार, जब तमचर संभलकर ध्रुव की तरफ लपका, ध्रुव उसके लिए तैयार हो चुका था–

इस बार तमचर भाग नहीं सकता था। क्योंकि ध्रुव भी इस बार उसके साथ ही उड़ रहा था–

चाहे थोड़ी-थोड़ी देर तक ही सही–
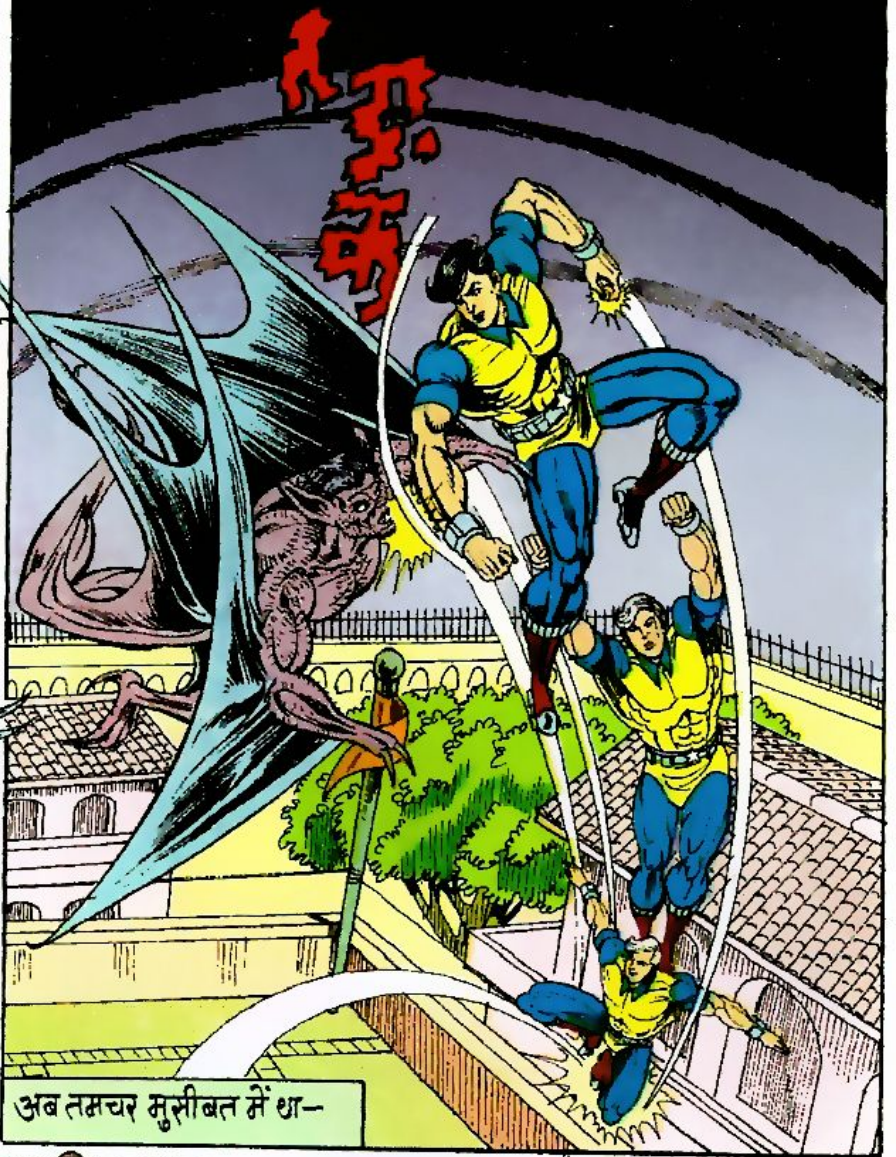
अब तमचर मुसीबत में था–

और निशाचर तक इस मुसीबत के संकेत पहुंच रहे थे–

ओह! कौन है ये इन्सान, जो तमचर का भी मुकाबला कर रहा है! भयंकर सत्य शक्ति महसूस हो रही है मुझे उस इन्सान में! हर वार के स्पर्श के साथ तमचर में भरी मेरी पाप शक्ति धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। ऐसे तो तमचर थोड़ी ही देर में मेरी पाप शक्ति से रहित होकर फिर से एक मामूली चमगादड़ बन जाएगा!

मुझे कुछ करना होगा! हां... अपनी चाल को बदलना होगा! मुझे! उस सत्यनिष्ठ इन्सान को आश्चर्य-चकित करना होगा। चौंका देना होगा!

ध्रुव सचमुच चौंकने वाला था। क्योंकि तमचर को शिकंजे में लेने के बाद वह समझ रहा था कि उसने मैदान मार लिया है—

बस, अब तू मेरे शिकंजे में आ गया है। इन्सान हो या शैतान, सांस के बगैर कोई नहीं जी सकता। और मैं तुझे तभी छोड़ूंगा, जब तेरा दम घुट जाएगा।

ध्रुव यह नहीं जानता था कि निशाचर जैसे कुछ प्राणी बगैर सांस के भी जी सकते हैं। पर फिलहाल तो उसके शिकंजे में सांस लेने वाला प्राणी तमचर फंसा था, और उसका दम घुट रहा था—

गिरते-गिरते हुए भी ध्रुव ने चमगादड़ को रोकने की जी-तोड़ कोशिश की-
पर कामयाब नहीं हो सका-
यह चमगादड़ तो जैसे विमान की स्पीड से उड़ रहा है! मेरे स्टार ब्लेड इस तक नहीं पहुंच पा रहे हैं!
खैर, इस काम में तो मैं असफल हो ही गया हूं...
... पर मुझे मौत को मात देनी ही होगी! वरना फिर कभी दुबारा मौका नहीं मिलेगा। मेरी स्टार लाइन किसी ऊंची चीज से लिपटकर... अरे! स्टार लाइन खत्म हो चुकी है। मैंने खंभों पर सारी स्टार लाइनें लपेट दीं! ओफ्फ!
अब एक ही रास्ता है, और वह ये कि मैं फ्लैग पोल पर बंधी स्टार लाइन को पकड़ने की कोशिश करूं!...पर निशाना बहुत महीन है, और मौका सिर्फ एक!
हवा में शरीर को मोड़कर दिशा देते हुए ध्रुव का शरीर स्टार लाइन की ओर बढ़ा-
और एकाएक रुकने के झटके ने ध्रुव के शरीर को हिला दिया-

आह! स्टार लाइनों का इस्तेमाल जरा ध्यान से करना पड़ेगा! आज तो बाल-बाल बचा! सबसे पहले स्वामी दयायोगी को जाकर बताना होगा कि मैं असफल हो गया...


... वह प्राणी काला मोती ले जाने में सफल...
... अरे! स्वामीजी को क्या हुआ?
और... आप कौन हैं?
मैं आश्रम का डॉक्टर हूं ध्रुव! इनके सिर पर गहरी चोट लगी है! फिलहाल ये बेहोश हैं! पर मुझे डर है कि दिमाग में लगी चोट के कारण ये कोमा में भी जा सकते हैं!


ओह! यानी... इनके जल्दी होश में आने की संभावना कम है!...
पक्की तौर पर कुछ कहा नहीं जा सकता ध्रुव! पर इनको ये चोट लगी कैसे? छत कैसे टूटी?


ध्रुव ने डॉक्टर को संक्षेप में पूरा घटनाक्रम सुना दिया–
ओह! वैसे दोनों चोरों को तो हमने बन्द करके पुलिस को बुला लिया है। पर तुम्हारी चमगादड़ वाली कहानी समझ में नहीं आई!
समझ में तो मुझे भी नहीं आई डॉक्टर! पर सच्चाई यही है, और इसको स्वामीजी के अलावा और कोई नहीं समझा सकता!
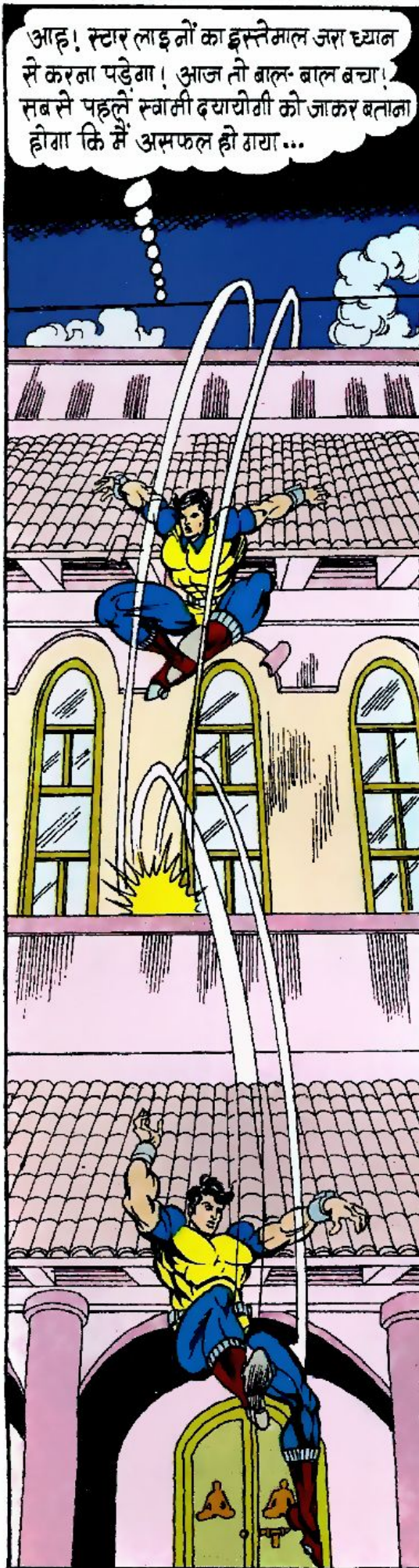
यह निशाचर आखिर कौन है? और अगर है तो इतनी शताब्दियों के बाद फिर कैसे जी उठा? और अगर वह काले मोती की मदद से कुछ शैतानों को जीवित करना चाहता है तो उसको कैसे रोका जा सकता है? इस वक्त कहां पर है निशाचर?
ध्रुव को सवालों का जवाब मिलने में अभी थोड़ा और वक्त लगना था—
क्योंकि निशाचर ने अभी तो सिर्फ शुरुआत ही की थी—
हा हा हा! काला मोती! कितना आसान था इसे पाना! पहले तो इस तक पहुंचना भी असंभव था! पर एक तो इतनी शताब्दियों के बाद इस पर लगा सत्य कवच क्षीण हो गया था, और दूसरे इस कलियुग में मायायोगी जैसे सिद्ध तो होंगे ही नहीं, जो मेरे इस शैतान को रोक सकते!
खैर! यह मुश्किल काम तो आसानी से हो गया! अब आसान काम को किया जाए! सीपी को हासिल करने का काम! उसको भी मैं स्वयं नहीं निकाल सकता! और अब मेरे पास खुद इतनी कम दुष्टता बची है कि मैं दुष्टता का इस्तेमाल करके किसी और प्राणी को इस काम के लिए पैदा नहीं कर सकता। किसी ऐसे को ढूंढ़ना होगा, जिसमें पहले से ही भारी दुष्टता मौजूद हो! वह हिंसक डोगा किसका नाम ले रहा था? हां, किसी छोटे हाजी का! जिसके आदमी इतने दुष्ट हों कि किसी को दफन तक न करने दें, वह खुद कितना दुष्ट होगा! उसे ही ढूंढना चाहिए!
और जिसमें इतनी दुष्टता हो, उसको ढूंढना बहुत आसान है!
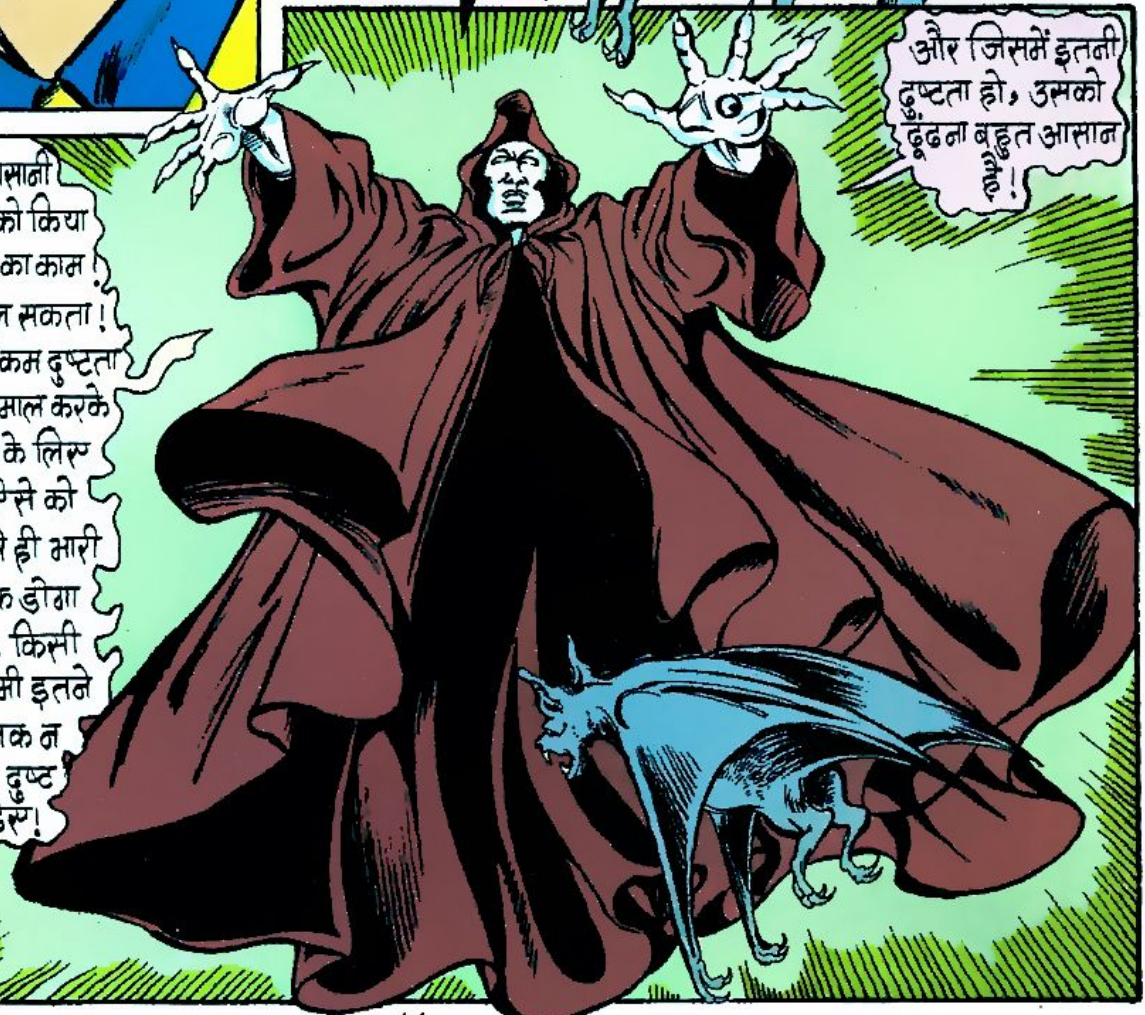
छोटा हाजी इस वक्त मुसीबत में था-

बॉस, अभी फोन आया था। पंगा हो गया है। डेविड को दफनाने वालों को डराने गए हमारे दोनों आदमियों से डोगा ने आपका नाम और आपके छिपने की जगह उगलवा ली है! अब वह किसी भी वक्त यहां पर पहुंचता होगा।

पुलिस सायरन की आवाज आ रही है!

लगता है कमीने ने इंफार्मेशन पुलिस को पास कर दी है!...

...पर बॉस, डोगा तो हमसे खुद ही निपटना चाहता है। फिर उसने पुलिस को बीच में क्यों डाला?

उसको डर होगा कि उसके आने तक हमको खबर मिल जाएगी, और हम यहां से सरक जाएंगे। इसीलिए उसने पुलिस को इंफार्म कर दिया। थोड़ी देर में वह भी यहां पर जरूर पहुंचेगा!

छोटे हाजी! पुलिस ने तुमको चारों तरफ से घेर लिया है। भागने की कोशिश बेकार है! अब हमारे पास तुम्हारे खिलाफ केस भी है और सुबूत भी! हाथ ऊपर उठाकर बाहर आ जाओ!

हम दस तक गिनेंगे! फिर गोली चला देंगे!

अब हम क्या करें, बॉस! हम चारों तरफ से घिर चुके हैं। हम भाग नहीं सकते!
अगर हम भाग नहीं सकते तो ये पुलिसिए भी भाग नहीं सकते! 'रॉकेट प्रोपेल्ड ग्रेनेड' मारो इन पर!
अगले ही कुछ पलों बाद पुलिस का घेरा टूटने लगा–
बड़ाम
लेकिन पुलिस भी पूरी तैयारी के साथ आई थी–
इनको चेतावनी दे दी गई थी। पर ये हमको वही पुरानी सेल्फ लोडिंग रायफल वाली पुलिस फोर्स समझ रहे हैं! इन के हमले का जवाब दो!
और कमरे की दीवार में एक बड़ा छेद हो गया–
रॉकेट लॉन्चर निशाने पर तन गया-
दगा–
ओह! रॉकेट लॉन्चर भी लाए हैं! हमने ही इन पर हमला करके इनको अपनी जगह का रास्ता दिखा दिया है!
अब हम क्या करें बॉस?

करना क्या है ? मुकाबला करना बुद्धिमानी नहीं है! भागने की कोशिश करते हैं! पुलिस का घेरा एक तरफ से तोड़ते हैं, और वहीं से भाग लेंगे! ठीक ?
मारे जाओगे! सब के सब!
कौन?

कौन... कौन हो तुम? यहां तक कैसे आ गए?
बेकार के सवाल छोड़ो! मैं तुम सबको यहां से निकाल सकता हूं! सुरक्षित! पर बदले में तुम लोगों को अपनी आत्माएं मुझे देनी होंगी!
आत्माएं? यानी... तुम हमें मार डालना चाहते हो?

नहीं! इसका सिर्फ इतना सा मतलब है कि अब से मैं यानी निशाचर तुम्हारा भगवान होगा! तुम सब मेरी पूजा करोगे! और मुझे शक्ति दोगे!
पता नहीं क्या बोल रहे हो? पर अगर तुम हमको पुलिस घेरे से बाहर निकाल लो तो हम तुमको ऐसे ही भगवान मान लेंगे!
निकाल तो मैं तुम लोगों को ऐसे ही दूंगा! पर ऐसे तुम मेरी शक्तियां नहीं देख पाओगे!

शक्तियां देखोगे, तभी तो भगवान मानोगे!
देखो! पापों के शहंशाह निशाचर की शक्ति!

निशाचर की उंगलियों से निकलती आग की लहरें पुलिस घेरे की तरफ लपकीं–
और वाहनों तथा इन्सानों को नष्ट होने में सिर्फ कुछ ही पलों का समय लगा–
कमाल है! आप तो सचमुच हमारे भगवान हैं!
बताइए! हमको क्या करना है? हम हर काम के लिए तैयार हैं!
अभी नहीं! अभी सुबह हो गई है! अभी मेरा काम नहीं हो पाएगा!...

...खैर! काम तो आज सूरज ढलते भी हो जास्गा! फिलहाल तो मैं तुम लोगों को यहां से निकाल ले चलता हूं। क्योंकि थोड़ी ही देर में तुम लोगों को फिर से घेर लिया जास्गा!
आओ! मेरे लबादे में आजाओ!
सम्मोहित से छोटे हाजी के आदमी लबादे के अंधेरे में प्रविष्ट होने लगे-
और उसी अंधेरे में लुप्त होने लगे-
थोड़ी ही देर बाद वहां न तो छोटे हाजी और उसके आदमियों का कुछ पता था और न ही निशाचर का कोई निशान था-
जब तक डोगा वहां पहुंचता, तब तक पुलिस वालों की लाशें भी हड्डियों के ढांचे में बदल चुकी थी-
ओह! यह क्या? छोटे हाजी के पास ऐसा कौन सा हथियार है?
जिससे उसने पुलिस वालों का यह हाल कर दिया?
जाओ दोस्तो, पूरी इमारत के गोदामों का चप्पा-चप्पा छान डालो! ढूंढो, उस हलकट को!
पांच मिनट बीतने के पहले ही पूरी इमारत का चप्पा-चप्पा छाना जा चुका था-
कहीं नहीं मिला? ओह! यानी डोगा को उसकी बोटियां नुचवाने का आनन्द नहीं मिलेगा! खैर, यह दावत मुझ पर उधार रही दोस्तों! आज नहीं, फिर सही!
अब यहां से फटाफट निकल लो! वरना इल्जाम डोगा पर ही आस्गा!
चलो!

इस रात ने कई मांगों का सिन्दूर नोंचकर सुबह के सूरज पर पोत दिया था-

लेकिन यह लाल सूरज मुंबई के माथे पर दहकती बिन्दी की तरह चिपककर कई जलते मुहाने छोड़ जाने वाला था-
और फिर वहां पर मुझे पुलिस वालों की जली लाशें मिलीं! मेरे पहुंचने तक भी लाशें हल्की-हल्की सुलग रही थीं। ऐसी आग तो मैंने कभी नहीं देखी! ठंडी आग थी वह! पुलिस वाले तो झुलस गए थे, पर उसे छूते ही मेरी आत्मा तक ठंड से कांप उठी। पर छोटा हाजी वहां नहीं मिला!
न तो मुझे निशाचर के बारे में कुछ ज्यादा पता चला, और न ही छोटे हाजी के बारे में!
MORPHY RICHARDS
उसका वक्त अभी नहीं आया होगा, सूरज!
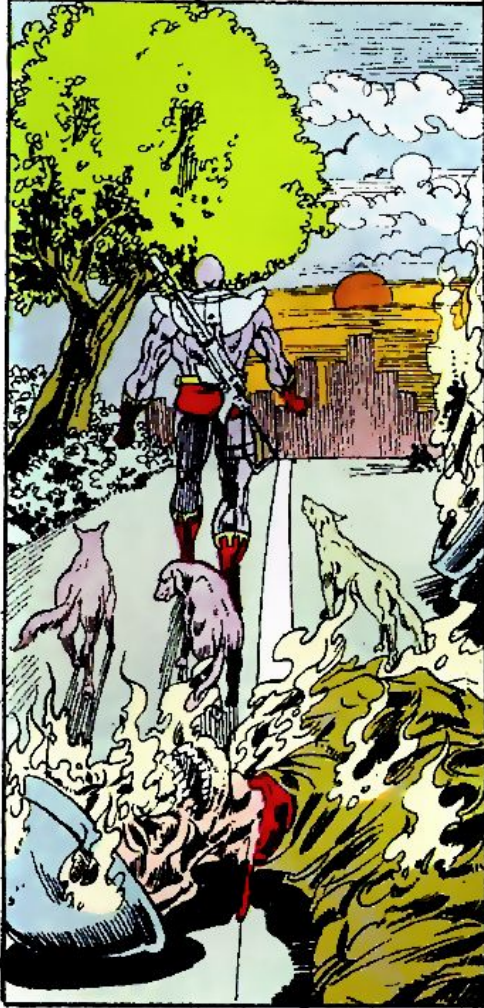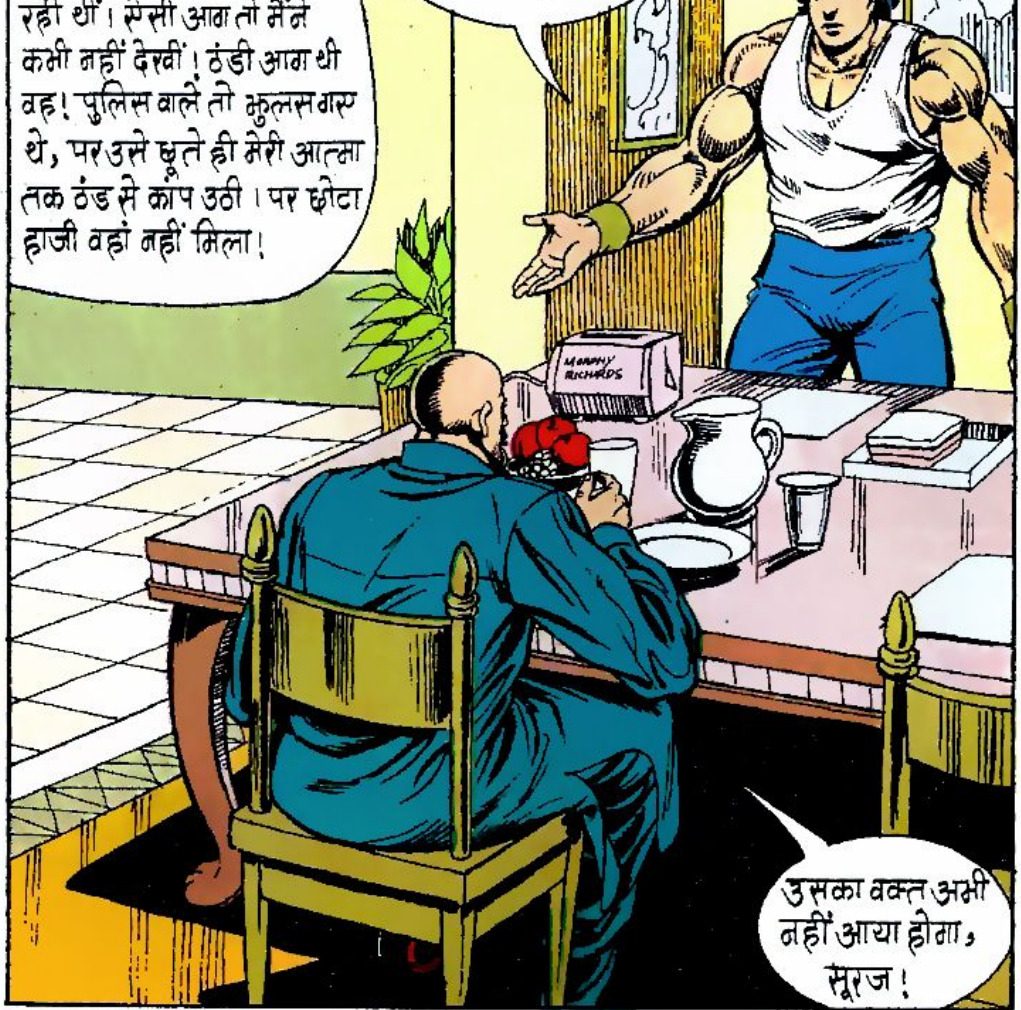
जब उसका वक्त आएगा तो वक्त अपने-आप उसको तुम्हारे सामने खड़ा कर... अरे!...
... जिम से ये आवाजें कैसी आ रही हैं?
तड़ कड़ाक

जिम में प्रवेश करते ही दोनों चकित रह गए-
अरे! अरे! ये क्या कर रहे हो? कौन हो तुम लोग?...
... जिम में तोड़-फोड़ क्यों कर रहे हो?
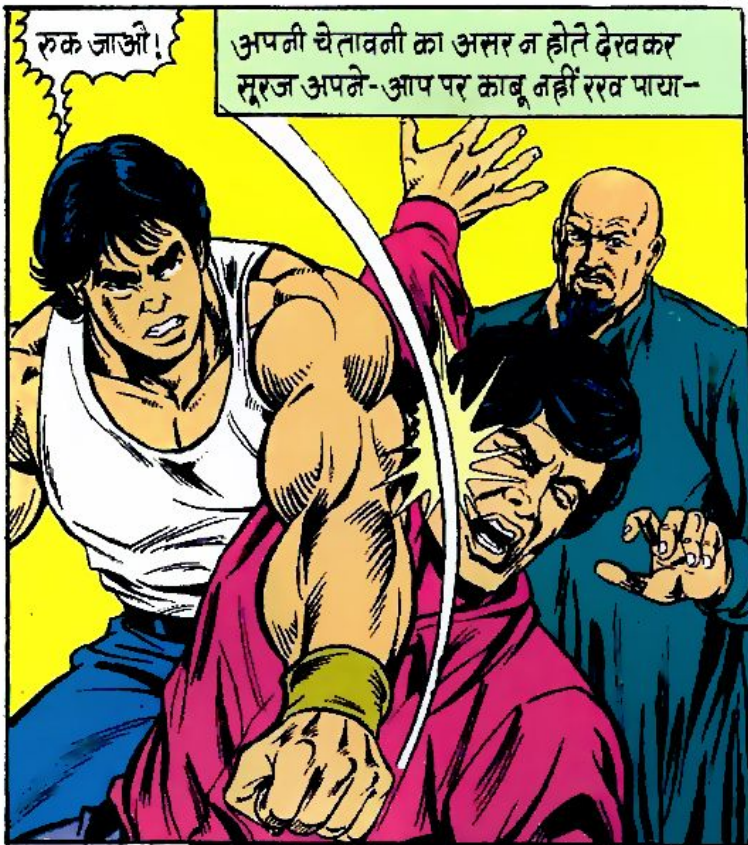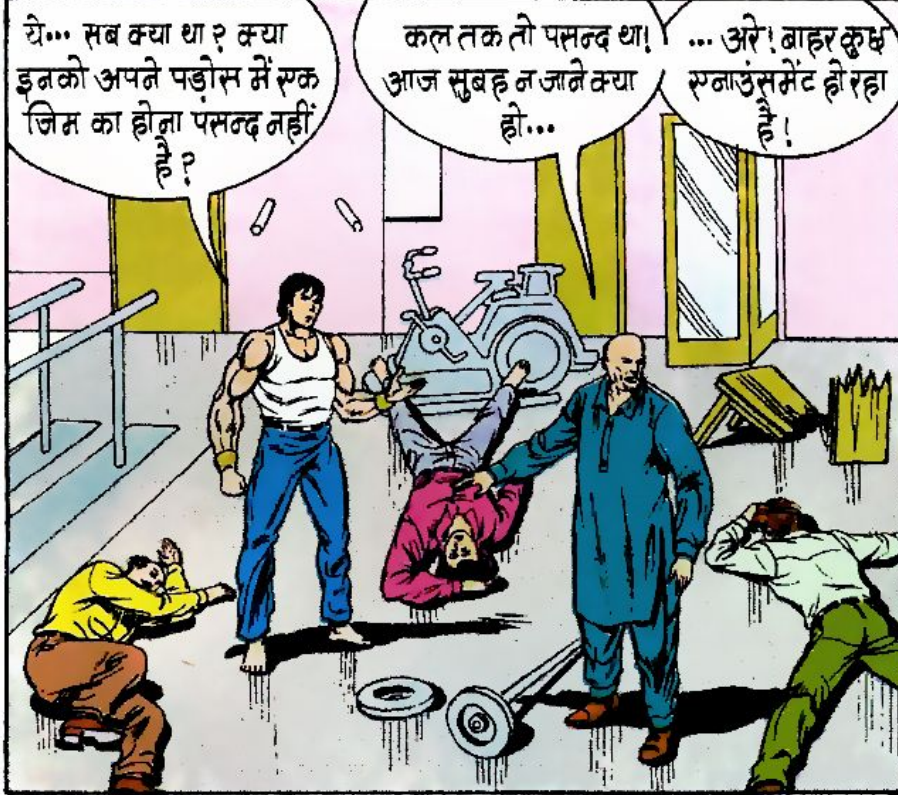
रुक जाओ!
अपनी चेतावनी का असर न होते देखकर सूरज अपने-आप पर काबू नहीं रख पाया-

लेकिन अदरक चाचा का दिमाग हमेशा की ही तरह ठंडा था-
रुक जाओ, सूरज! क्या तुम अपने पड़ोसियों को ही बताना चाहते हो कि तुम डोगा हो!
पड़ोसी?

अरे हां! इन लोगों को ऐसी हरकत करते देखकर तो मैं इनको पहचान ही नहीं पाया। यह तो शर्मा जी हैं! विनीत है, और सूबेदार सिंह। इनको एकाएक जिम में तोड़-फोड़ करने की क्या सूझी?
ये तो यही बता सकते हैं?
बताना क्या है? हमारा तोड़-फोड़ करने का मन हुआ तो हम तोड़-फोड़ करने लगे! पहले अपना घर तोड़ा, बीबी-बच्चों को मारा, फिर बाहर निकल पड़े!...
...अब हम तुमको तोड़ेंगे! टक!

तब तो मुझे खेद पूर्वक आपका प्रस्ताव वापस करना पड़ेगा!...
...आप लोगों के जबड़ों पर!

ओऽऽऽ एकाएक यह क्या हो गया है!

आओ! टी॰वी॰ पर देखते हैं। न्यूज में जरूर कुछ आ रहा होगा! आओ!
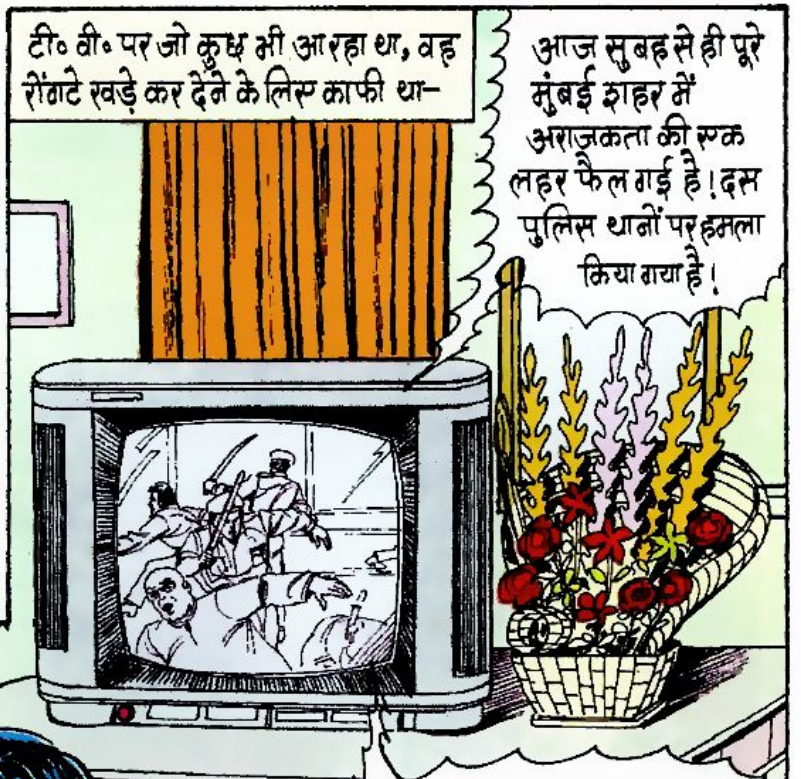
टी॰ वी॰ पर जो कुछ भी आ रहा था, वह रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी था—

आज सुबह से ही पूरे मुंबई शहर में अराजकता की एक लहर फैल गई है! दस पुलिस थानों पर हमला किया गया है!

पचपन डिपार्टमेंटल स्टोर लूटे गए हैं, एवं पचास लोग जान से हाथ धो बैठे हैं! ये सारी हत्याएं बिना कारण की गई हैं। हत्यारे भी पेशेवर अपराधी न होकर आम नागरिक हैं! कुछ स्थलों से पुलिस द्वारा भी आपराधिक कार्यों की खबर आई है...
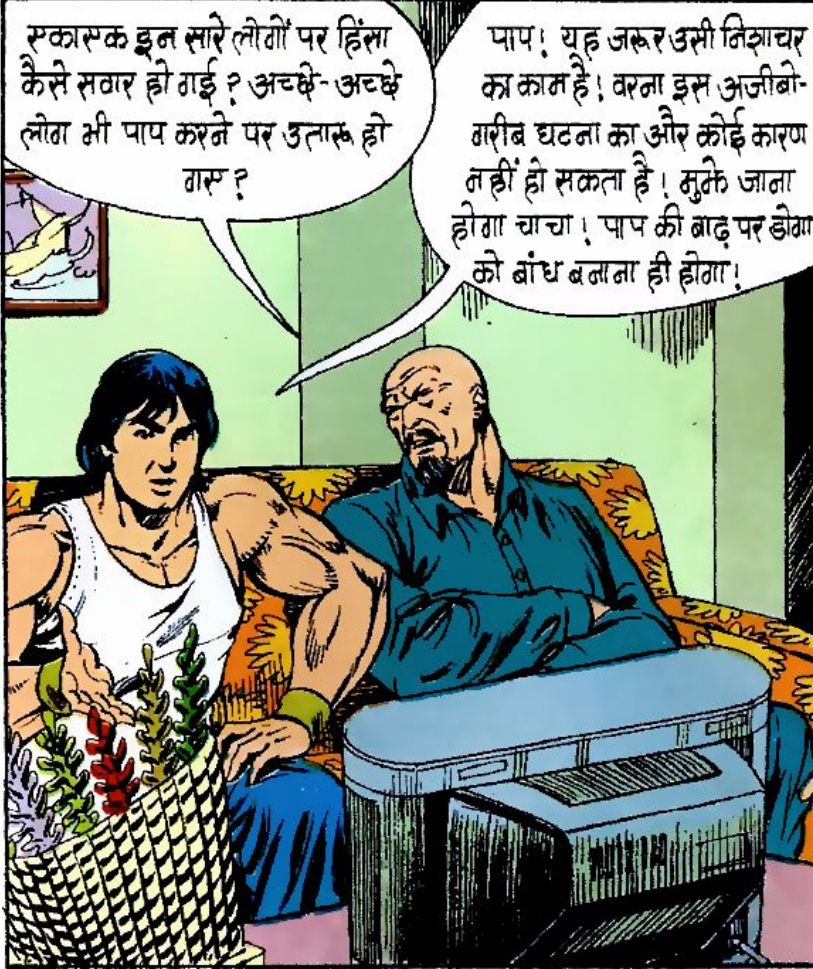
एकाएक इन सारे लोगों पर हिंसा कैसे सवार हो गई ? अच्छे-अच्छे लोग भी पाप करने पर उतारू हो गए ?
पाप ! यह जरूर उसी निशाचर का काम है ! वरना इस अजीबो-गरीब घटना का और कोई कारण नहीं हो सकता है ! मुझे जाना होगा चाचा ! पाप की बाढ़ पर डोगा को बांध बनाना ही होगा !
नहीं, सूरज ! पूरे शहर में हो रहे पागलपन को तुम अकेले नहीं रोक सकते ! तुम खुद अपनी जान खतरे में डाल लोगे ! सोचो, कोई तरीका निकालो !
आप ठीक कह रहे हैं अदरक चाचा ! मुझे निशाचर को ढूंढना होगा। और इसके लिए मुझे अपने दोस्तों की मदद लेनी होगी !
डोगा की 'डॉग व्हिसल गूंजी-
और कुछ ही मिनटों बाद, सूरज के निर्देशों पर, डोगा के साथी, पूरे शहर में फैल रहे थे-
डोगा की खातिर निशाचर को ढूंढ निकालने के लिए-
अब डोगा भी जाएगा, चाचा ! सारी नहीं तो कुछ घटनाओं को तो मैं रोक ही सकता हूं न !
मुंबई में फैले इस उपद्रव की सूचना, देश के कोने-कोने में पहुंच रही थी-
पापा, इस घटना का संबंध, निशाचर और काले मोती से जरूर है ! मुझे तुरन्त मुंबई जाना होगा।
निशाचर ! वही, जिसकी बात तुम कल रात में कर रहे थे !
हां, पापा ! दयायोगी अभी भी बेहोश है ! वरना मैं उनकी ही मदद लेता !
पर वे न जाने कब होश में आएंगे, और इस दौरान निशाचर न जाने क्या कर डालेगा ! मुझे तुरन्त जाना होगा !
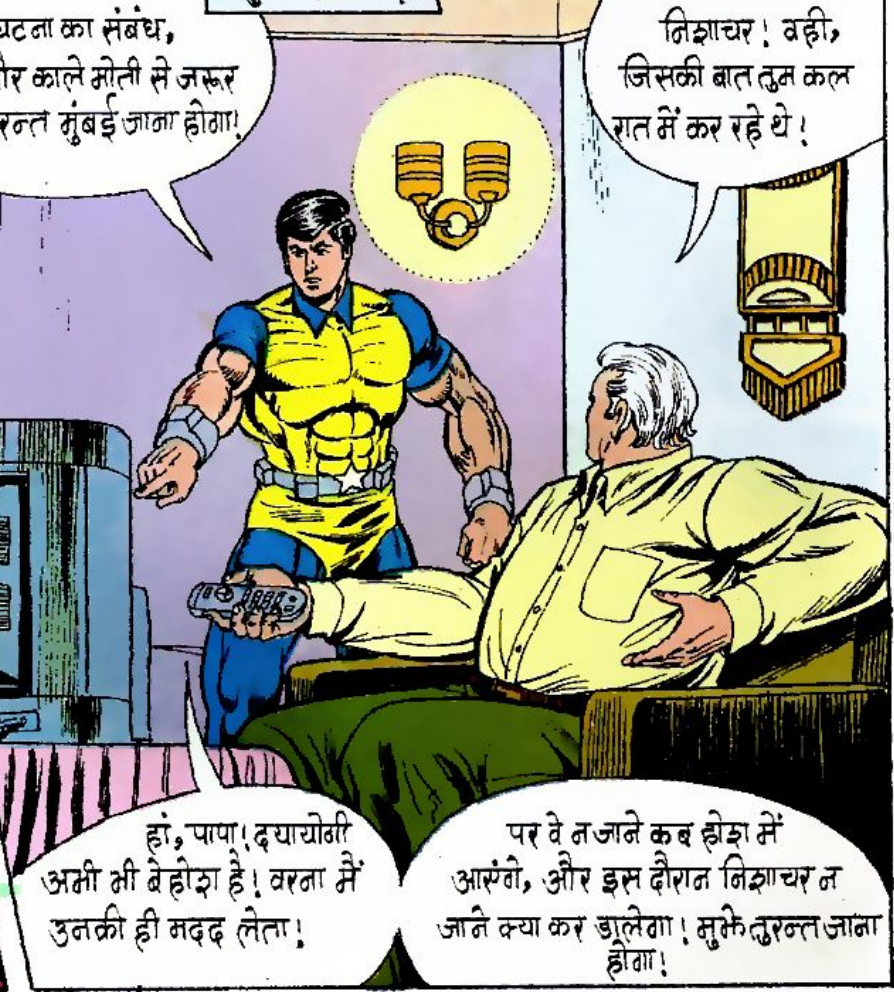
पर अगर यह काम निशाचर का न हुआ तो ?
फिर भी इस सूत्र को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता, पापा! छान-बीन करने तो जाना ही पड़ेगा।
ठीक है ध्रुव! जाओ!
भगवान तुम्हारी रक्षा करें!

ध्रुव, 'स्टार हैलीकॉप्टर' में मुंबई की तरफ रवाना हो गया–
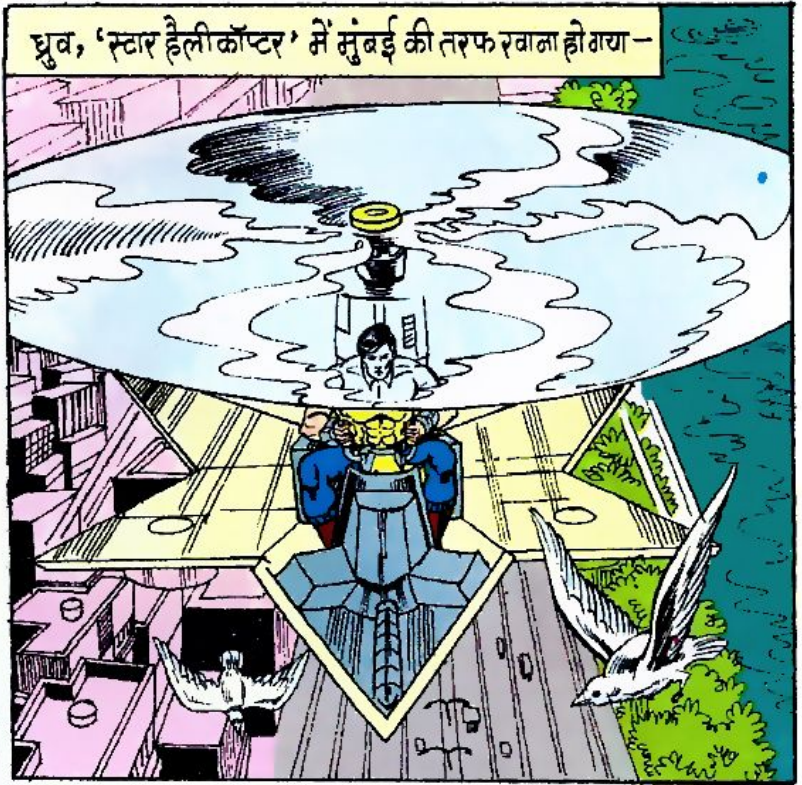
मुंबई में– पागलपन का नाच बदस्तूर जारी था। लेकिन जैसे-जैसे शाम ढलती जा रही थी, वैसे-वैसे यह पागलपन खत्म हो रहा था। क्योंकि निशाचर के लिए यह वक्त पाप सीखने का था, फैलाने का नहीं–
ठीक है! काम शुरू कर दो!
ड्रिलिंग मशीन, उस विशाल चट्टान में छेद बनाने लगी–
घर्र्र्र्र्र

बस! सूरज डूब रहा है! अब मेरा काम शुरू होता है! तुम्हारी तैयारी तो पूरी है न ?
हां, मालिक! ड्रिलिंग मशीन और विस्फोटक चाहिए थे, वे आ चुके हैं!
EXPLOSIVES

और फिर उन गहरे छेदों में विस्फोटक भरे जाने लगे–

और फिर उस चट्टान को तोड़ने की तैयारी पूरी हो गई। पलीते सुलगा दिए गए–
एक भीषण धमाके के साथ, चट्टान हजारों टुकड़ों में विभक्त हो गई–
धड़ाममममम
और अगले ही पल– एक सन्देश हवा में तैरने लगा–
भौं वाऊऽऽगुर्रर्र
जो एक मुंह से दूसरे मुंह–
आऊऽऽऽ
होता हुआ–
गर्रर्र वाऊऊ
जा पहुंचा उस तक, जिसके लिए यह सन्देश भेजा गया था–
ओह! मैंने कुत्तों को निशाचर का थोड़ा सा हुलिया बताया था... और इन्होंने शायद निशाचर को देख लिया है!
भौं भौं वाऊ ई कुंई ई
वैसे भी कुत्तों में बुराई को दूर से ही पहचान लेने की जबरदस्त क्षमता होती है!
और वह स्थान, जहां पर निशाचर को देखा गया है, यहां से काफी पास है!
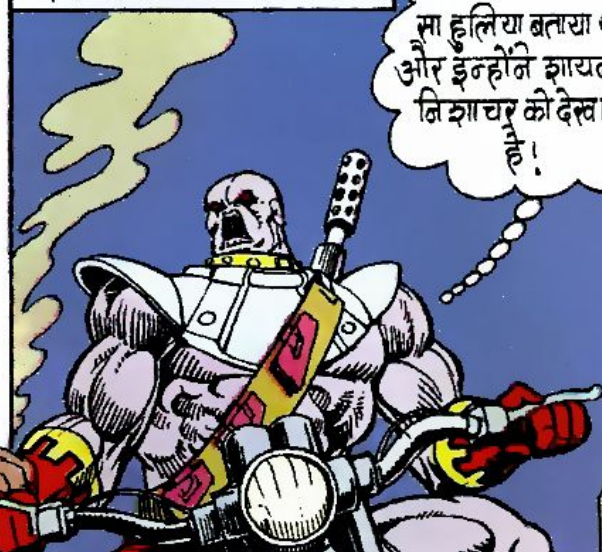
तुलसी लेक की पहाड़ियों में यह घटनाक्रम घट रहा था-
आहा! टूट गई चट्टान! खुल गया उस गुफा का दरवाज़ा, जिसमें सीपी रखी है! अब एक आदमी अन्दर जाओ, और गुफा के बीचों-बीच उस पत्थर पर रखी सीपी को उठा लाओ!
गुफा के अन्दर जो जाएगा...


...वह जिन्दा बाहर नहीं आएगा!
निशाचर जो चाहता है वह उसे कभी नहीं मिलेगा!
डो---डोगा!
तू फिर आ गया! लेकिन तू कुछ कर नहीं पाएगा! क्योंकि तू इनको सिर्फ हिंसा से रोक सकता है! और हिंसा हमें और शक्तिशाली बनाती है...


...हमें यानी हम सबको! क्योंकि इनकी आत्माएं लेकर मैंने इनको भी अपने जैसा ही बना दिया है!
गलत सोच रहे हो निशाचर! इस बार मैं हमला नहीं करूंगा! सिर्फ बचाव करूंगा!
और बचाव में कोई हिंसा नहीं होती है!
ओफ! मैं चाहूं तो इसे अभी खत्म कर दूं! पर मैं नहीं चाहता कि इसकी सत्य की शक्ति खत्म करने के चक्कर में मेरी बुराई का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो जाए!


खैर! ये मुर्दे कब काम आएंगे!
जाओ मूर्खों! मुंह क्या देख रहे हो? हटा दो इसे इस रास्ते से... और जाकर ले आओ सीपी!

डोगा से निपटना बहुत जरूरी था। क्योंकि डोगा का शरीर, गुफा के द्वार पर अंगद के पैर की तरह जम गया था–
गोलियों की बौछार तड़तड़ाकर डोगा की तरफ लपकीं–
डोगा, बौछार के रास्ते से हटा–
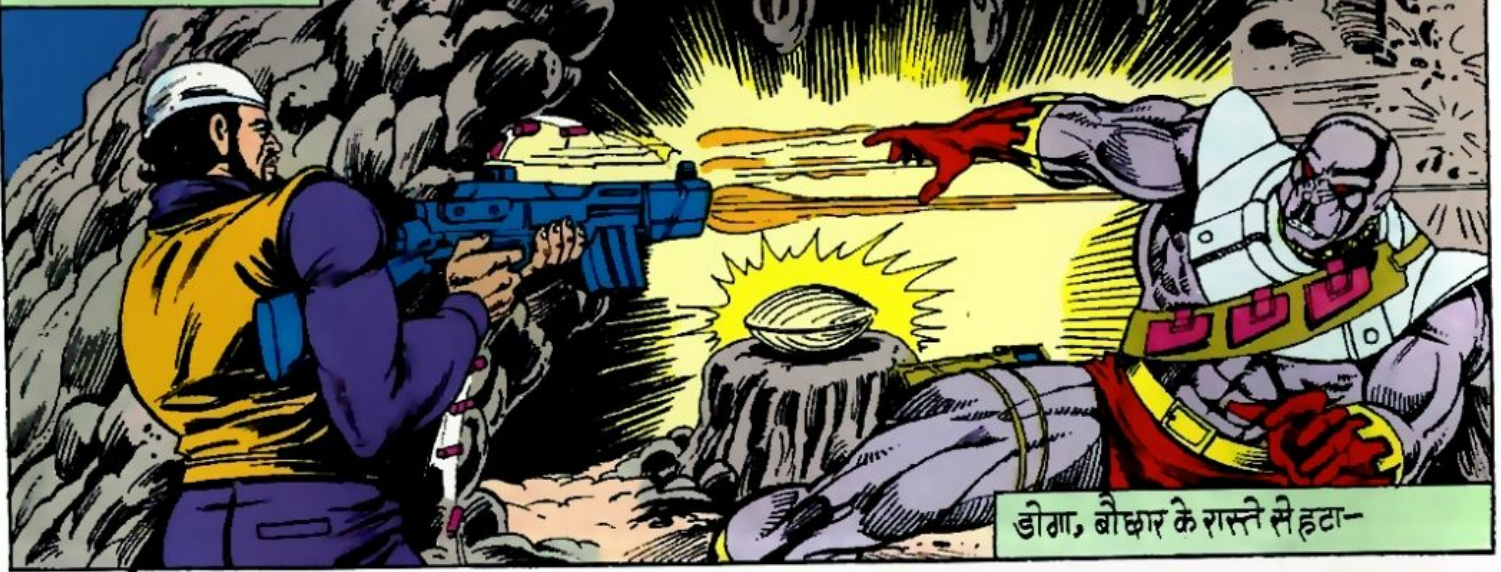
और निशाचर चीख उठा–
गोलियां मत चलाओ मूर्ख! कोई गोली सीपी पर भी लग सकती है। और अगर सीपी टूट गई, तो मैं तुम सबकी रीढ़ की हड्डियां तोड़ दूंगा। गोली मत चलाओ!

अब सिर्फ शारीरिक शक्ति का सहारा ही लिया जा सकता था–
और डोगा से इस क्षेत्र में पार पाना असंभव नहीं तो, मुश्किल अवश्य था–
पहला गुंडा, डोगा की तरफ लपका–
उसका घूंसा लहराया–

और डोगा थोड़ा सा दाईं तरफ सरक गया। सिर्फ इतना कि घूंसा उसके चेहरे पर न लगकर, उसके बख्तर पर लगे–
ठनन
ई या या या ऊऊ
गुंडा, दर्द से कराह उठा, उसका सिर अपने-आप हवा में झटकने लगा–

और डोगा ने एक बार फिर अपना बख्तर झटकते सिर के रास्ते में रख दिया–
धाड़

ओह! इसने तो इस कीड़े को बेहोश भी कर दिया, और मुझे हिंसा का एक कतरा भी प्राप्त नहीं हुआ! खैर, अगर ये दोनों भी इसे गुफा के द्वार से नहीं हटा पाए तो फिर मेरी बुराई खत्म हो तो हो, इसे तो मैं खत्म करके ही जाऊंगा!
खैर, देखते हैं कि यह दूसरा जोकर क्या कर पाता है?
ड्रिल के पहले वार से तो डोगा बच गया-

पर दूसरे वार से बचना मुश्किल था-
क्योंकि इस बार ड्रिल बहुत धीरे- धीरे डोगा की तरफ बढ़ी थी! और झुककर या हटकर वार बचा पाना संभव नहीं था-
बचकर दिखा डोगा! बच! मार मुझे घूंसा! लात मार! गोली मार दे! या मर!
दिल तो मेरा भी यही कर रहा है कमीने!
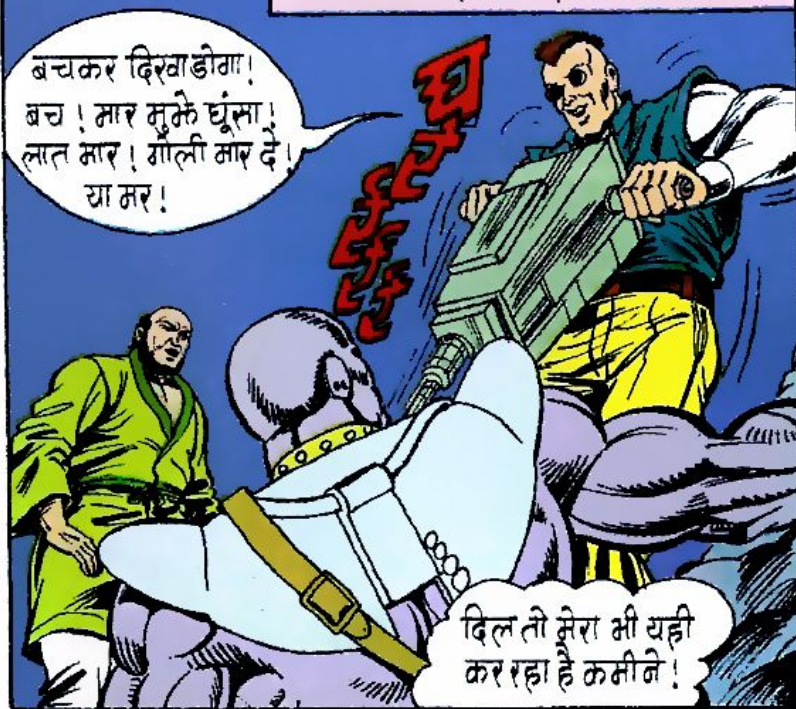
लेकिन ऐसा कोई भी कार्य हिंसा की श्रेणी में आएगा, और इससे तुम्हारी ताकत ही बढ़ेगी!...
... मुझे कोई दूसरा रास्ता जल्दी ही निकालना पड़ेगा। क्योंकि फिलहाल मेरे बख्तर पर रुकी ड्रिल कुछ ही सेकंडों में उसे चीरकर मेरे फेफड़ों का मलीदा बना देगी!
मैं ऐसा क्या कर सकता हूं जो हिंसक भी न हो, और इसे कम से कम बेहोश भी कर दे!...
... हां! एक काम किया जा सकता है!

अगले ही पल डोगा के हाथ में उसका चाकू चमक उठा-
और निशाचर खुश हो गया-
आहा! मार, इसे चाकू मार! इस काम से मुझे जो हिंसा मिलेगी, उसे मैं डोगा की ही खत्म करने में खर्च करूंगा!

पर डोगा का इरादा कुछ और ही था! चाकू बिजली के तारों को काटता हुआ, अन्दर जा घुसा-

तारें कट गईं और करंट पूरे ड्रिलर को शॉट सर्किट करती हुई मशीन की धातुई बॉडी में फैल गई–
और असंतुलित हुई मशीन को संभालने के चक्कर में उस गुंडे का हाथ, बॉडी से छूट गया–
नतीजा वही हुआ, जो होना था–
बिजली के झटके से कांपता हुआ गुंडा, जमीन पर आ गिरा–
ओह! दो गुंडे धराशायी हो गए हैं। अब सिर्फ छोटा हाजी ही बचा है, और इसको डोगा से टकराने का खतरा मैं नहीं उठा सकता!
क्योंकि अगर ये भी पिट गया तो गुफा में घुसकर सीपी कौन उठाकर लाएगा! मैं तो गुफा में घुस नहीं सकता...
...मुझे ही कुछ करना होगा! डोगा को गुफा के मुंह से हटाना होगा...
...मुझे डोगा से ही सीख लेनी होगी! अगर सीधे वार नहीं कर सकते तो तिरछे वार करो! ऐसे!
अगले ही पल ऊपर से गिरती चट्टानों ने डोगा को नीचे दबा लिया–
अब मुंह क्या देख रहा है? इसको चट्टानें हटाकर निकलने में ज्यादा समय नहीं लगेगा! अन्दर जा, और सीपी लेकर आ! जा!
छोटे हाजी के गुफा के अन्दर जाकर ...
... सीपी उठाने...
... और बाहर आने तक डोगा आजाद हो चुका था–
नहीं छोटे हाजी! मैं तुमको भागने नहीं दूंगा!
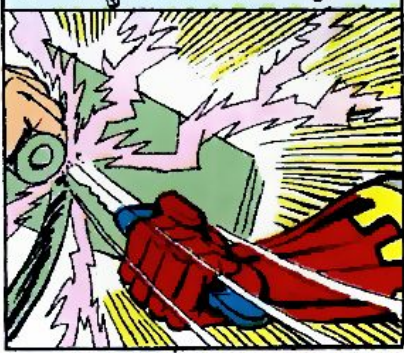
अब ये भागे या मरे! मेरा काम तो हो गया। ही ही ही। हा हा हा!
नहीं, निशाचर! मैं तुझे भी नहीं जाने दूंगा! तू क्या कर रहा है, और क्यों कर रहा है, यह जाने बगैर मैं तेरा पीछा नहीं छोड़ूंगा। कभी नहीं छोड़ूंगा!
धड़ाक
मुझे तेरी बात पर पूरा भरोसा है ढोंगा!
और इसके लिए मुझे हिंसा भी करनी पड़ी तो करूंगा!
इसलिए मैं ऐसा इन्तजाम करके जा रहा हूं कि तू मेरे पीछे न आ सके। अब मेरा काम हो गया है तो मुझे इस बात की फिक्र नहीं रही कि मेरी बुराई क्षीण होगी या नहीं!
ले! निपट ले अपने दुश्मन छोटे हाजी से! मैं तो चला! इस दुनिया से भगवान को हटाने की तैयारी करने!
ओह! छोटा हाजी तो नर्क से आया शैतान लग रहा है। इसको बगैर हिंसा के कैसे खत्म करूंगा! ऐसी कोशिश में या तो मैं खुद खत्म हो जाऊंगा...
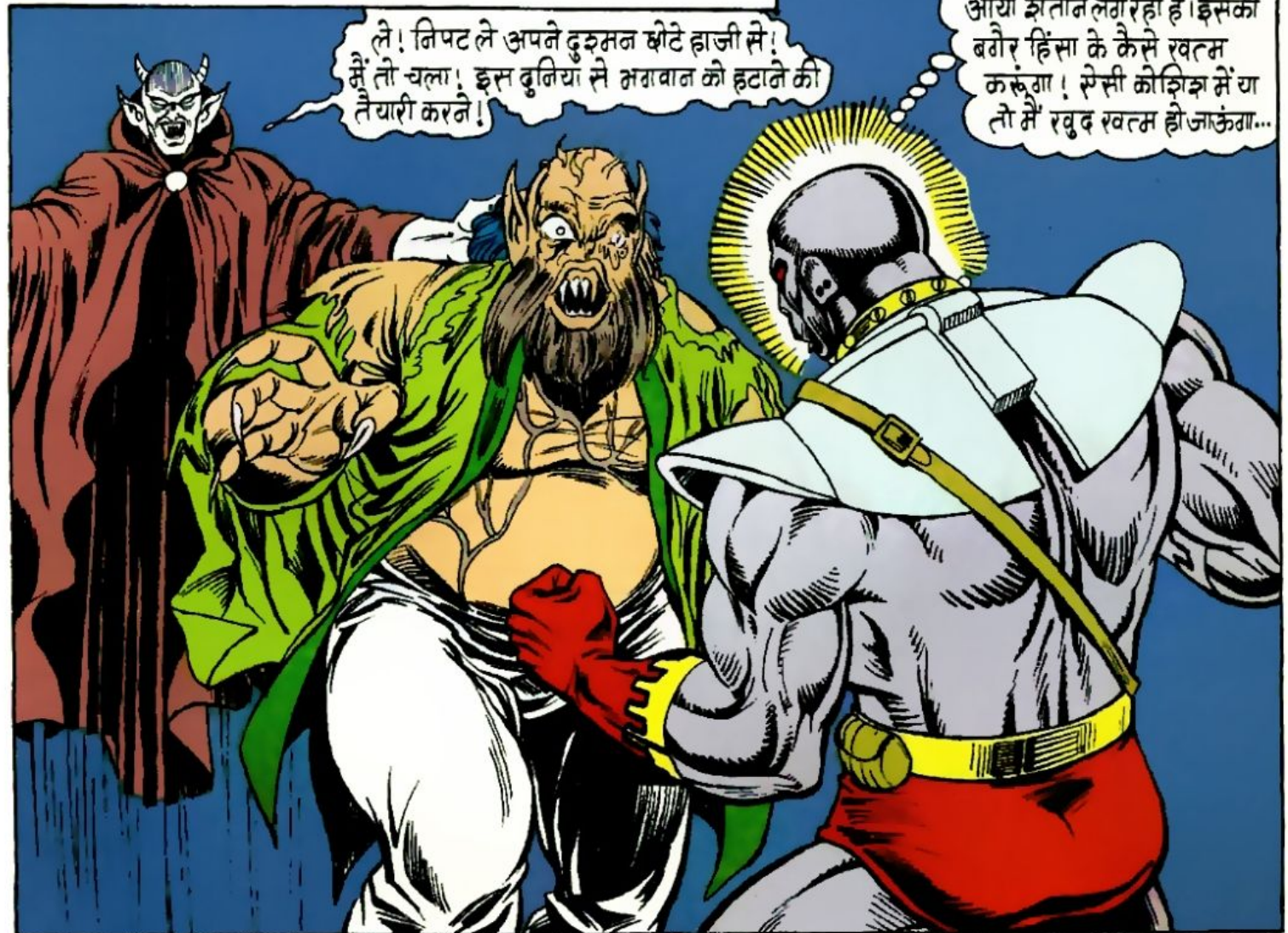
... नहीं देगा मुझे! आक!

डोगा का दम तेजी से घुटने लगा—

इतनी देर तक लगातार लड़ता डोगा भी थोड़ा थक गया था। अपनी गर्दन छुड़ाने लायक शक्ति वह बटोर नहीं पा रहा था—
उसे मदद चाहिए थी—
और मदद उसके सामने खड़ी थी—
मुंबई का चक्कर काट-काटकर मैं तो क्या, मेरा हैलीकॉप्टर तक परेशान हो गया था। मैं निशाचर जैसी कोई चीज ढूंढ रहा था, और यह बन्दा किसी नर्क के प्राणी जैसे हुलिए पर सेंट-परसेंट खरा उतरता है!...
...लेकिन यह कुत्ते जैसे हुलिए वाला कौन है?
तड़ऽऽड़.
डोगा भी सोच में पड़ गया था—
आसमान का सीना चीरकर यह मेरी मदद को कौन आ गया? इसकी शक्ल भी देखी-देखी लग रही है। पर कहां? शायद अखबार में?
तभी डोगा की सोच को एक झटका लगा—
फ्रूऊ
बचो दोस्त! ये ठण्डी आग तुमको जलाकर खाक कर देगी। मैं नहीं जानता था कि निशाचर ने इसके शरीर में यह शक्ति भी भर दी है।
निशाचर! यानी यह भी निशाचर द्वारा बनाया गया कोई प्राणी है!...
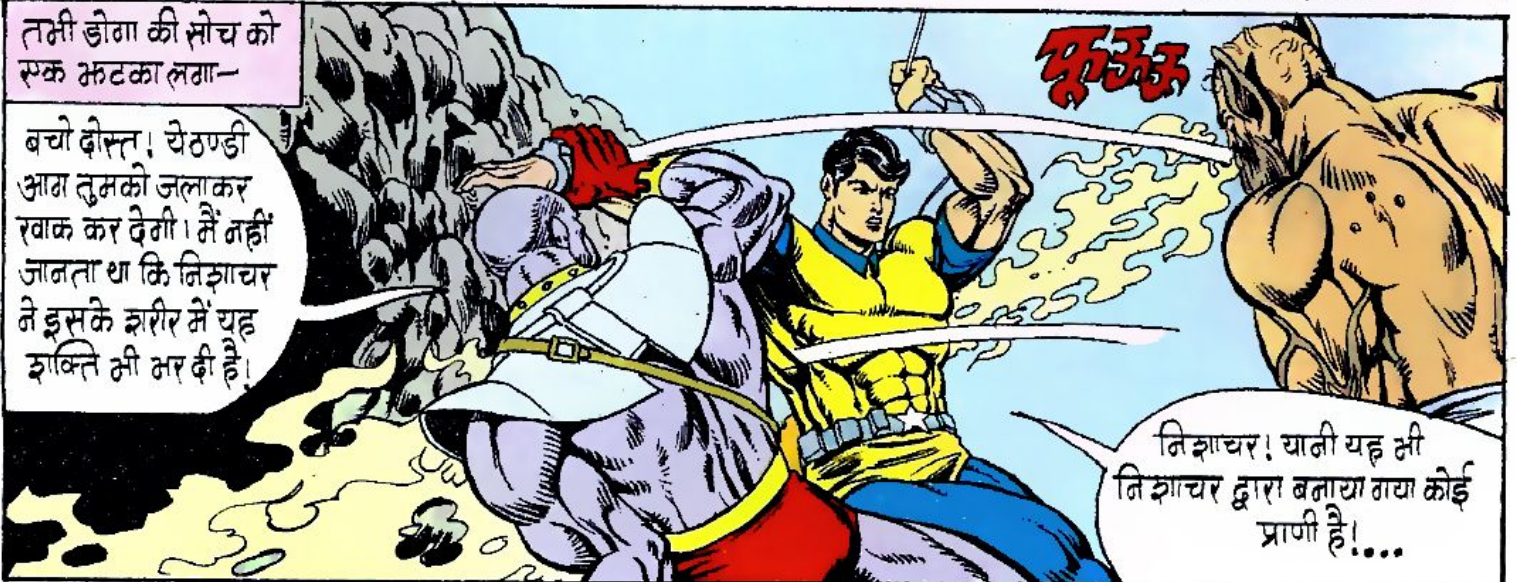
... और अगर इसके अन्दर भी निशाचर की ही शक्तियों का अंश है, तो यह भी रात का प्राणी है। यानी इसे दिन की तेज रोशनी से सख्त परहेज होना चाहिए। खैर, अभी पता कर लेते हैं!
ध्रुव ने 'बेल्ट पाऊच' से एक 'सिगनल फ्लेयर' निकाला—
और पूरे इलाके पर जैसे एक नया सूरज चमकने लगा—
यह रोशनी नहीं सह पा रहा है दोस्त! पर फायदा क्या है? मैंने इस पर अपनी गन की पूरी मैगजीन खाली कर दी! पर ये उसको जलजीरे की तरह पचा गया! इस पर हमला करेंगे तो किस चीज से?
सोचते हैं! इसकी एक कमजोरी तो पता चल गई है! बाकी भी पता चल ही जाएंगी! पहले मुझे यह तो बताओ कि यहां पर क्या हो रहा था?
जवाब में डोगा, ध्रुव को सारी कहानी सुनाता चला गया। सिर्फ सूरज वाला किस्सा छोड़कर—
और फिर जब मैं निशाचर की खोज में यहां पर आया तो छोटा हाजी यानी ये भी यहीं मौजूद था!
ओह! यानी तुम डोगा हो! मैंने सुना है तुम्हारे बारे में! हालांकि मैं तुम्हारे तरीकों को पसन्द नहीं करता, पर तुम्हारे काम को बहुत पसन्द करता हूं!
मैं भी तुम्हारी ही तरह एक छोटा मोटा क्राइम फाइटर हूं। राजनगर में रहता हूं। और सुपर कमांडो ध्रुव के नाम से जाना जाता हूं!
ओऽऽऽ! तभी तुम्हारी शक्ल जानी-पहचानी लग रही थी! लेकिन तुम और 'छोटे-मोटे' क्राइम फाइटर, हा हा हा!
मुझ पर बाद में हंस लेना डोगा! पहले पूरी घटना तो सुना दो!
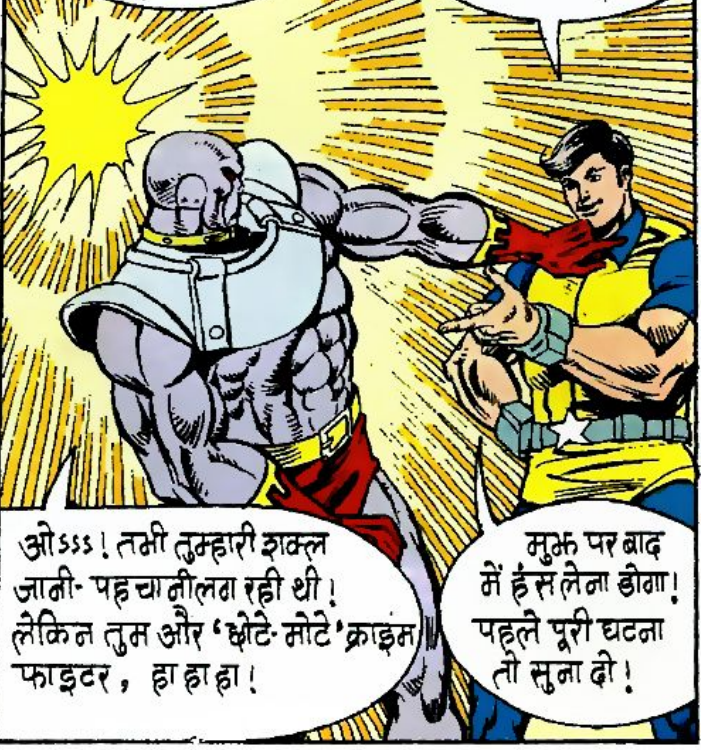
डोगा फिर से ध्रुव को घटनाक्रम बताने लगा-
फिर जैसे ही छोटा हाजी सीपी लेकर बाहर आया, मैं उस पर लपका। सीपी निशाचर के हाथ में जा गिरी। और फिर वह छोटे हाजी को यह रूप देकर यहां से भाग गया!
ओह! तब तो हमको निशाचर की तलाश पहले करनी चाहिए डोगा! लेकिन अगर इसे छोड़ गए, तो ये तबाही मचा डालेगा!...

... इसको रोकने का कोई तरीका...
...आऽऽह!
ओऽऽह! सिग्नल फ्लेयर बुझ गया है, ध्रुव! अब इसे कैसे रोकें?

कुछ समझ में नहीं आ रहा है, डोगा! जो गोलियों तक से नहीं मरा, उसको कैसे रोका जा सकता है?
यानी ये इन्सानों के तरीके से नहीं, शैतानों के तरीके से मरेगा ध्रुव! इस दिशा में कुछ सोचो! तुम्हारे दिमाग की तो मैंने बड़ी तारीफ सुनी है!

दिमाग की मशीन के सारे पुर्जे तो इस शैतान ने ढीले कर दिए हैं। सोचूं तो कैसे... ओऽऽऽ
डोगा! एक तरीका है! है!
इसको गुफा के अन्दर धकेलने की कोशिश करो!


कहानी 65 पेज से जारी

ठीक है ध्रुव ! पर गुफा के अन्दर धकेलने से क्या होगा ? बाहर से गुफा का मुंह, चट्टान से बन्द करोगे क्या ?
बताने का वक्त नहीं है, डोगा ! कुछ ही पलों बाद तुम अपने-आप ही समझ जाओगे !
छोटे हाजी का मूड स्पष्ट रूप से गुफा के अन्दर जाने का नहीं था–
लेकिन उसके पास कोई और रास्ता नहीं था–
उसका शरीर हवा में उड़ता हुआ, उसी चट्टान पर जा गिरा, जिस पर सीपी रखी हुई थी–
अरे ! यह तो गिरते ही अधमरा हो गया, ध्रुव ! ऐसा क्या है इस पत्थर में ?
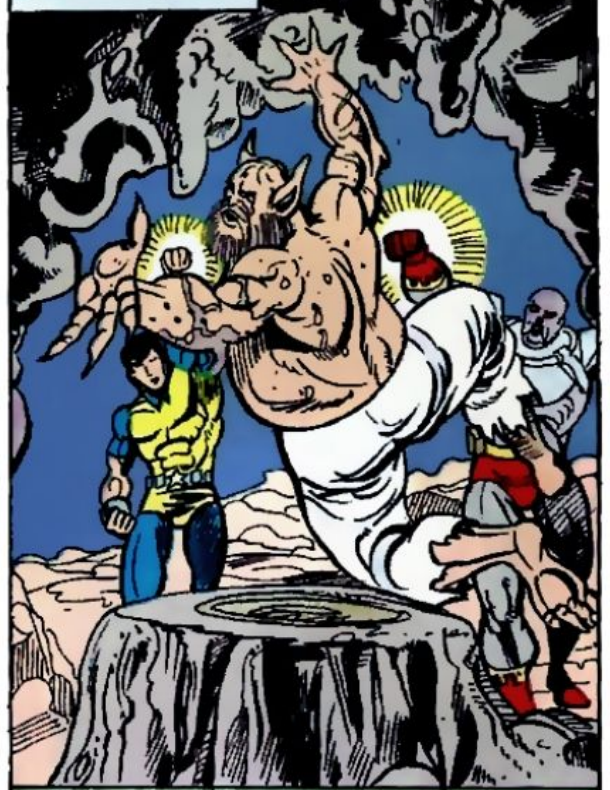
इस पत्थर पर 'सत्यकवच' चढ़ा हुआ है, डोगा! तुमको याद होगा कि निशाचर खुद सीपी उठाने नहीं गया था! छोटा हाजी गया था! और उस वक्त छोटा हाजी मानव रूप में ही था। यानी निशाचर को अपनी जान जाने का खतरा था। और वह खतरा इसी 'सत्य कवच' के कारण ही था!...
... अब जब निशाचर ने छोटे हाजी को अपनी शक्तियां देकर एक दूसरा निशाचर बना दिया था तो इस सत्यकवच से छोटे हाजी को भी खतरा होना चाहिए था। यह मर तो तुम्हारी गोलियों से ही गया था, पर निशाचर की शक्तियों ने इसे जिन्दा रखा हुआ था!
अब, जब सत्य कवच ने इसकी निशाचर शक्तियों को नष्ट कर दिया तो ये अपने असली रूप यानी मृत रूप में वापस आ गया!

तुम बार-बार 'सत्यकवच' का नाम ले रहे हो! यह सत्य-कवच क्या चीज है? और तुमको इसके बारे में कैसे पता है? तुम तो अभी-अभी यहां आए हो!
डोगा के सवाल के जवाब में ध्रुव डोगा को दयायोगी आश्रम में हुआ सारा घटनाक्रम सुनाता चला गया—

ओह! यानी निशाचर, सीपी और मोती से, नारकी और पातकी को फिर से आजाद करना चाहता है! ओफ! अगर मैं स्वयं इन सब घटनाओं को न भुगत रहा होता तो मैं इसे किसी पागल की गप्प मानता!
यह सचमुच हो रहा है डोगा! और अब हमें निशाचर को ढूंढ़ना होगा! उसे नारकी और पातकी को आजाद कराने से रोकना होगा! पर निशाचर मिलेगा कहां पर?
मैं तुमको उसके पास ले चलती हूं ध्रुव!

कौन?
लोरी! तुम यहां पर कैसे आ गई? मुझे ढूंढ़ रही थीं क्या?
नहीं ध्रुव! मैंने तो सोचा भी नहीं था कि तुम मुंबई में होगे!

★ इस विषय में जानने के लिए पढ़ें : वैम्पायर
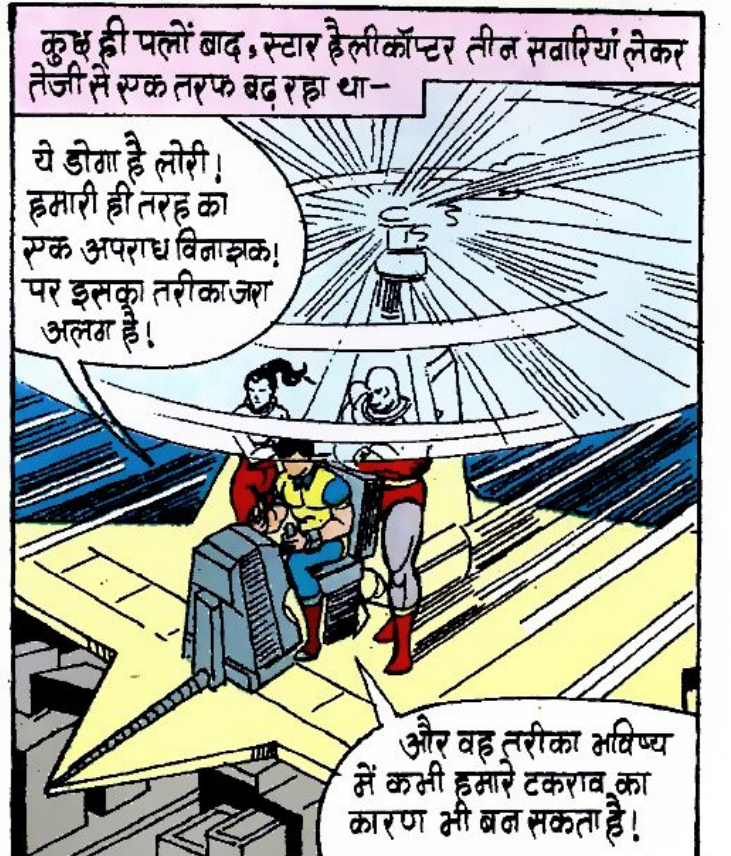
तीन तिलंगे जिस तरफ बढ़ रहे थे, वह दिशा, धरती पर बन रहे एक नए नर्क की तरफ जाती थी-

देखो, देखो! असुरलोक में बैठे मेरे पूज्य शैतानो! तुमने निशाचर को सदियों पहले जिस काम के लिए धरती पर भेजा था, उसे आज निशाचर आखिरकार पूरा करने जा रहा है। और आज उसे रोकने योग्य क्षमता रखने वाला एक भी पुण्यात्मा इस पृथ्वी पर नहीं है...

...सदियों पहले मेरे द्वारा फैलाए गए पाप ने धीरे-धीरे इस पृथ्वी पर बसने वाले मानवों को अन्दर से इतना खोखला कर दिया है कि वे मेरे सामने खड़े तक नहीं हो सकते! अब वे अगर कुछ कर सकते हैं तो सिर्फ एक काम! मेरी गुलामी!
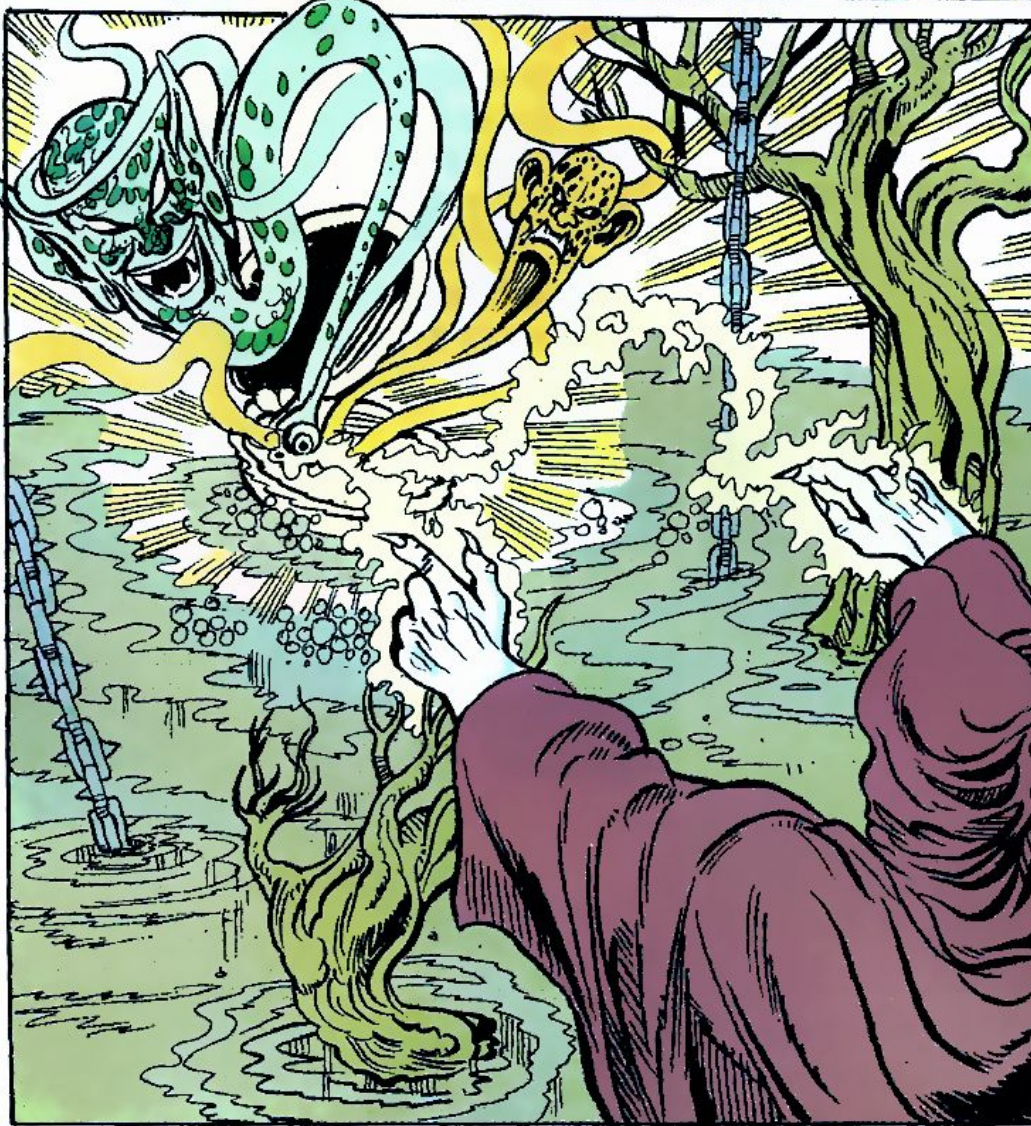
उठो नारकी! उठो पातकी! उठो असुर लोक के अत्यन्त शक्तिशाली पापी प्रेतो! उठो, और पूरी दुनिया को अपने पापों के दलदल में धंसा दो इतना गहरा कि वे इस दलदल से कभी न निकल सकें! उठो!... मेरा हुक्म मानो! उठो... उठो!

कहो, निशाचर! हमको फंसाकर इतनी सदियों तक तुम कहां घूम रहे थे? जानते हो इस मोती में नारकी का, और इस सीपी में पातकी का एक-एक पल युगों की तरह बीता है! और तुम बाहर मजे कर रहे थे? इतने युगों बाद तुमको याद आई हमारी?
याद नहीं आई नारकी! यह इस संसार में पाप फैलाने का श्रेय अकेले ही लेना चाहता था! इसलिए इसने हमको आजाद नहीं करवाया! अब यह पाप फैलाने में असफल रहा है तो हमको आजाद करवाकर हमारी मदद लेना चाहता है!
चुप हो जाओ मूर्खो! चुप हो जाओ! बिना कुछ जाने-बूझे मुझ पर आरोप क्यों लगा रहे हो? अरे, जिस मायायोगी ने तुमको कैद किया था, उसी ने मुझको भी बन्धक बना लिया था!
वह तो भला हो कुछ हिंसक मानवों का जिनकी हिंसा ने मुझको फिर से जीवन प्रदान किया। पर अब घबराने की कोई बात नहीं है। अब इस संसार में मायायोगी जैसी पुण्यात्माएं हैं ही नहीं!
अब हमको अपना काम पूरा करने से कोई रोक नहीं सकता!
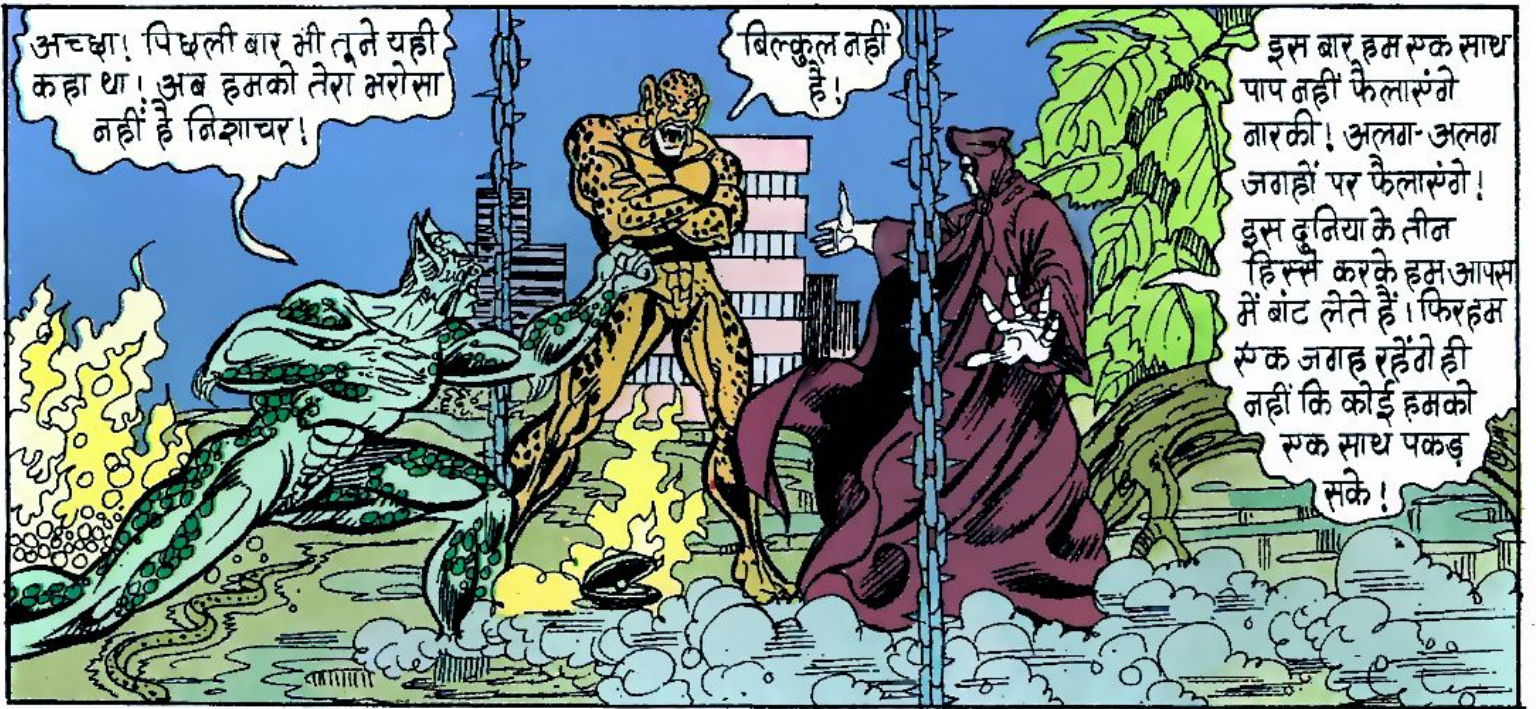
अच्छा! पिछली बार भी तूने यही कहा था। अब हमको तेरा भरोसा नहीं है निशाचर!

बिल्कुल नहीं है!

इस बार हम एक साथ पाप नहीं फैलाएंगे नारकी! अलग-अलग जगहों पर फैलाएंगे! इस दुनिया के तीन हिस्से करके हम आपस में बांट लेते हैं। फिर हम एक जगह रहेंगे ही नहीं कि कोई हमको एक साथ पकड़ सके!

और... महाशैतान की इच्छा से अगर कोई फंस भी गया तो दूसरा जाकर उसको छुड़ा लाएगा!

हुम! अच्छा ख्याल है। पर तुमने हमको छुड़ाया है इसीलिए उपहार स्वरूप हम - तुमको एक तिहाई नहीं, बल्कि तीन-चौथाई पृथ्वी देते हैं!

तीन-चौथाई! वाह रे वा! किधर वाली?

पूरब या पश्चिम वाली? या फिर उत्तर या दक्षिण वाली?

सब तरफ की! हम तुम्हें तीन-चौथाई समुद्र वाला हिस्सा दे रहे हैं निशाचर!

उसमें डूबकर अनन्तकाल तक वहीं पड़े रहने के लिए!

आर्र्र्र घघघ!

नारकी और पातकी भी निशाचर जैसे ही शक्तिशाली थे। और इस शक्ति से निशाचर भी नहीं बच सकता था—

हमसे हिस्सा बांटने चला था! मिल गई इसको हिस्सा बांटने की सजा!

और हमको धोखा देने की सजा भी! हमको फंसा कर खुद सारा श्रेय लेना चाहता था!

अब इस सीपी और काले मोती को भी नष्ट कर दो! न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी!

न रहेंगे सीपी-मोती, और न होंगे हम कैद!

नहीं! इनको नष्ट होने नहीं दिया जाएगा!

यह... यह तो मानसिक वार था! किसने किया यह मानसिक वार? इस पृथ्वी पर ऐसा कौन सा प्राणी उत्पन्न हो गया जो नारकी और पातकी से टकराने की सोच भी सके!

?

वह प्राणी मानव है शैतानो! जिसने हर बार तुमको पाप फैलाने से रोका है, और इस बार भी रोकेगा!

ओह! कुछ मानवों में अभी भी सत्य की खुजली बाकी है। यह बीमारी पृथ्वी से खत्म नहीं हुई है!

पृथ्वी से यह बीमारी कभी खत्म नहीं होगी शैतानो! खत्म होगी तो सिर्फ तुम दोनों नारकी और पातकी! यही नाम हैं न तुम्हारे?
तुम जिस गन्दगी से पैदा हुए कीड़े हो, उसी गन्दगी में वापस जाओगे। और उस संसार में तुम्हें भेजेगी, लोरी। सीपी और काले मोती के जरिए!
संभलकर लोरी! जो निशाचर तक को बेहोश कर दे, वे मामूली शक्ति वाले नहीं हो सकते!
मामूली शक्ति तो हमारी भी नहीं है ध्रुव! मेरी साधना शक्ति के साथ तुम दोनों की सत्य शक्ति भी है। मेरे बन्धन तो शायद ये काट भी देते!...
...पर तुम लोगों की सत्य शक्ति के कारण ही ये बेबस हैं। तुम्हारी सत्य शक्ति इनकी पाप शक्ति को काटकर इनकी शक्तियों को क्षीण कर रही है! और इसी कारण ये अपने बन्धन तोड़ नहीं पा रहे हैं!
आर्रर्रघ! हमें मुक्त कर दे लड़की! मुक्त कर दे, वरना तेरे शरीर में इतने प्रेत छोड़ दूंगा कि तू एक चलता-फिरता कब्रिस्तान बन जाएगी!
नारकी, निशाचर!
नारकी, तुरन्त ही पातकी का इशारा समझ गया—

तंत्र- बंधनों में बंधे दोनों शैतान निशाचर के बेहोश शरीर पर जा गिरे-

और निशाचर के शरीर से उनको वह अतिरिक्त पाप ऊर्जा मिलने लगी-

जो ध्रुव और ओगा की 'सत्य शक्ति' को काटकर उन शैतानों को तंत्र बंधनों से आजाद कराने के लिए काफी थी-

और आजाद हो चुके शैतानों का-

एक ही वार काफी था, सीपी और मोती उठाती लोरी को दूर-उठा फेंकने के लिए-

पहले वार ने लोरी के होश छीने, और दूसरे वार ने सीपी और मोती को अणुओं के टुकड़ों में बिखेर दिया-
कड़ड़ड़ाक्क
और साथ ही साथ दो अट्टहास गूंज उठे-
हा हा हा! अब हमको कोई कैद नहीं कर सकता! कुछ भी कैद नहीं कर सकता!
हा हा हा ही ही ही! हां, और अब हम पाप फैलाएंगे। सारी दुनिया में पाप फैलाएंगे!
और तब हमको असुरलोक में एक ऊंचा पद मिलेगा! बहुत ऊंचा!
अब हम क्या करेंगे डोगा? इन शैतानों को कैसे रोकें? मुझे तो शक है कि अगर यहां कहीं 'सत्य कवच' होता तो भी इन पर उसका असर नहीं पड़ता!
लोरी को होश आने में न जाने कितना वक्त लगेगा! अगर कोई और हमें बता... ओह! तुम वह... ... क्या नाम... हां, दयायोगी से सम्पर्क क्यों नहीं करते? शायद उनको होश आ गया हो!
गुड आइडिया डोगा! मैं अभी 'स्टार- ट्रांसमीटर पर उस अस्पताल में संपर्क करता हूं!
जहां पर दयायोगी भर्ती है!
इधर ध्रुव और डोगा पाप रोकने के प्रयास में लगे थे-
और उधर पूरी दुनिया में पाप और हिंसा का पागलपन छाया हुआ था-
लूट लो!
मार डालो!
गर्दन काट दो कमीने की!
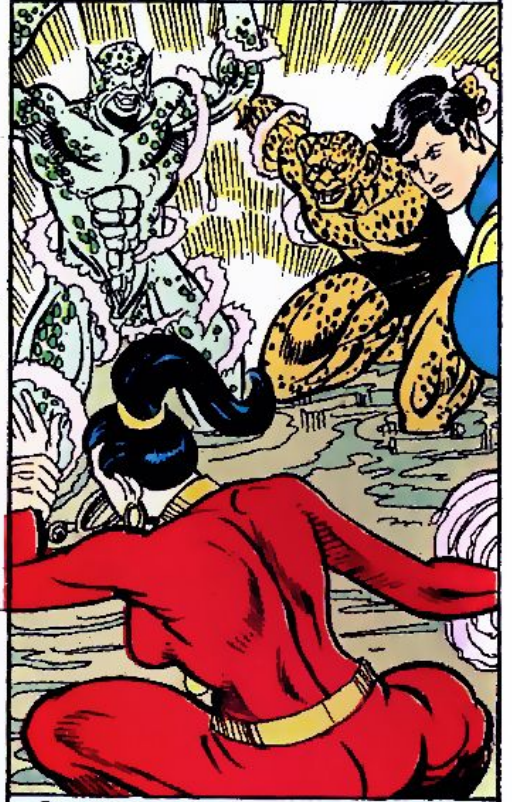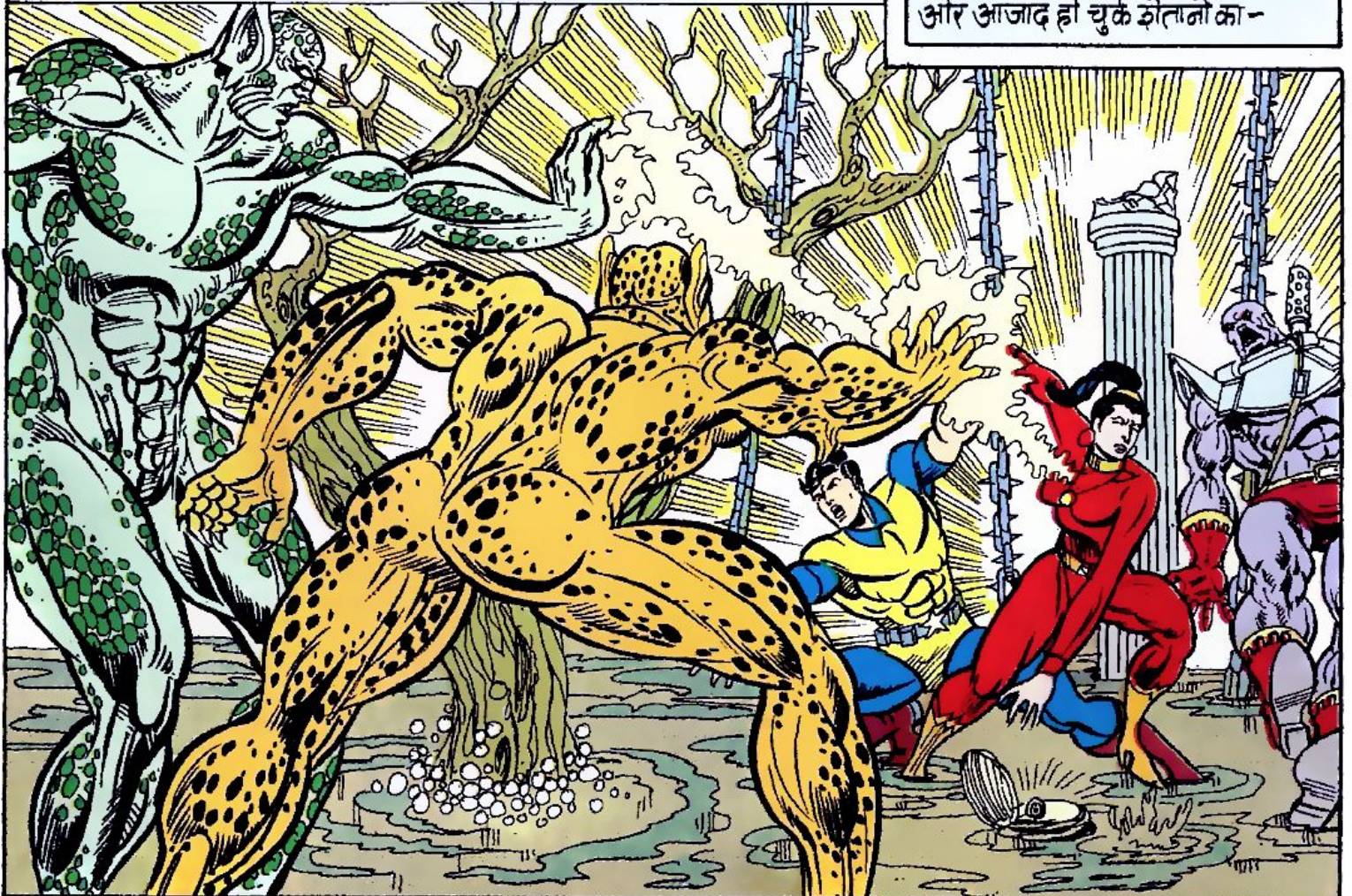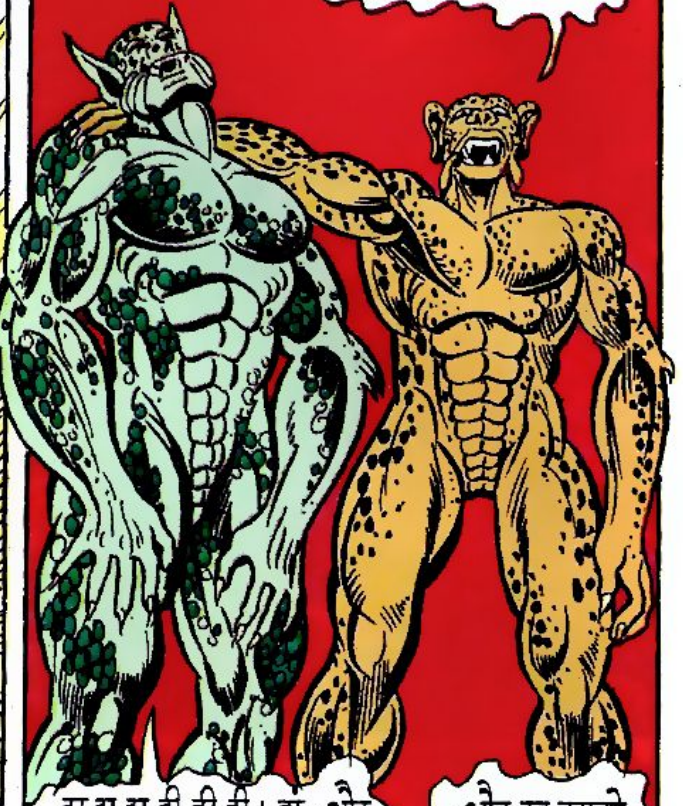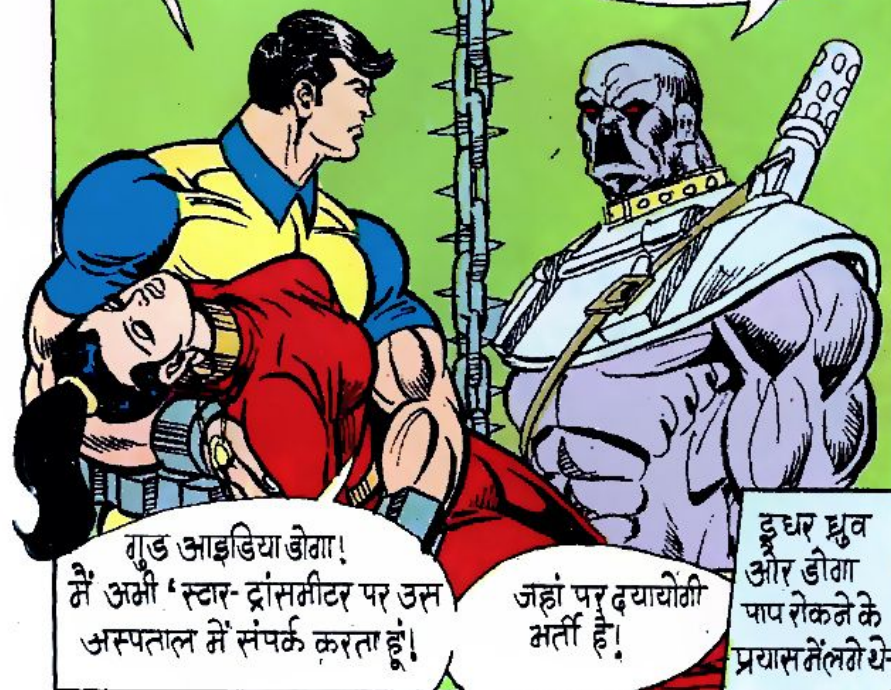
इन मामूली पागलपनों के साथ-साथ कुछ ऐसे पागलपन भी बढ़ रहे थे, जो बड़े पैमाने पर नर संहार करने में सक्षम थे-

अमेरिका के व्हाइट हाउस में-

एफ.16 को परमाणु हथियारों से लैस करके इराक के ऊपर उड़ने को कहो! आज मैं दुनिया के नक्शे से उस देश का नाम मिटा दूंगा, जनरल!

मेरा भी यही मन कर रहा है सर!

पूरी दुनिया, पाप की चादर में घिर चुकी थी-

रूस के मुख्यालय क्रेमलिन में-

मुझे लग रहा है कि अमेरिका के खत्म होने का वक्त आ गया है! सारी मिसाइलें निशानों पर साध दो! अगर उन लोगों ने एक भी गलत हरकत की तो सारी मिसाइलें एक साथ छोड़ देना!

गलत हरकत का इन्तजार क्यों करें? अभी छोड़ दें सर?

पहले निशाने पर तैनात तो करो! फिर सोचते हैं, जनरल! सोचते हैं!
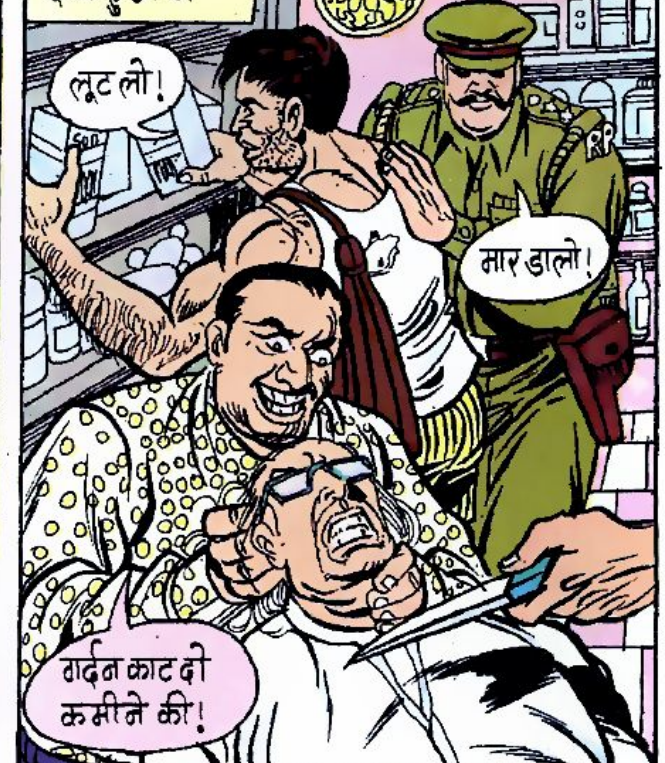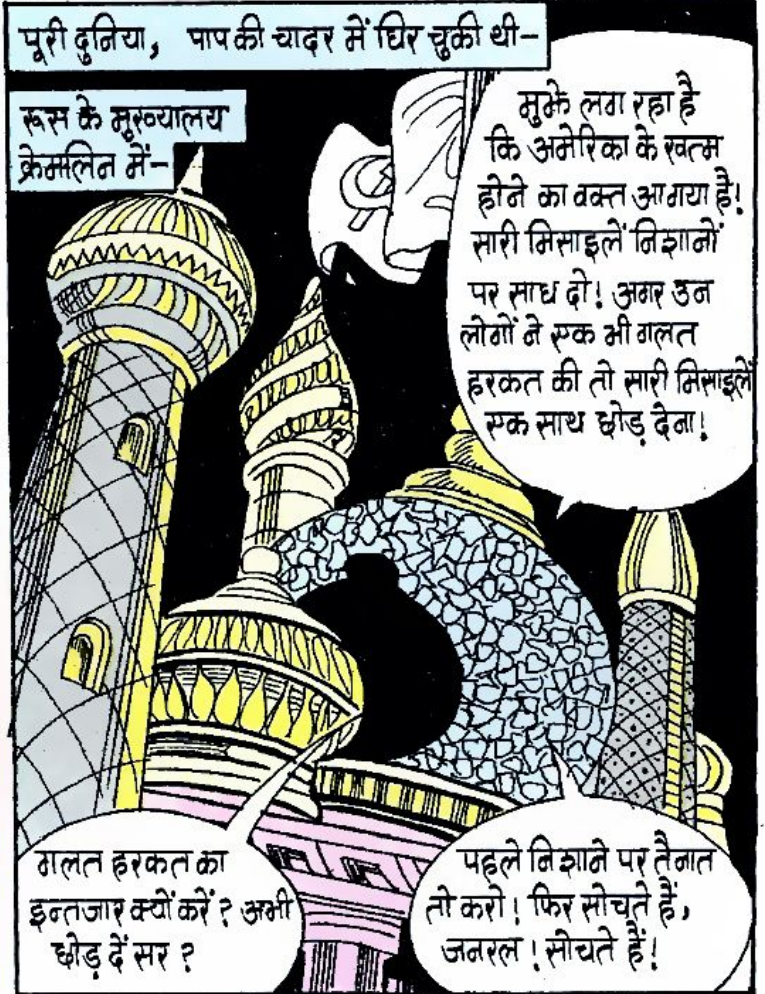
यानी इस दुनिया में जो पाप फैलेगा, उस पर किसी का नाम तो लिखा होगा नहीं! फिर यह कैसे पता चलेगा कि हममें से ज्यादा पाप किसने फैलाया? कौन है ज्यादा शक्तिशाली?
ज्यादा शक्तिशाली तो मैं ही हूं, रे नारकी! तुझे भी तो पाप पैदा करना और फैलाना गुरू पातकी ने ही सिखाया था! भूल गया क्या?
भूल तो तू रहा है, पातकी! तू पाप नहीं सिर्फ पागलपन फैला सकता है, क्योंकि तू पागल हो गया है!
अभी पता चल जाता है कि तू मानसिक सन्तुलन खोता है या मैं!
दोनों शैतानों के बीच हो रहे घमासान युद्ध से बुराई की ऊर्जा और प्रचंड रूप से वातावरण में फैलने लगी—
लेकिन इस समस्या ने ध्रुव और डोगा को परेशान करने के बजाय उल्टा खुश ही कर दिया—
लगता है तुम्हारी जुबान पर सरस्वती विराज रही थी डोगा! जैसा तुमने सोचा, वैसा ही हो रहा है!
अब बस दोनों कमीने मर जाएं तो मैं सरस्वती मां को प्रसाद चढ़ाऊं!
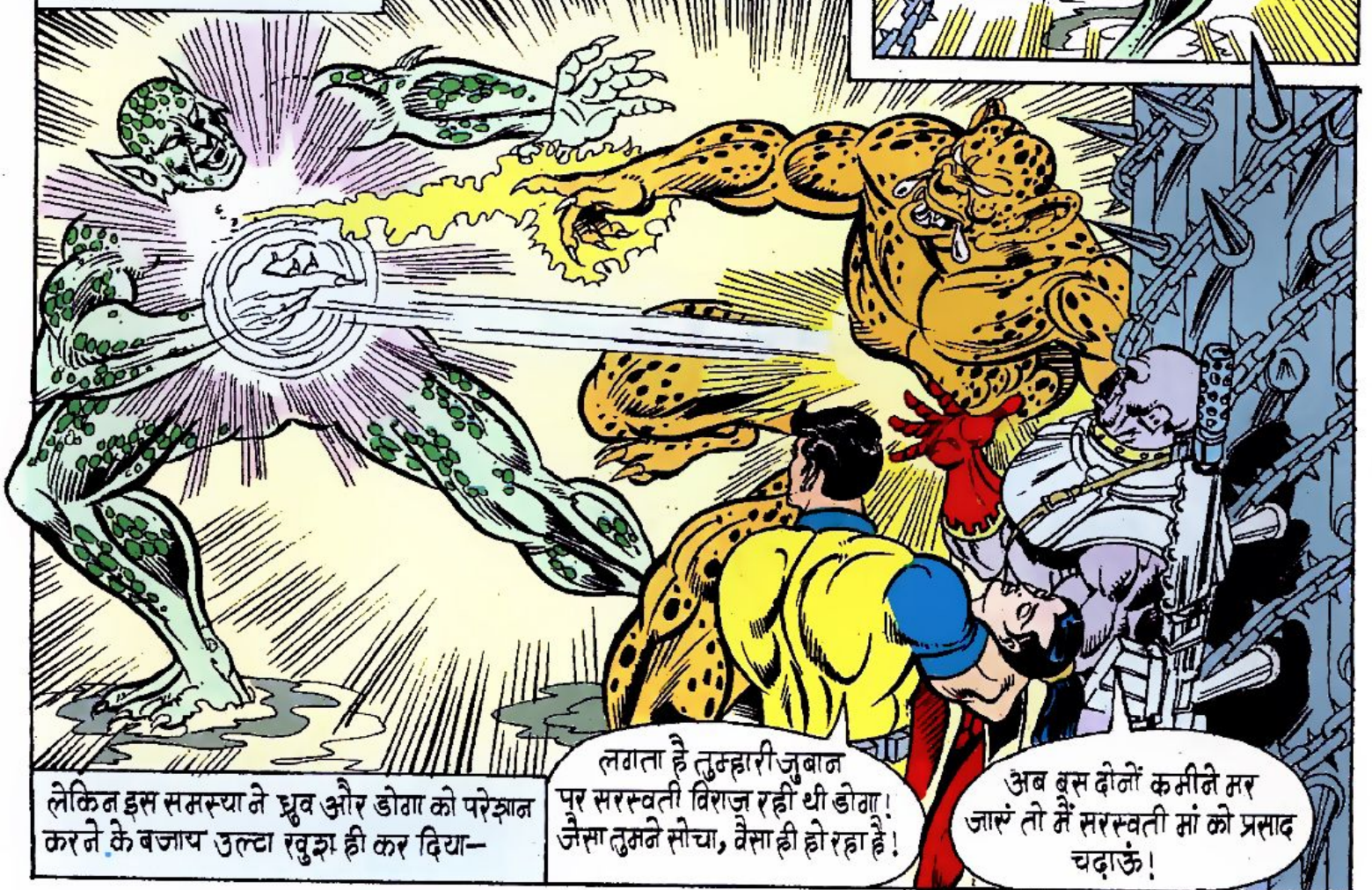
लेकिन प्रसाद चढ़ाने का समय अभी काफी दूर लग रहा था—
ऐ ऐ ऐ sss पातकी, रुक! ऐसे तो तू मुझे मार डालेगा, और मैं तुझे! फिर पाप कौन फैलाएगा? निशाचर?
तू कह तो ठीक रहा है। लेकिन फिर ये कैसे तय होगा कि हममें से ज्यादा शक्तिशाली कौन है?...
...और जो ज्यादा शक्तिशाली साबित होगा, वह धरती का मन पसन्द हिस्सा चुनेगा पाप फैलाने के लिए!
ठीक है! एक काम करते हैं! हम नहीं लड़ते हैं! दो प्यादे चुन लेते हैं। वे आपस में लड़ेंगे, और जिसका प्यादा जीतेगा, वह ज्यादा शक्तिशाली माना जाएगा! मंजूर है?
मंजूर है! पर हमारे प्यादे होंगे कौन?
इन दोनों तगड़े मुस्टंडे मानवों से अच्छा प्यादा कहां मिलेगा?
तो कर लो इनके दिमागों पर कब्जा!
प्रयास तो कर रहा हूं! परन्तु इनके अन्दर भीषण सत्य शक्ति है! मेरी सारी शक्ति व्यर्थ जा रही है। मन तो कर रहा है कि इनकी जान ले लूं!
नहीं! इनकी जान लेने की कोई जरूरत नहीं है, ये प्रतिरोध कर रहे हैं...
...और अगर इन लोगों ने प्रतिरोध जारी रखा तो मैं इस कन्या के प्राण हर लूंगा! बन्द कर दो हमारा प्रतिरोध, और बन जाओ हमारे गुलाम!
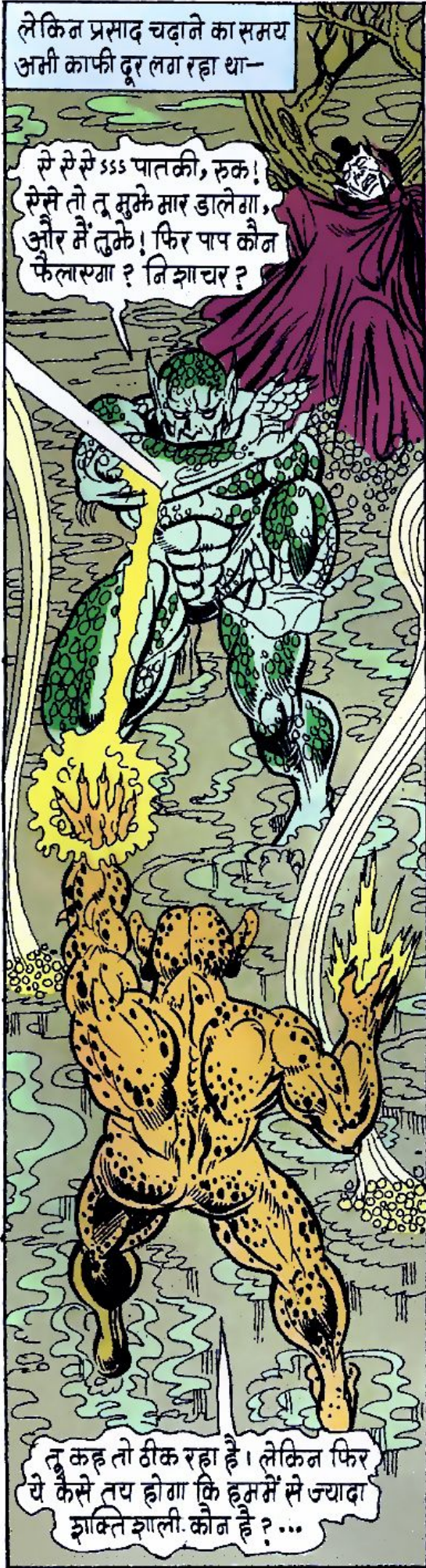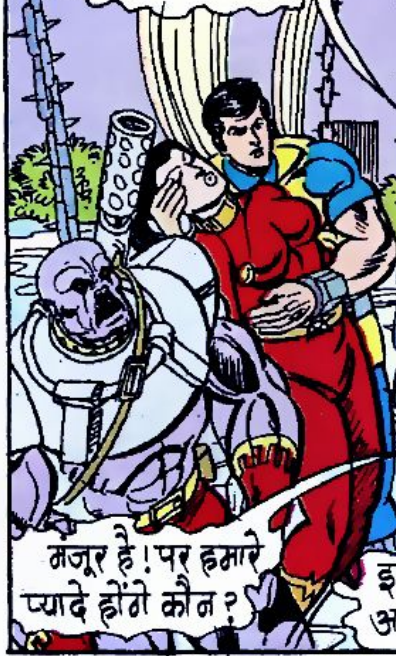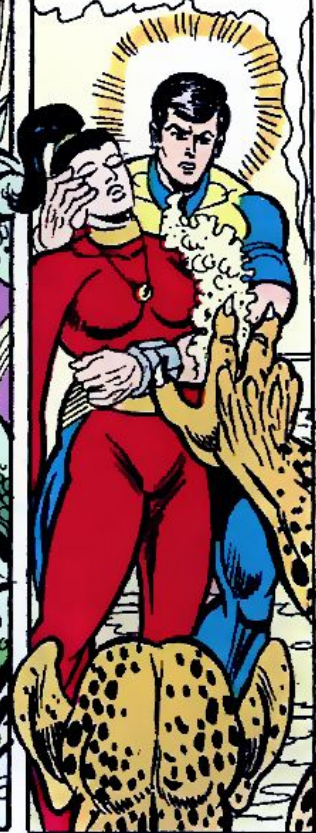
ध्रुव और डोगा के सामने दूसरा रास्ता नहीं था, सिवाय अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग न करके नारकी को अपने दिमागों पर कब्जा करने देने के –

अब तुम दोनों गुलाम हो हमारे! तुम्हारी शक्तियां, तुम्हारी सोच कुछ नहीं बदलेगा! बदलेगा तो सिर्फ तुम दोनों का स्वभाव! हिंसक, क्रूर और पापी हो उठोगे तुम दोनों। एक दूसरे के खून के प्यासे! और तुम दोनों तब तक लड़ोगे, जब तक एक जीत नहीं जाता! यानी दूसरा मर नहीं जाता!

इशारा होते ही–

डोगा और ध्रुव एक दूसरे पर ऐसे टूट पड़े, जैसे दो पागल हाथी आपस में जूझ पड़े हों–

बस नारकी, अब थोड़ी देर तक पाप फैलाना बन्द करके इन्तजार कर ले! अभी तय हुआ जाता है कि इस संसार का कौन सा हिस्सा किसके हाथ में आएगा!

ठीक है! इनको लड़ने दे, हम थोड़ी देर आराम करने के बाद इनको देखेंगे। ध्यान रहे, पीला, नीला वाला तेरा है, और बैंगनी, लाल वाला मेरा!
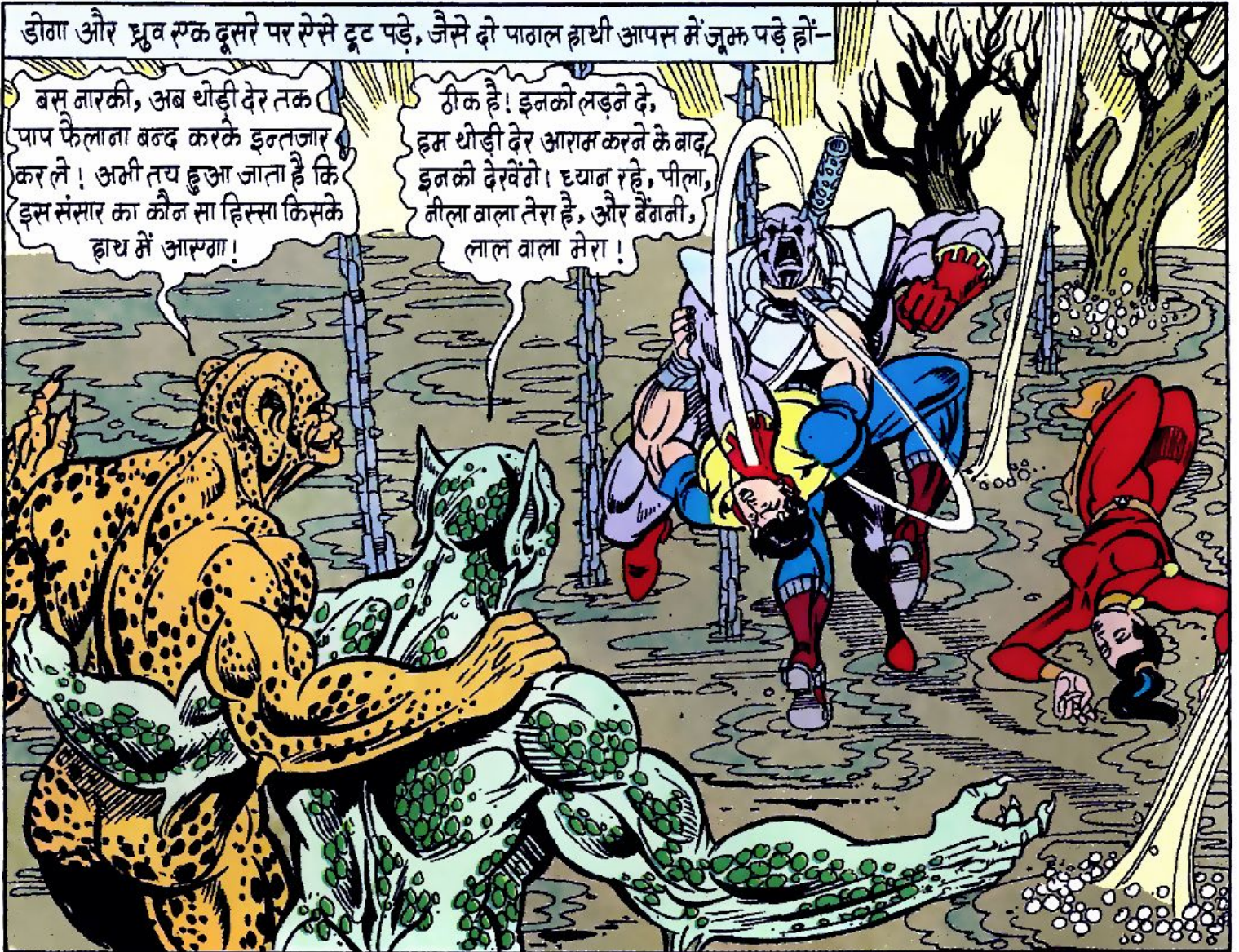
ध्रुव और डोगा के अन्दर, शैतानों की शक्ति ने उस पैशाचिकता को जगा दिया था, जिसे उन दोनों की सत्य शक्ति ने अब तक सुलाकर रखा हुआ था—
तड़ाक
दोनों ही एक दूसरे पर प्राणघातक हमले कर रहे थे। परन्तु ध्रुव का किसी भी इन्सान की जान न लेने का प्रण, अभी भी ध्रुव के हाथों को घातक बनने से रोके हुए था—
लेकिन डोगा ने न पहले कभी इस बात की परवाह की थी, और न ही उसे आज कोई परवाह थी—

तेरे साथ मैं कोई चांस नहीं लेना चाहता ध्रुव! तेरे बारे में मैंने काफी सुना है! ... अगर मैं एक बार भी चूका, तो तू मुझे इस दुनिया से चुका देगा!...

... इसलिए एक बार में गोली तेरे दिल के अन्दर, और अगले पल तेरा दम बाहर!

बिना किसी हिचक के गोलियां, ध्रुव के शरीर में अपना परमानेन्ट घर बनाने के लिए आगे लपकीं—

तड़तड़ तड़ तड़.

आऽऽऽह! तेरा निशाना भी काबिले तारीफ है डोगा, और तेरी फुर्ती भी! ...

... लेकिन मेरा शरीर अभी खाली नहीं है इनको किराए पर रखने के लिए!

आऽऽऽह! तेरा बदन जब तक सलामत रहेगा, तब तक मैं ऐसे किराएदार भेजता रहूंगा!...

खशाकक

... कुछ दर्जन को तो मैं अभी बुला भेजता हूं!

'डॉग व्हिसल' की अश्रव्य तरंगें हवा में तैरी...
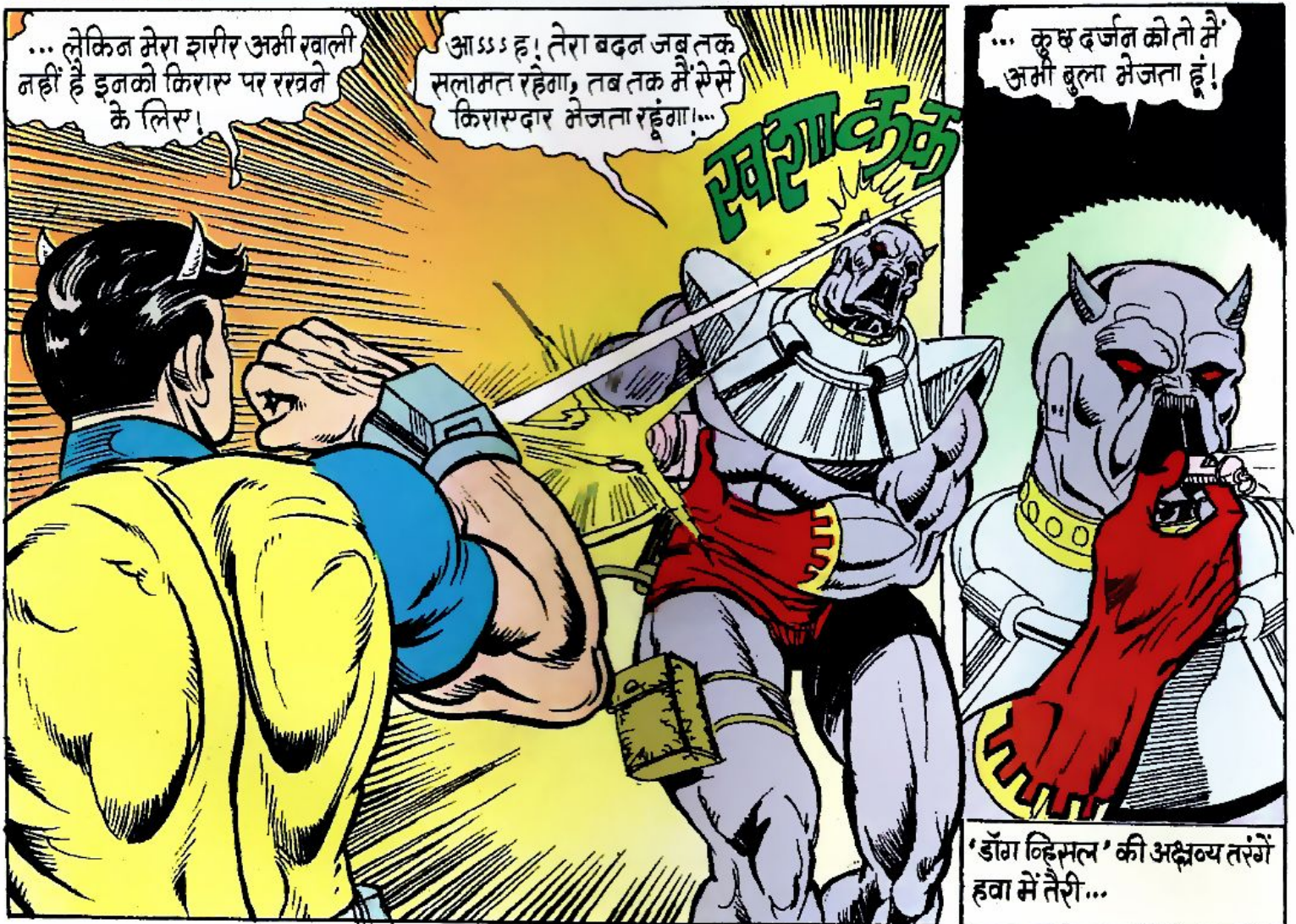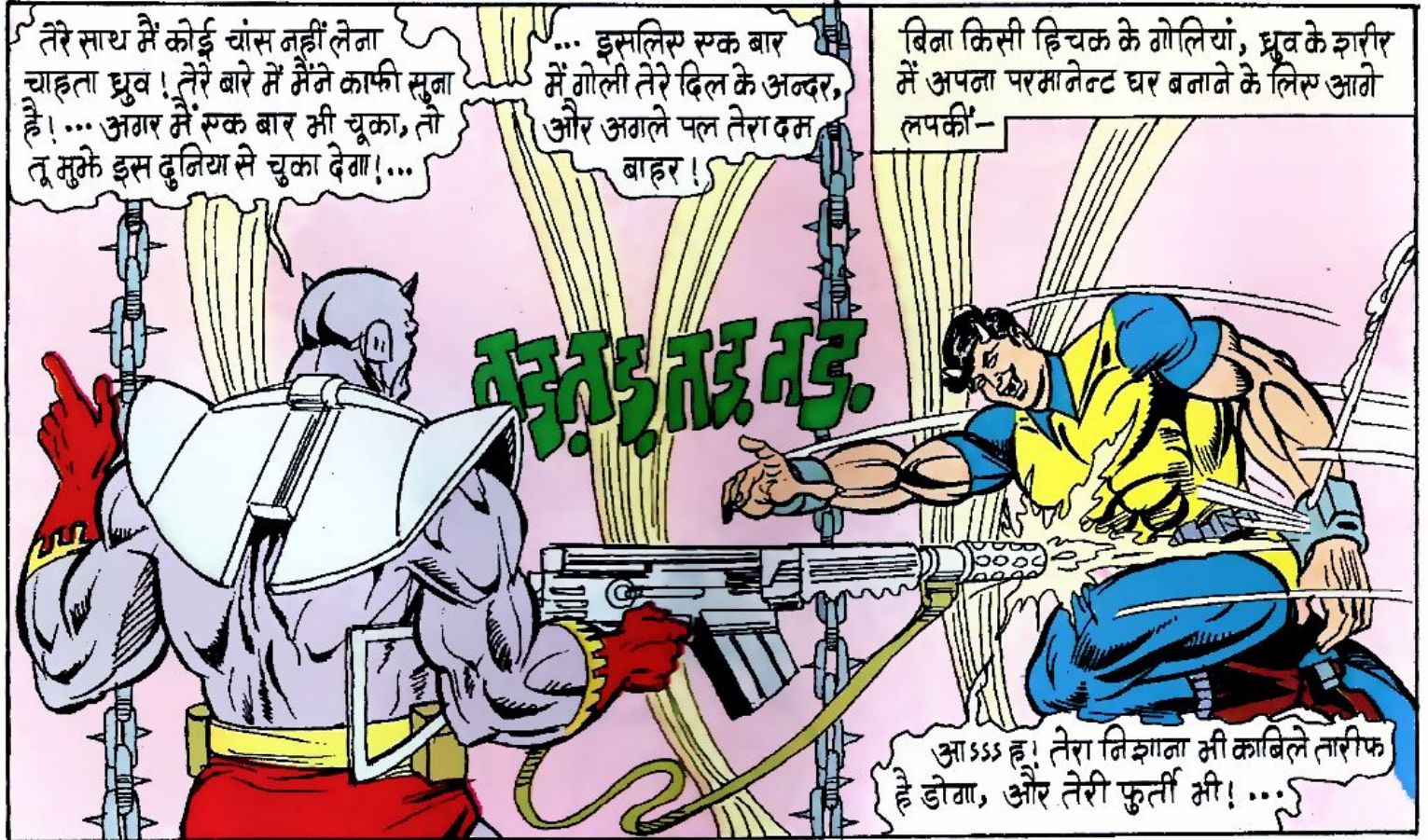
और कुछ ही पलों बाद डोगा की कुत्ता फौज, ध्रुव की तरफ लपक रही थी–
अच्छा! तो ये हैं तेरे किरायेदार! तेरी बात मानकर मुझ पर हमला कर रहे हैं! लेकिन ये तेरे जानकार हैं तो मेरे भी दोस्त हैं!
देखता हूं कि ये मुझ पर हमला करते हैं, या तुम पर!
गर्रर्रर गुर गुर!
क्यांऊ
वाऊ
वाऊ
वुफ वुफ गर्रर्र
भौं
भौं
लेकिन कुत्तों पर ध्रुव की पुचकार का कुछ खास असर नहीं हुआ–
ओह! तो ये मुंबई के कुत्ते, राजनगर की भाषा नहीं समझते! खैर, कुत्ते नहीं समझते तो कोई और समझेगा!
तड़ाक
ध्रुव के मुंह से एक और पुकार निकली–
क्रिंया क्रिंया! ची ची ची ई ई ई
और अगले ही पल मुंबई के आकाश पर मंडराने वाले सैकड़ों प्रकार के पक्षी कुत्तों पर टूट पड़े–
क्यांऊ
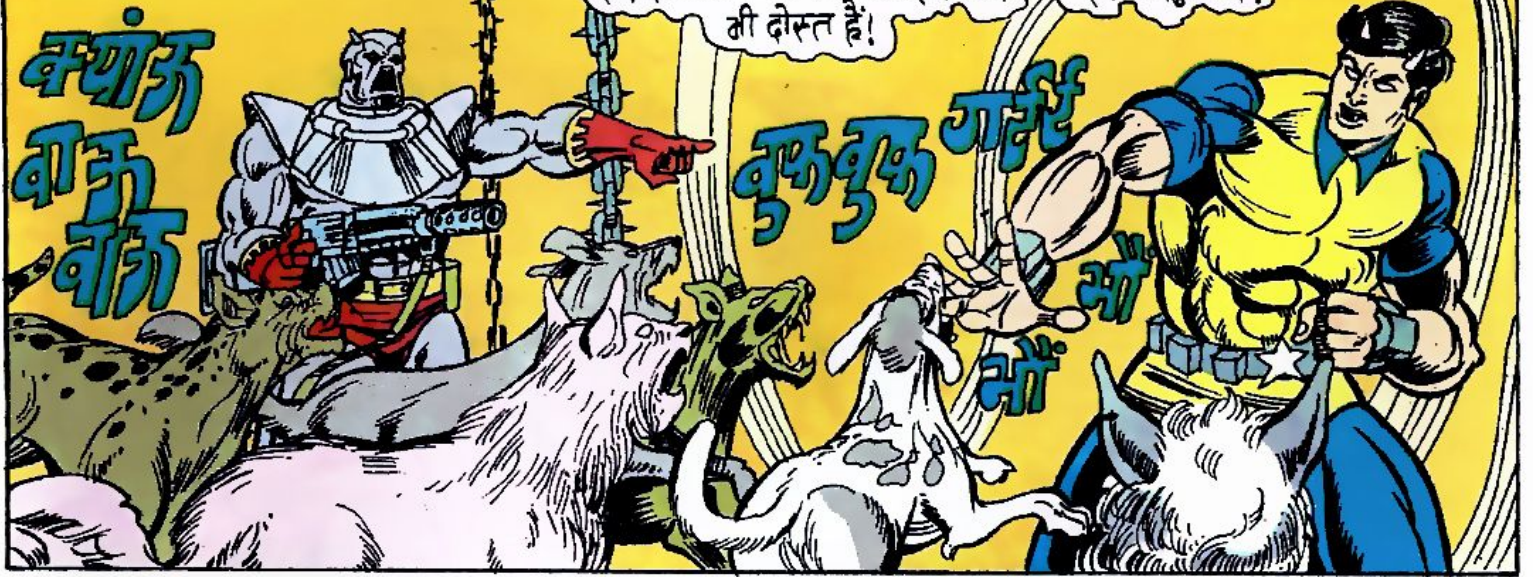
आऽऽऽ ह! अच्छा है, अच्छा है! लेकिन चिड़िया बुलाने के चक्कर में तू ये भूल गया कि मैं तेरे पीछे खड़ा हूं!
ध्रुव, वास्तव में थोड़ा सा असावधान हो गया था! और इस असावधानी में उसने डोगा को एक सुनहरा मौका प्रदान कर दिया था—
आऽऽऽ ह!
ट्यूंम
खचाग
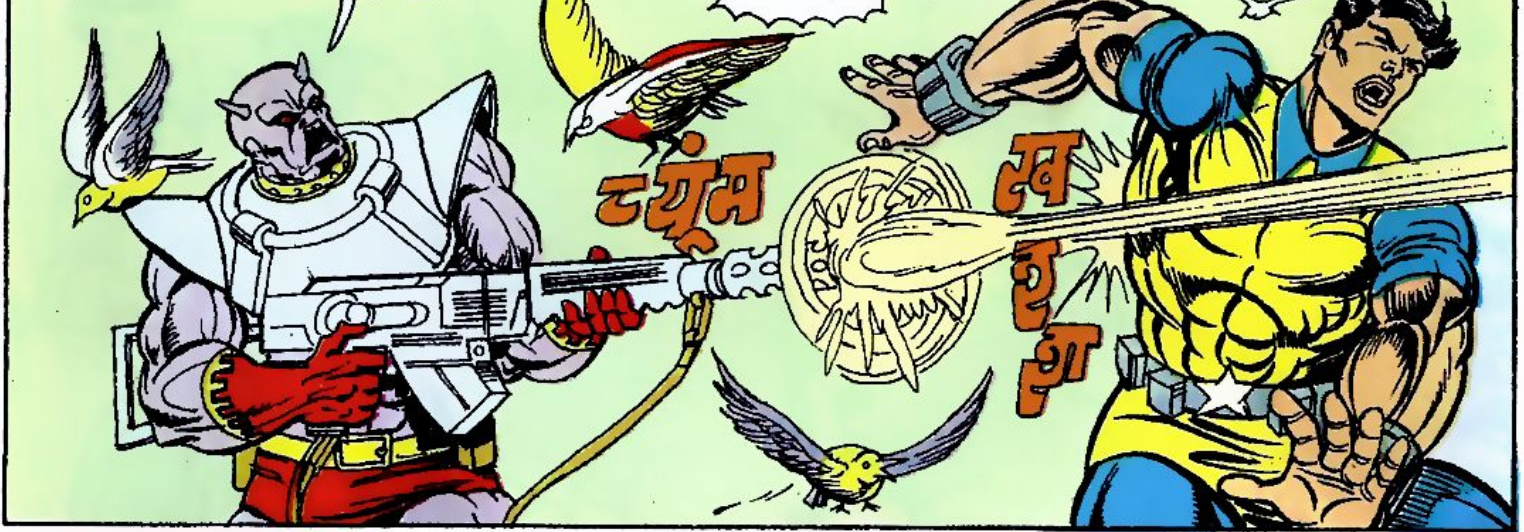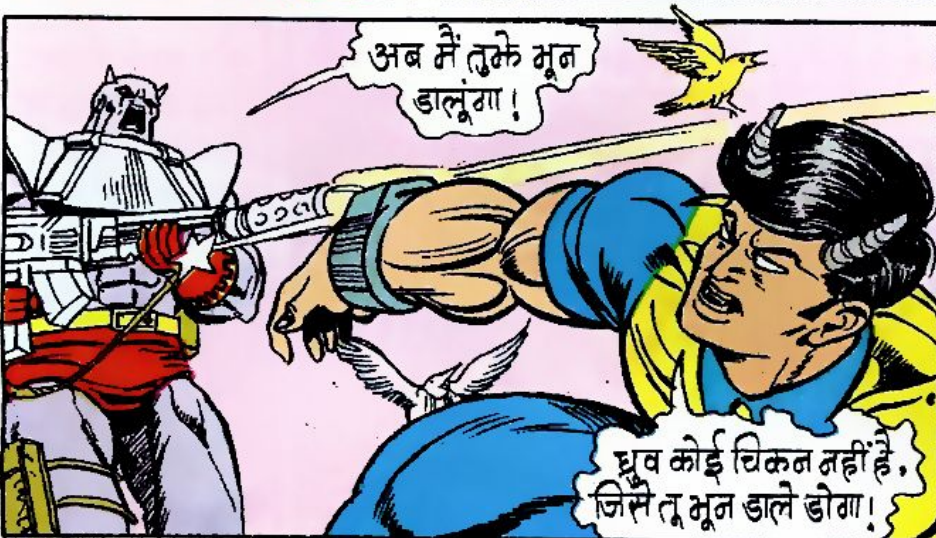
अब मैं तुझे भून डालूंगा!
ध्रुव कोई चिकन नहीं है, जिसे तू भून डाले डोगा!

स्टार ब्लेड, तड़ातड़ डोगा के हाथ में धंसने लगे—
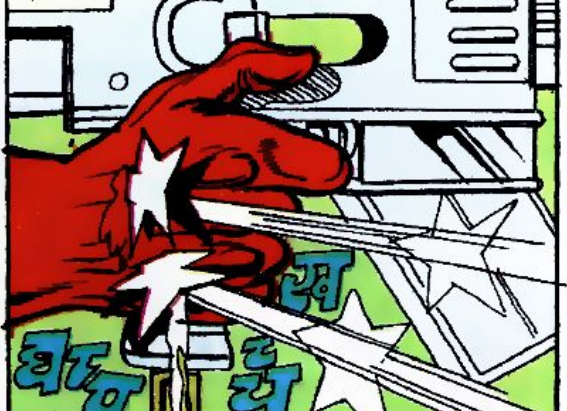
लेकिन डोगा आगे बढ़ता ही चला आया—
तू मेरा सारा खून भी बहा देगा, तब भी डोगा के कदम नहीं रुकेंगे!...
... दूर से निशाना लगाने पर तू उछल-कूद कर बचे जा रहा है। इसीलिए अब अगली गोली...
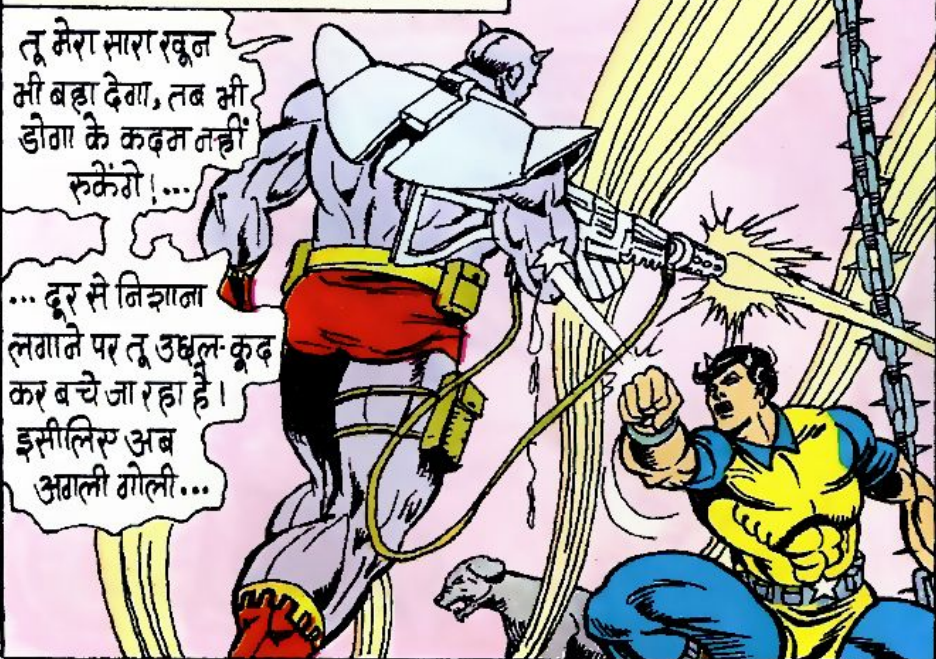
... तेरी कनपटी पर चलेगी। एक धमाके से तेरा भेजा बाहर आ गिरेगा, और उसे मेरे कुत्ते चाटेंगे!
मेरा भेजा दूसरे नहीं चाटते डोगा...

... मेरा भेजा दूसरों की चाट जाता है!

ध्रुव का हाथ तेजी से लहराया, और डोगा की गन की मैग्जीन का लॉक खुल गया–

कट

और अगले ही पल गोली उछालने वाली मैग्जीन खुद हवा में उछल रही थी–

आऽऽऽह!
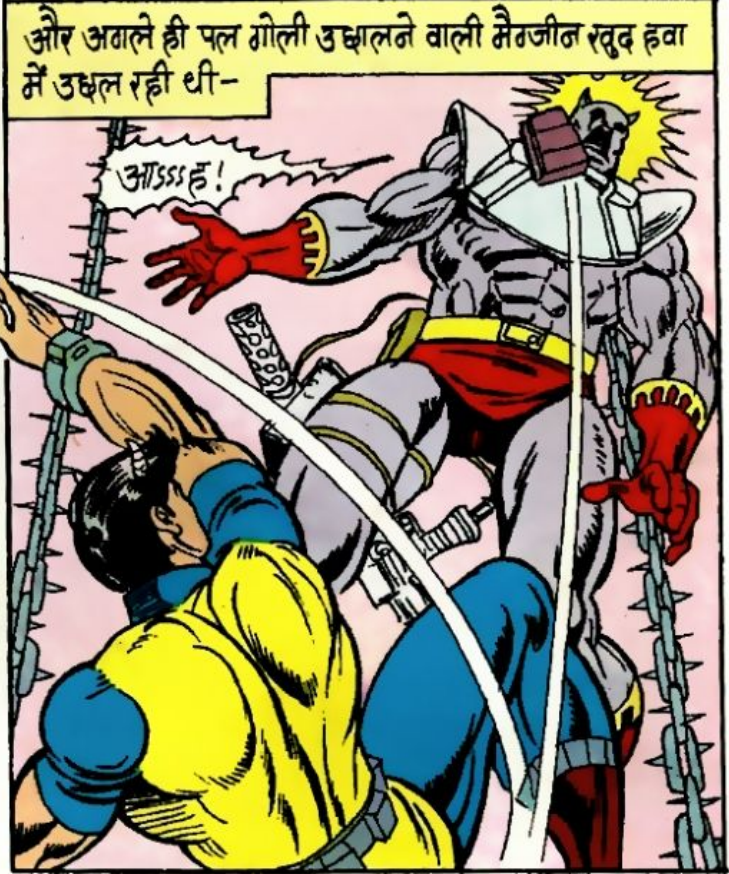
डोगा का प्रसिद्ध गुस्सा भड़क उठा–

और ध्रुव की हड्डियां कड़क उठीं–

ध्रुव के अन्दर भी हिंसा और पाप का भरा सागर ज्वार उठाने लगा-
यह निश्चित था कि कुछ ही मिनटों में या तो इनमें से कोई एक दूसरे को पीट-पीटकर मार डालने वाला था, या दोनों ही बुरी तरह से घायल होकर दम तोड़ देने वाले थे-
पर ऐसा होने से पहले ही दोनों के शरीर से दो अजीब से यंत्र आकर टकराए-
आई ईघ
चि या यां यां
और दोनों चीख उठे-
एक पल के अन्दर ही दोनों पाप के सागर से बाहर आ चुके थे-
ओह, लोरी! तुम होश में आ गईं? पर मेरा बदन जगह-जगह से दर्द क्यों कर रहा है?
मेरा भी! हम लोग कहीं गिर गए थे क्या?
अगर मैं समय पर होश में न आ जाती तो तुम दोनों हमेशा के लिए गिर जाते!
खैर, शुक्र है भगवान का, जिसने मेरे माध्यम से तुमको सही समय पर होश दिला दिया!

पर... पर ये सब क्या हो रहा था? तुम दोनों आपस में जानी दुश्मनों की तरह क्यों लड़ रहे थे? और... तुम दोनों के रूप शैतानों की तरह कैसे हो गए थे?
नारकी और पातकी के कारण! उन्होंने तुम्हें जान से मारने की धमकी देकर हमें यह रूप धारण करने पर मजबूर कर दिया था!
निशाचर से हमारा झगड़ा ही सही, पर वह हमारा जात भाई है। वैसे भी तुम लोगों ने आजाद होकर अपनी जिन्दगी से आजाद होने की ठान ली है! अब कुछ भी हो, हम तुमको जिन्दा नहीं छोड़ेंगे!
मैं समझ गई थी! इसीलिए मैंने तुम दोनों पर 'तंत्र वृत्त' का वार किया था!
ताकि वह तुम्हारी बुराइयों को नष्ट करके तुम लोगों को सामान्य बना दे! पर... नारकी और पातकी कहां हैं?
पता नहीं! उन्होंने अपनी बुराइयां हममें भरी, इतना तो हमें याद है। उसके बाद का हमें कुछ याद नहीं!
खैर, मौका अच्छा है। नारकी और पातकी गायब हैं, और निशाचर बेहोश है। निशाचर को काबू में करने का इससे अच्छा चांस नहीं मिलेगा!
नहीं, लड़की! नहीं!
आऽऽऽ ह! भागो! ये एकाएक कहां से आ गए? और अब तो इन्होंने सीपी और काले मोती को भी नष्ट कर दिया है। अब हम इनसे नहीं टकरा सकते!
सीपी और मोती को नष्ट कर दिया है? ओह, इनको पकड़ने का वही एक तरीका मालूम था मुझको! अब क्या होगा?
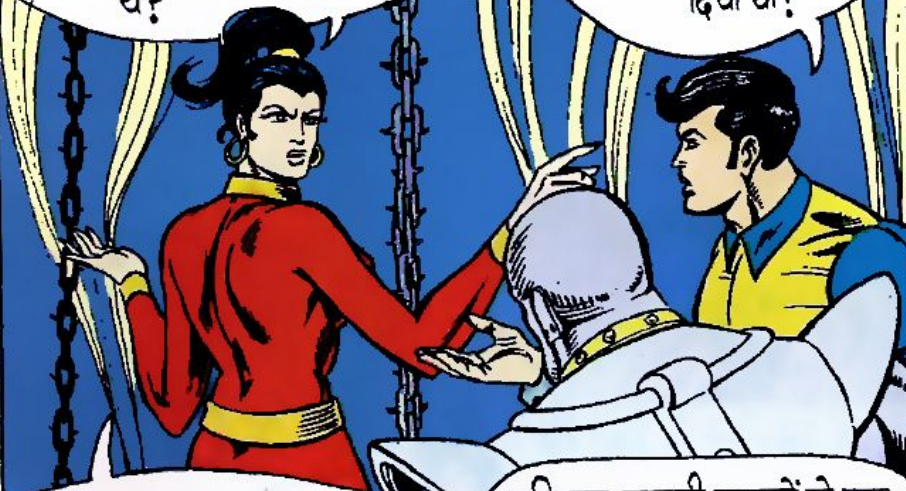
राज कॉमिक्स

हमारी मौत! जल्दी ही कोई तरीका सोचो लोरी! इस काम की तो सिर्फ तुम ही एक एक्सपर्ट हो यहां पर! हम कुछ नहीं कर सकते, सिवाय भागने या मरने के!
सोचो, काले मोती और सीपी के अलावा ऐसी और कौन सी चीज है, जो इनको रोक सके, या कैद कर सके?
ये गुण सिर्फ काले मोती और सीपी के कांबीनेशन में ही है ध्रुव! उनके अणुओं में कुछ ऐसे जादुई गुण होते हैं।
और अगर इसके अलावा ऐसी और कोई वस्तु है तो मुझे उसकी जानकारी नहीं है!
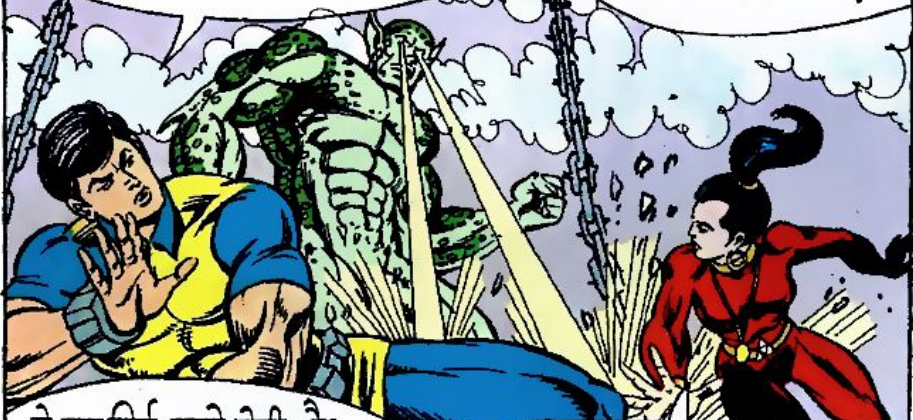
ओफ! मैं और लोरी तो खाली हो चुके। तुम्हारे पास कोई आइडिया हो तो बताओ डोगा!
मैं दिमाग से ज्यादा मसल्स का इस्तेमाल करता हूं ध्रुव! तुम्हारे साथ थोड़ी देर तक रहने से मुझ पर संगत का असर तो आया है, पर इतना नहीं कि मैं कोई आइडिया सोचना शुरू कर दूं!
संगत का असर...
...वाह, थैंक्स डोगा!
तुमने एक रास्ता बता तो दिया है।
रास्ता

कैसा रास्ता, ध्रुव?
फूलप्रूफ रास्ता नहीं है लोरी, बस उसे ट्राई करके देखा जा सकता है! लेकिन उसके लिए हमको राजनगर तक जाना पड़ेगा!
मायायोगी के आश्रम तक! मेरा हेलीकॉप्टर सेवा में मौजूद है!
एक मिनट, एक मिनट ध्रुव! हमारे पास इतना वक्त नहीं है। और वह भी ऐसे आइडिए के लिए जिसके फूलप्रूफ होने में शक हो।
तुम बताओ वहां से लाना क्या है? फिर मैं सोचती हूं कि मानसिक तरंगों का प्रयोग करना है या नहीं!
ध्रुव, लोरी को बताता चला गया-

और अगले ही पल लोरी के मस्तक से मानसिक तरंगें निकलकर, पलों में हजारों किलोमीटर की दूरी तय करने लगीं-
मुंबई के उस छोर से-

महानगर स्थित मायायोगी के आश्रम तक-
अरे! य... यह क्या हो रहा है! दीवार पर बना यह तंत्र टूटकर दीवार से अलग हो रहा है!

तंत्र सिर्फ टूटकर अलग ही नहीं हो रहा था, बल्कि हवा में उड़ता हुआ मुंबई की तरफ बढ़ रहा था-

क्योंकि इसी वक्त लोरी की दूसरी मानसिक किरण, छोटे हाजी के शव को हटाती हुई वह भारी-भरकम पत्थर उठा रही थी, जिस पर कभी सीपी रखी होती थी–

और कुछ ही पलों बाद वह पत्थर भी उड़ता हुआ नारकी और पातकी की तरफ ही आ रहा था–

फिर पत्थर! तू क्यों खामख्वाह हमको गुदगुदी लगाने पर तुली है?

पातकी ने भी इसे नजर अन्दाज कर के भारी भूल कर दी थी–

और नारकी एवं पातकी चीख उठे–

आऽऽऽह! य... यह क्या हो रहा है?

हमारे शरीर वैसे ही खिंच रहे हैं, जैसे मायायोगी द्वारा सीपी और मोती में खींचने से हुए थे। पर कैसे? हम तो सीपी को भी नष्ट कर चुके हैं, और मोती को भी!

क्योंकि अगले ही पल पत्थर और यंत्र बना प्लास्टर एक-दूसरे से चिपक गए–

साथ ही साथ, लोरी कुछ मंत्र बुदबुदा उठी–
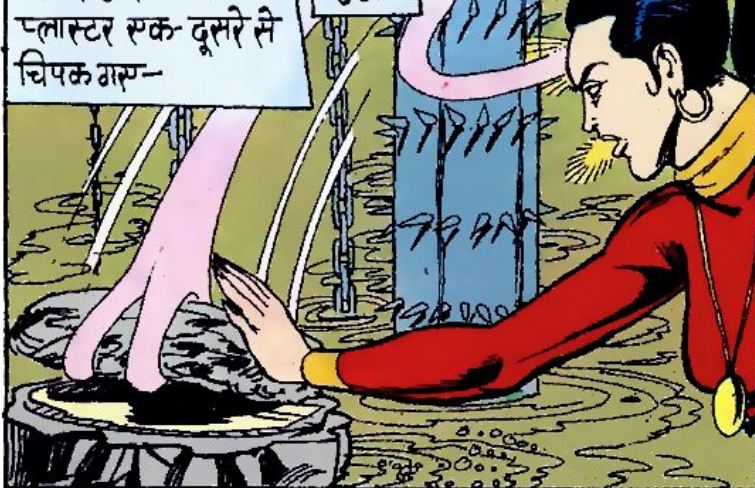
लेकिन चिल्लाना न तो नारकी के काम आया और न ही पातकी के–

पर निशाचर को कैद कैसे करोगी लोरी? मुझे दयायोगी ने बताया था कि ये दोनों शैतान तो पहले भी आसानी से पकड़े गए थे, पर निशाचर पर इनका असर नहीं हुआ था!

नारकी और पातकी का असर समाप्त होते ही निशाचर पर भी कसा उनका शिकंजा ढीला होने लगा था-

कोई न कोई रास्ता तो होगा ही न ध्रुव! क्योंकि निशाचर एक बार पहले भी पकड़ा जा चुका है!

उस बार उस स्वामी मायायोगी की किस्मत अच्छी थी बच्चो!...

...पर इस बार तुम लोगों की किस्मत उतनी अच्छी साबित नहीं होगी!

ओह! निशाचर होश में आ गया है!...

...और इसके वार ने दोनों चट्टानों को नष्ट कर दिया है। पाप ने पाप को काट डाला है।

गुड! यानी नारकी और पातकी अब हमेशा के लिए नष्ट हो चुके हैं!

और अब हम भी नष्ट होने वाले हैं। लोरी! क्योंकि नारकी, पातकी को रोकने का तरीका तो कम से कम हमें मालूम था, पर निशाचर को कैद करना तो दूर उसे रोकने तक का तरीका हमें नहीं पता!

सारी गलती शायद मेरी ही है ध्रुव! निशाचर मेरे ही कारण कब्र से बाहर आ पाया है! अगर मैं वहां हिंसा न करता...

कब्र!

हे भगवान! निशाचर को रोकने का तरीका तो इस पूरे समय हमारे सामने ही था! इतनी शताब्दियों तक निशाचर कैसे सोया रहा? मिट्टी में दबा तो बाहर क्यों नहीं निकल पाया? क्योंकि मिट्टी के नीचे निशाचर की शक्तियां काम नहीं करती हैं। पृथ्वी सोख लेती है निशाचर की शक्तियों को!

ये तो तुमने 'बिल्ली' के गले में घंटी बांधने जैसा तरीका सोचा है ध्रुव! निशाचर को किसी गड्ढे में डालना, और फिर ऊपर से मिट्टी से भरना कोई बच्चों का खेल है क्या? पहले तो यह कर पाना ही असंभव लगता है, और अगर किसी तरह से कर भी लिया, तो निशाचर उस ढीली मिट्टी को उखाड़ नहीं फेंकेगा क्या? कोई और तरीका सोचो ध्रुव! और कोई तरीका!

इसके अलावा मुझे रोकने का कोई और तरीका कम से कम इस ब्रह्माण्ड में तो नहीं है!...

... और मैं तुम लोगों को ऐसा कर सकने का एक प्रतिशत भी मौका नहीं दूंगा! क्योंकि अब मैं धरती पर चलूंगा ही नहीं। फिर तुम लोग मुझे धरती में दाबोगे कैसे?
IRON &
ओह! अब हम क्या... ध्रुव! लोरी को निशाचर का वार लग गया है! वह बेहोश हो रही है!
रुको मत डोगा, भागते रहो! ऐसे वह हमारे पीछे आएगा, और लोरी पर दुबारा वार करने के लिए नहीं रुकेगा!...
... लेकिन इसने तो हमारे सारे पत्ते देख लिए! देख क्या लिए, छीन लिए। अब तो हमारे हाथ में एक पत्ता भी नहीं है!
सारे पत्ते निशाचर के ही हाथ में... नहीं। एक जोकर हमारे हाथ में है डोगा! और यह शायद 'ट्रंप कार्ड' भी साबित हो सकता है!
सुनो डोगा! मैं जैसा कहता हूं, एकदम वैसा ही करना। क्योंकि 'ऑपरेशन निशाचर' में हमको परफेक्ट टाइमिंग की जरूरत पड़ने वाली है!
Ferrycol ADHESIV
बोलते जाओ ध्रुव! मैं सुन रहा हूं!
उधर सामने 'एडहेसिव फेरीकोल' की फैक्ट्री देख रहे हो न! निशाचर को उधर खींचकर ले जाओ! और...
ध्रुव डोगा को योजना बताता चला गया।
अगले ही पल, डोगा पलभर के लिए अपनी जगह पर थम गया, और ध्रुव दूसरी तरफ भागा—
जाहिर था कि निशाचर ध्रुव का पीछा करने के बजाय डोगा पर ही वार करता—
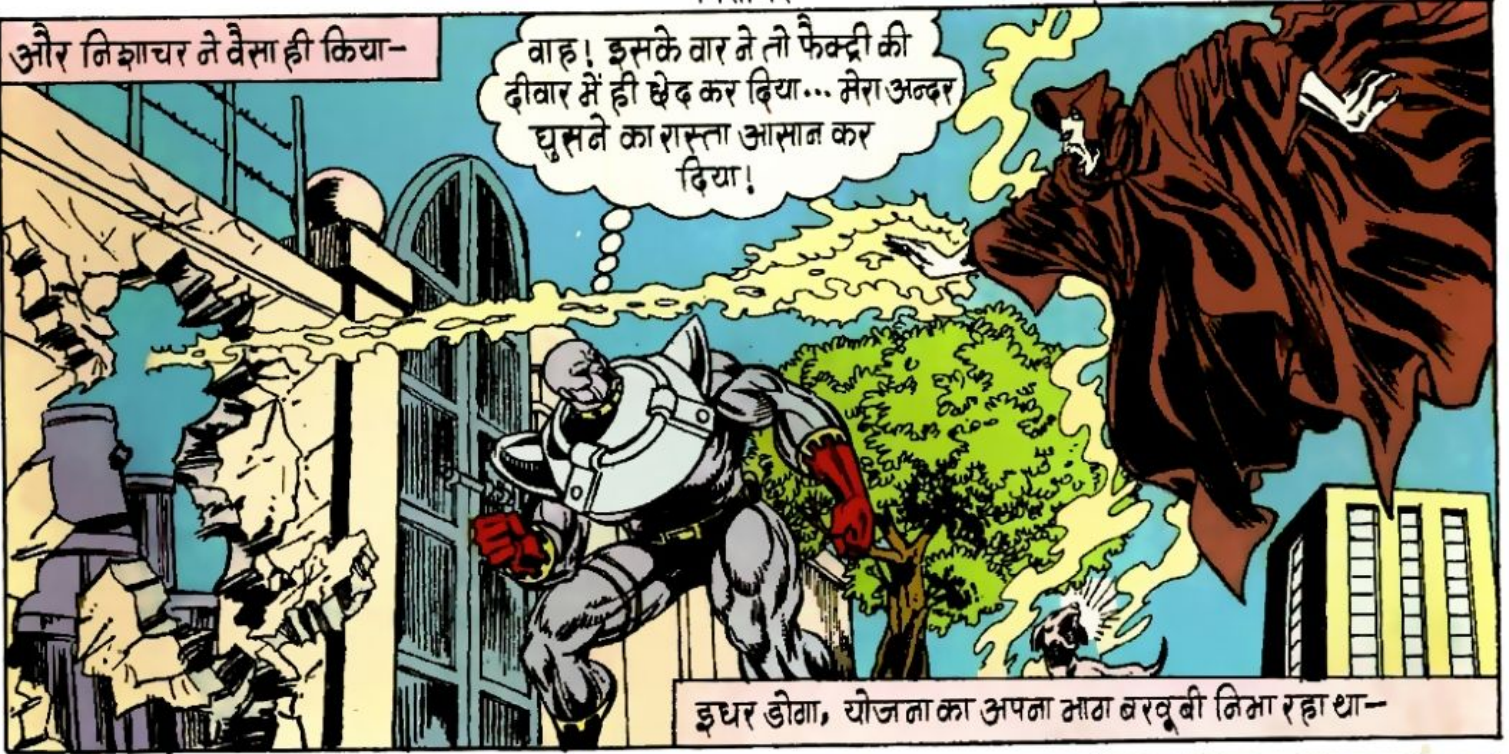
आम इन्सान सचमुच इतनी देर तक निशाचर के सामने नहीं टिक सकता था! लेकिन यह डोगा था, जो काम खत्म होने के बाद ही हटता था। या तो पाप खत्म होना था, या डोगा की जान–

आऽऽहा! यही वह चीज है, जिसकी मुझे तलाश थी। फेरीकोल से भरे ड्रम! इंडस्ट्रियल इस्तेमाल के लिए!

RYCOL
SIVE

पर इस वक्त इनका इस्तेमाल किसी और काम के लिए होगा!

योजना के अनुसार पहले मुझे हैलीकॉप्टर की हल्की सी आवाज आने तक इंतजार करना है। आ गई आवाज! अब मुझे इन ड्रमों को उठाकर निशाचर पर फेंकना है। परन्तु निशाचर तो काफी ऊपर उड़ रहा है, और ये एडहेसिव से भरे ड्रम काफी भारी हैं। इनको तो उठाना ही मुश्किल है, और इतनी दूर फेंकना तो... खैर! यही तेरे इम्तहान की घड़ी है डोगा! लगा दे लॉयन जिम का सारा अनुभव! सारी कसरत! सारी ताकत!

घर्रर्र

सारी इच्छाशक्ति! आऽऽऽऽऽ ऊऊ ह!
ड्रम, दूर हवा में उछल गया—
निशाचर के सर के ऊपर तक—
ओऽऽऽ तू इससे मुझे मारेगा! ले देख! इसका मैं वही हाल करूंगा...

... जो थोड़ी देर में तेरा आऽऽऽ! यह क्या? इससे तो... ग्लब... कोई चिपचिपा पदार्थ गिर रहा है।
निशाचर एडहेसिव में नहा गया—
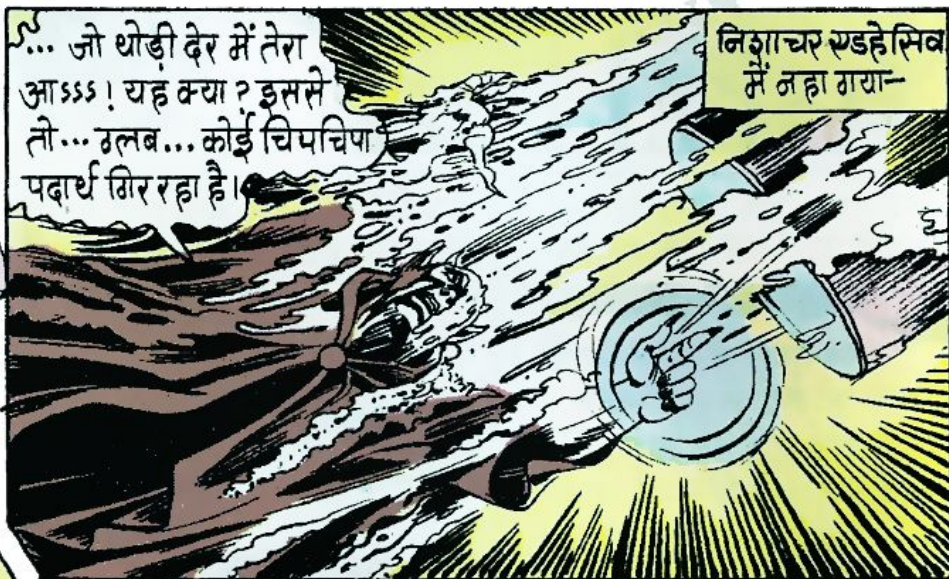
और उसी पल ध्रुव ने रस्सी से लटकी और मिट्टी से भरी बोरियों को आजाद कर दिया—

और एडहेसिव से नहाए निशाचर पर मिट्टी की एक मोटी पर्त जम गई—
आऽऽ ह! इस मिट्टी को मैं दूर झटक नहीं पा रहा हूं! आऽऽऽ ह!

धम्म
देखा निशाचर? तू धरती की मिट्टी में दबे, या मिट्टी तुझे घेरे में ले ले, दोनों बातों का नतीजा तो एक सा निकलना है!
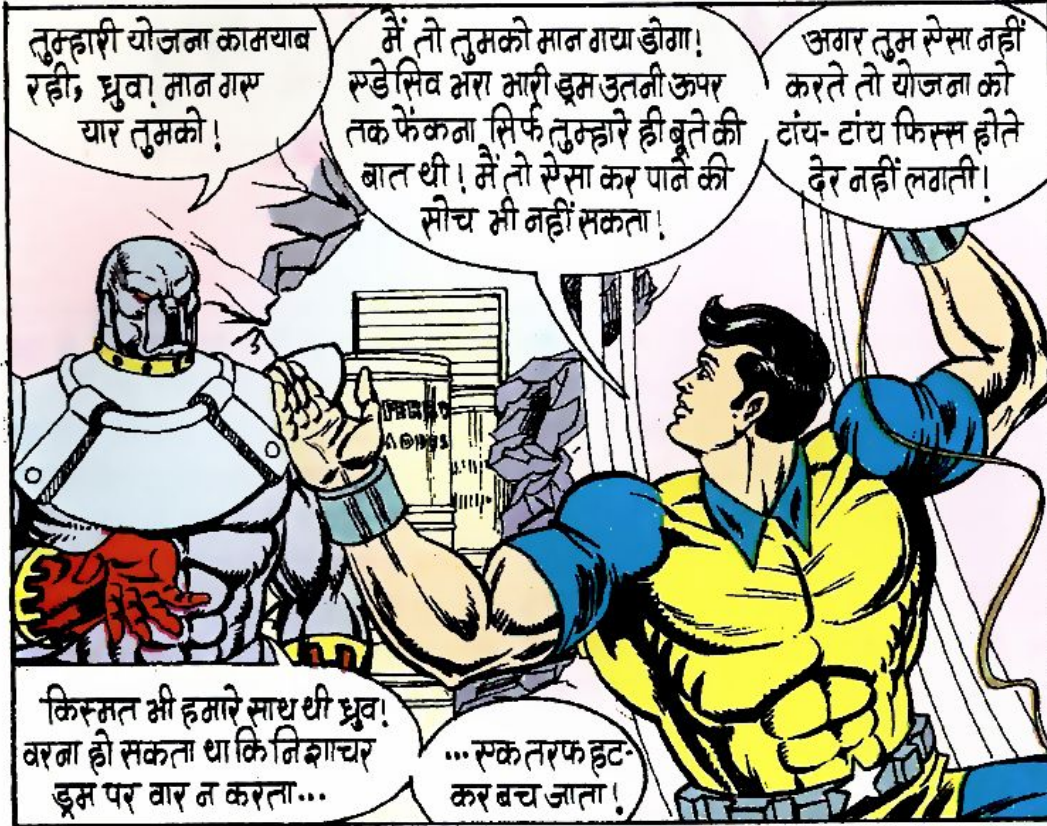
तुम्हारी योजना कामयाब रही, ध्रुव! मान गए यार तुमको!

मैं तो तुमको मान गया होगा! एडेसिव भरा भारी ड्रम उतनी ऊपर तक फेंकना सिर्फ तुम्हारे ही बूते की बात थी! मैं तो ऐसा कर पाने की सोच भी नहीं सकता!

अगर तुम ऐसा नहीं करते तो योजना को टांय- टांय फिस्स होते देर नहीं लगती!

किस्मत भी हमारे साथ थी ध्रुव! वरना हो सकता था कि निशाचर ड्रम पर वार न करता...

...एक तरफ हट कर बच जाता!

तभी-

ओऽऽऽ! तुम लोगों ने निशाचर को पकड़ लिया! पर कैसे? एक्सपर्ट तो मैं थी न!

थोड़े बहुत गुर हम चेलों ने भी सीख लिए हैं लोरी!

खैर, फिलहाल तुम इसे परमानेंटली कैद करने का इन्तजाम करो!

पर ऐसा होना नहीं था! क्योंकि असुर लोक में दूसरे नए तरीके ईजाद किए जा रहे थे-

हमने सदियों तक इन्तजार किया! पर हमारा सबसे जांबाज प्राणी निशाचर एक बार फिर असफल हो गया। अगर वह सफल हो जाता तो मानव हमारी भक्ति करते और उस भक्ति से हमको वह शक्ति मिलती जिससे हम देवताओं को नष्ट कर देते! पर ऐसा हुआ नहीं!

अब हम इन्तजार नहीं करेंगे! ऐसा वार करेंगे कि खत्म हो जाएगी देवों की सृष्टि। न रहेंगे मानव और न होगी भक्ति!

यह वार क्या है, यह आपको पता चलेगा कलियुग में!



कॉमिक समाप्त, इंतजार शुरू! कलियुग का।